राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस समूह

मध्यप्रदेश | राजस्थान | हरियाणा | छत्तीसगढ़ | महाराष्ट्र से प्रकाशित

डाक पंजीयन क्रं. 173/15-17

5 बार्सिलोना और रियल मैड्रिड लीजेंड्स के बीच मुंबई... | सम्पादकीय | अमेरिकी धमकी से पहले भी भारत... | हेल्थ एप में एआई डॉक्टर का ऑप्शन लाएगी एपल... 5

वर्ष 17 अंक 62 | E-mail: dholpur@hotmail.com | धौलपुर, गुरूवार 03 अप्रैल 2025 | ई-पेपर के लिए लॉगऑन करें -www.hindustanexpress.online | मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 8

कांग्रेस ने मुसलमानों को डराने का काम करके वोट बैंक बनाने का काम किया - अमित शाह

वक्फ संशोधन बिल पर बहस में बोले गृहमंत्री

आर.एन.एस

नई दिल्ली। अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरेन रिजिजू ने बुधवार को वक्फ संशोधन बिल 2024 लोकसभा में पेश किया। किरण रिजिजू ने इसे उम्मीद (यूनीफाइड वक्फ मैनेजमेंट इम्पावरमेंट, इफिशिएंसी एंड डेवलपमेंट) नाम दिया है।

समाचार लिखे जाने तक बिल को केंद्र की सरकार में शामिल टीडीपी, जेडीयू और एलजेपी ने समर्थन दिया। शिवसेना यूबीटी सांसद अरविंद ने अपने भाषण में ये क्लियर नहीं किया कि वे बिल के पक्ष में है या विरोध में।गृह मंत्री अमित शाह ने कहा- वक्फ में गैर इस्लामिक नहीं आएगा। ऐसा कोई प्रोविजन भी नहीं है। वोट बैंक के लिए माइनॉरिटीज को डराया जा रहा है।

शाह ने कहा एक सदस्य ने कह दिया कि यह बिल माइनॉरिटीज स्वीकार नहीं करेगी। क्या धमकी दे रहे हो भाई। संसद का कानून है, स्वीकार करना पड़ेगा।

बिल पर चर्चा में रिजिजू ने 58 मिनट अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार ने 5 मार्च 2014 को 123 प्राइम प्रॉपर्टी को दिल्ली वक्फ बोर्ड को ट्रांसफर कर दीं। ऐसा लोकसभा चुनाव से ठीक पहले अल्पसंख्यक वोटों के लिए किया गया, पर चुनाव हार गए।

रिजिजू ने कहा- अगर हमने आज यह संशोधन बिल पेश नहीं किया होता, तो जिस इमारत में हम बैठे हैं, उस पर भी वक्फ संपत्ति होने का दावा किया जा सकता था। अगर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार सत्ता में नहीं आती तो कई अन्य संपत्तियां भी गैर-अधिसूचित हो गई होतीं।

भाजपा सांसद ने कहा- वक्फ के खौफ से भारत के लोग आजादी चाहते हैं।

शाह बोले- राम मंदिर बनाने की बात आई तो कहा गया कि खून की नदियां बह जाएंगी, मुसलमान सड़क पर उतर आएगा। ट्रिपल तलाक, सीएए के केस में ऐसा कहा गया कि मुसलमान की नागरिकता जाएगी। अगर 2 साल में एक भी मुसलमान की नागरिकता गई हो तो सदन के पटल पर रखेंगे। धारा 370 पर क्या-क्या कह ते थे।

आज उमर अब्दुल्ला सीएम हैं, विकास हो रहा है। कांग्रेस ने मुसलमानों को डराने का काम करके वोट बैंक बनाने का काम किया। इस देश के नागरिक को, किसी भी धर्म का हो, कोई आंच नहीं आएगी। ये नरेंद्र मोदी सरकार है। ये सालों से जातिवाद और तुष्टिकरण पर काम करते आए हैं। अपने परिवार की पॉलिटिक्स को आगे बढ़ाया है। 2014 से जातिवाद-तुष्टिकरण-परिवार को नरेंद्र मोदी सरकार ने खत्म करके, विकास की राजनीति को बढ़ावा दियाा है। 3 टर्म मोदीजी को जिताया है और 3 टर्म भाजपा की सरकार बनने वाली है।

शाह ने कहा-कई मुसलमान भाई हैं जो वक्फ कानून के दायरे में नहीं आना चाहते। वोहरा, पसमांदा, शिया आदि कई हैं। कोई भी मुसलमान चैरिटेबल ट्रस्ट के तहत अपनी संपत्ति

अमित शाह के दौरे से पहले नक्सली शांति वार्ता को तैयार

सेंट्रल कमेटी बोली– 15 महीने में 400 साथियों को मारा, ऑपरेशन रोकें, युद्धविराम कर देंगे

आर.एन.एस

नई दिल्ली। अमित शाह के बस्तर दौरे से पहले ही नक्सली केंद्र और राज्य सरकार से शांति वार्ता करने के लिए तैयार हो गए हैं। नक्सलियों के केंद्रीय समिति के प्रवक्ता अभय ने एक पर्चा जारी किया है। अभय ने कहा कि, पिछले 15 महीनों में उनके 400 साथी मारे गए हैं। अगर राज्य और केंद्र सरकार नक्सलियों के खिलाफ ऑपरेशन रोकती है, तो हम शांति वार्ता के लिए तैयार हैं।

नक्सली नेता अभय ने तेलगु भाषा में पर्चा जारी किया है। इसमें लिखा है कि, 24 मार्च को हैदराबाद में संगठन की एक बैठक हुई थी। जिसमें बिना किसी शर्त के शांति वार्ता के लिए आगे आने और बातचीत कर युद्धविराम की घोषणा करनी चाहिए इस पर बात हुई।

अभय ने लिखा है कि, छत्तीसगढ़ के गृह मंत्री विजय शर्मा ने शांति वार्ता के लिए पहल की थी। बता दें कि 5 अप्रैल को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह बस्तर दौरे पर रहेंगे।

पर्चे में लिखा है कि, जब हमारे दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी के सदस्य और माओवाद संगठन के प्रतिनिधि विकल्प ने शांति वार्ता के लिए अपनी शर्त रखी थी कि जवानों को कैंप तक ही रखा जाए। ऑपरेशन को बंद किया जाए। जिसके बाद बातचीत करेंगे। इन शर्तों का जवाब दिए बगैर लगातार ऑपरेशन चलाए गए। पिछले 15 महीने में हमारे 400 से अधिक नेता, कमांडर, [illegible] के कई स्तर के लड़ाके मारे गए।

सैकड़ों लोगों को गिरफ्तार किया गया और उन्हें जेल में डाल दिया गया है। ऐसे में अब जनता के हित में हम सरकार से शांति वार्ता के लिए तैयार हैं। नक्सली लीडर अभय ने कहा कि, इस मौके पर हम केंद्र और राज्य सरकार के सामने शांति वार्ता के लिए सकारात्मक माहौल बनाने का प्रस्ताव रख रहे हैं।

एलओसी पर सेना ने 5 घुसपैठिए मार गिराए

आर.एन.एस

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर में नियंत्रण रेखा पर सेना ने 4-5 पाकिस्तानी घुसपैठियों को मार गिराया। हालांकि, इसे लेकर सेना का आधिकारिक बयान नहीं आया है। घटना मंगलवार शाम को पुंछ में नियंत्रण रेखा पर कृष्णा घाटी सेक्टर के फॉरवर्ड एरिया में हुई।

[illegible] से सटे इलाके में 3 माइन ब्लास्ट हुए और पाकिस्तान की ओर से फायरिंग भी हुई थी। दावा है कि इसी समय आतंकियों ने घुसपैठ की कोशिश की थी। भारतीय सेना ने जवाबी फायरिंग की थी। जिसमें 4 से 5 घुसपैठियों मारे गए।

फायरिंग और ब्लास्ट को लेकर सेना से दैनिक भास्कर ने बात की। सेना ने कहा- एक अप्रैल को एलओसी के उस पार से पाकिस्तानी सेना ने घुसपैठ की कोशिश की। इसके कारण कृष्णा घाटी सेक्टर में एक माइन ब्लास्ट हुआ। पाकिस्तानी सेना ने बिना उकसावे के फायरिंग की और संघर्ष विराम का उल्लंघन किया गया।

सेना ने कहा- हमारे सैनिकों ने फायरिंग का जबाव दिया। स्थिति नियंत्रण में है और इस पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है। भारतीय सेना [illegible] पर शांति बनाए रखने के लिए साल 2021 के [illegible] समझौते को बनाए रखने की अपील करती है।

इधर कठुआ में सुरक्षाबलों का 2 आतंकियों की तलाश में सर्च ऑपरेशन जारी है। राजौरी जिले में सुंदरबनी के सिया बदराई इलाके में बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान तलाया जा रहा है। यह इलाका बॉर्डर से सटा हुआ है। जून 2024 में आतंकियों ने यहां पर शिव खोरी से लौट रही बस पर हमला किया था।

मंडला में पुलिस-नक्सली मुठभेड़ में दो महिला नक्सली ढेर

आर.एन.एस

नई दिल्ली। मध्यप्रदेश के मंडला जिले में पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हुई है। अधिकारियों के मुताबिक, इसमें दो महिला नक्सली मारी गई हैं।

मुठभेड़ बुधवार सुबह करीब 6 बजे बिछिया थाना क्षेत्र के मुंडिदादर और गन्हेरिदादर के जंगल में हुई। सर्चिंग के दौरान मुठभेड़ स्थल से एक एसएलआर, एक भरमार बंदूक, वायरलेस सेट और दैनिक जरूरत का सामान मिला है।

पुलिस के मुताबिक, मारी गई नक्सलियों में से एक छत्तीसगढ़ और दूसरी महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले की रहने वाली है। दोनों पर 14-14 लाख रुपए का इनाम घोषित था।

बालाघाट में मार गिराई थीं चार महिला नक्सली इससे पहले 19 फरवरी को बालाघाट के गढ़ी थाना इलाके में हुई मुठभेड़ में चार महिला नक्सली मारी गई थी। ये सभी कान्हा भोरमदेव एबी डिवीजन खटिया मोर्चा दलम की सदस्य थी। इनमें से एक आशा पर 14 लाख का इनाम था।

बालाघाट मुठभेड़ में मारी गई नक्सली कमांडर आशा वेश बदलने में माहिर थी। वह पिछले 6 साल से पुलिस को चकमा दे रही थी। उसका काम महिलाओं को नक्सली संगठन से जोड़ना था। वह उनसे गोंडी में बात करती थी। वह फर्राटेदार अंग्रेजी भी बोल लेती थी। गोरिल्ला वॉर में ट्रेंड आशा को पकड़ना पुलिस के लिए चुनौती थी। पुलिस जब-जब एनकाउंटर कर नक्सलियों को खत्म करती, आशा कुछ ही समय में नई टीम तैयार कर लेती।

आसाराम को नहीं मिली राहत जेल-अस्पताल में ही रहेगा

आर.एन.एस

नई दिल्ली। नाबालिग से रेप मामले में सजायाफ्ता आसाराम को राजस्थान हाईकोर्ट से फिलहाल राहत नहीं मिली है। बुधवार को उसकी अर्जी पर सुनवाई हुई। करीब आधे घंटे तक बहस चली, जिसमें सरकारी अधिवक्ता ने आसाराम को अंतरिम जमानत देने का विरोध करते हुए कहा कि उसने सुप्रीम कोर्ट की प्रवचन नहीं करने की शर्त का उल्लंघन किया है। अब इस मामले में 7 अप्रैल को सुनवाई होगी।

वहीं, आसाराम के वकील ने कहा कि किसी भी शर्त का कोई उल्लंघन नहीं किया गया है। इससे पहले कोर्ट ने आसाराम को पूर्व में दी गई अंतरिम जमानत के दौरान लिए गए ट्रीटमेंट से जुड़ी पूरी जानकारी भी ली और भविष्य में इसकी जरूरत के बारे में भी पूछा। दोनों पक्षों को सुनने के बाद कोर्ट ने आसाराम की ओर से शर्तों के उल्लंघन को लेकर जवाबी शपथ पत्र पेश करने को कहा है।

अंतरिम जमानत अवधि खत्म होने के बाद मंगलवार (1 अप्रैल) दोपहर डेढ़ बजे आसाराम ने जोधपुर सेंट्रल जेल में सरेंडर किया था। यहां करीब 10 घंटे रुकने के बाद रात 11:30 बजे पाली रोड स्थित एक प्राइवेट हॉस्पिटल (आरोग्यम) में शिफ्ट किया गया। हॉस्पिटल में आसाराम को एडमिट क्यों कराया गया है इसकी आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है।

गुजरात हाईकोर्ट से 3 महीने की अंतरिम जमानत मिली

इससे पहले आसाराम को गुजरात हाईकोर्ट से 3 महीने की अंतरिम जमानत मिल गई। इसी आधार पर मंगलवार को राजस्थान हाईकोर्ट खुलने पर आसाराम के वकील निशांत बोड़ा ने पूर्व में दायर आवेदन पर अर्जेंट सुनवाई का आग्रह किया था। कोर्ट ने इस मामले में आज सुनवाई की।

सरकारी कर्मचारियों के लिए ऑर्गन डोनेशन पर 42 दिन की स्पेशल कैजुअल लीव देने का प्रावधान

अंगदान को बढ़ावा देने के लिए केंद्र का फैसला

आर.एन.एस

केंद्र सरकार ने सरकारी कर्मचारियों के लिए ऑर्गन डोनेशन (अंगदान) पर 42 दिन की स्पेशल कैजुअल लीव देने का प्रावधान किया है। लोकसभा में केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने इस संबंध में जानकारी दी।

यह छुट्टी सर्जरी के टाइप पर निर्भर नहीं करेगी और इसे सरकारी डॉक्टर की सिफारिश पर अधिकतम 42 दिनों तक लिया जा सकता है। यह आमतौर पर अस्पताल में भर्ती होने के दिन से शुरू होगी, लेकिन जरूरत पड़ने पर सर्जरी से एक सप्ताह पहले भी ली जा सकती है।

यह प्रावधान 2023 में कार्मिक मंत्रालय के आदेश के तहत लागू किया गया था, जिससे ऑर्गन डोनेशन को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

1 अप्रैल 2025 से सरकारी कर्मचारियों के लिए न्यू पेंशन स्कीम लागू इसके न्यू पेंशन स्कीम के तहत अगर किसी कर्मचारी ने 25 साल नौकरी की है, तो रिटायरमेंट के पहले नौकरी के आखिरी 12 महीने की बेसिक सैलरी का 50[illegible] अमाउंट भी पेंशन के तौर पर मिलेगा। अगर कोई कर्मचारी 10 साल बाद नौकरी छोड़ देता है तो उसे हर महीने 10 हजार रुपए की पेंशन मिलेगी। इससे लगभग 23 लाख कर्मचारियों को फायदा होगा। ये स्कीम 1 अप्रैल 2025 से लागू कर दी जाएगी।

वहीं, अगर सर्विस के दौरान किसी सरकारी कर्मचारी की मौत हो जाती है, तो उसके परिवार को कर्मचारी की मौत के वक्त तक मिलने वाली पेंशन का 60 प्रतिशत हिस्सा मिलेगा

शो में शामिले होने वाले बैंकर से कुणाल कामरा ने जताया खेद

आर.एन.एस

मुंबई। कॉमेडियन कुणाल कामरा के विवादास्पद शो में शामिल हुए एक बैंकर को गवाह के तौर पर बुलाया गया है। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी।

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे पर कथित कटाक्ष करने को लेकर कामरा के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है।

हालांकि बाद में पुलिस ने नवी मुंबई के व्यक्ति से कहा कि उन्हें तत्काल पेश होने की आवश्यकता नहीं है। कामरा ने इस पर उस व्यक्ति को हुई असुविधा के लिए सोशल मीडिया पर खेद व्यक्त किया।

इससे पहले मंगलवार को पुलिस ने उन खबरों का खंडन किया था कि कुणाल कामरा के शो में आए दर्शकों को बयान दर्ज करने के लिए बुलाया गया है।

एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि बैंकर को समन भेजा गया है। उसने 'बुक माई शो' ऐप के जरिए कामरा के शो का टिकट बुक किया था।

शिवसेना विधायक मुरजी पटेल की शिकायत पर 28 मार्च को खार

पुलिस थाने में कामरा के खिलाफ कथित मानहानि का मामला दर्ज किया गया था।

अधिकारी ने बताया कि बैंकर को उपस्थित रहने के लिए कहा गया था क्योंकि पुलिस गवाहों के बयान दर्ज करना चाहती थी। अधिकारी ने बताया कि नोटिस भेजने से पहले जांच अधिकारी ने बैंकर को फोन किया और खार पुलिस थाने आने को कहा।

अधिकारी ने बताया कि बाद में मामले में कुछ घटनाक्रम सामने आने के बाद पुलिस ने बैंकर को बताया कि उनको तत्काल पेश होने की आवश्यकता नहीं है। अधिकारी ने कहा कि जब भी उनके बयान की जरूरत होगी उन्हें बुला लिया जाएगा।

महाराष्ट्र कांग्रेस ने महायुति सरकार पर चुनावी वादे से पलटने का आरोप लगाया

आर.एन.एस

मुंबई। किसानों की कर्जमाफी को लेकर महाराष्ट्र कांग्रेस ने महायुति सरकार पर चुनावी वादे से पलटने का आरोप लगाया। राज्य कांग्रेस अध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाल ने बुधवार को कहा कि बीजेपी-शिवसेना-एनसीपी गठबंधन 'गजनी सिंड्रोम' से पीड़ित है। वे किसानों की कर्जमाफी का अपना चुनावी वादा भूल चुके हैं।

उन्होंने कहा कि बजट सत्र में भी कर्जमाफी और महिलाओं को पैसे देने को लेकर कोई ठोस फैसला नहीं लिया गया। सिर्फ जनता को असली मुद्दों से दरकिनार कर औरंगजेब के मकबरे जैसे विषयों से ध्यान भटकाने की कोशिश की गई।

कांग्रेस की चेतावनी- अगर कर्जमाफी नहीं हुई तो आंदोलन करेंगे अब कांग्रेस ने महायुती सरकार को चेतावनी दी है कि अगर सरकार किसानों की कर्जमाफी को लेकर ठोस कदम नहीं उठाती, तो किसान आंदोलन होगा।

सपकाल ने कहा, सरकार को बुआई सीजन से पहले किसानों का कर्ज माफ करना चाहिए, या फिर केंद्र से स्पेशल राहत पैकेज लेना चाहिए।

अजीत पवार ने कर्जमाफी से इनकार किया था इससे पहले 29 मार्च को महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार ने राज्य की आर्थिक स्थिति का हवाला देते हुए कर्जमाफी से इनकार किया था। उन्होंने कहा था कि राज्य की आर्थिक स्थिति इसकी इजाजत नहीं देती और किसानों को समय पर अपने कर्ज की किश्तें चुकानी चाहिए।

कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हालिया आरएसएस मुख्यालय दौरे को लेकर भी सवाल उठाए। सपकाल ने कहा कि मोदी जी संघ की शरण में गए थे, क्योंकि अब उनका पीएम पद खतरे में है। इससे यह दिखता है कि उनकी पकड़ कमजोर हो रही है।

जयपुर ब्लास्ट की साजिश में शामिल आतंकवादी गिरफ्तार

आर.एन.एस

जयपुर। जयपुर में सीरियल ब्लास्ट की साजिश में शामिल फरार आतंकी फिरोज खान को रतलाम पुलिस ने अरेस्ट कर लिया है। आतंकवादी पर नेशनल इंवेस्टिगेशन एजेंसी ([illegible]) ने 5 लाख रुपए का इनाम रखा था।

दरअसल, 30 मार्च 2022 को राजस्थान के निंबाहेड़ा में 12 किलो आरडीएक्स के साथ तीन आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया था। इनमें जुबेर पिता फकीर मोहम्मद, अल्तमस खान और सरफुद्दीन उर्फ सेफुल्ला थे।

यह सभी जयपुर में सीरियल ब्लास्ट के लिए कार से आरडीएक्स ले जा रहे थे। इन्होंने साजिश में शामिल

11 आतंकियों के नाम बताए थे।

ईद मनाने के लिए घर पहुंचा था

फरार आतंकी फिरोज की तलाश के लिए पूर्व में कई बार एनआईए रतलाम में दबिश दे चुकी थी। मंगलवार (1 अप्रैल) रात को रतलाम एसपी अमित कुमार इनपुट मिला था कि फिरोज आनंद कॉलोनी में उसके घर आया है। एएसपी राकेश खाका की टीम ने उसे अरेस्ट कर लिया। बताया जा रहा वह ईद मनाने अपने घर आया था।

एनआईए ने 19 जुलाई 2023 को पुणे से आतंकी इमरान खान और मोहम्मद युनूस साकी निवासी कूंजड़ों का वास को गिरफ्तार किया था। ये सभी आतंकी संगठन की स्लीपर सेल सूफा से जुड़े हैं।

आतंकी फिरोज खान के हाथ नहीं आने पर एनआईए ने शहर में उस पर इनाम वाले पोस्टर लगवाए थे। साजिश का मास्टर माइंड मोहननगर का इमरान खान था।

इमरान के साथ ही साजिश में शामिल अमीन खान उर्फ अमीन फावड़ा, मोहम्मद आमीन पटेल, मजहर खान को पुलिस व एटीएस की मदद से पूर्व में गिरफ्तार किया जा चुका है।

रीवा गैंगरेप केस के 8 दोषियों को उम्रकैद

आर.एन.एस

रीवा। रीवा के गुढ़ थाना क्षेत्र में पति को पेड़ से बांधकर महिला से गैंगरेप करने वाले 8 दोषियों को रीवा की फास्ट ट्रैक कोर्ट ने उम्रकैद की सजा सुनाई है। इसके साथ एक दोषी को 2 लाख 31 हजार और बाकी सभी पर 2 लाख 30 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया गया है। जुर्माना नहीं भरने पर सजा की अवधि एक साल बढ़ जाएगी।

घटना 21 अक्टूबर 2024 की है। पीड़ित दंपती भैरव बाबा मंदिर के दर्शन करने पहुंचा था। मंदिर से कुछ दूरी पर शराब के नशे में धुत आठ युवकों ने पहले पति को बंधक बनाया और उसकी बेरहमी से पिटाई की। इसके बाद, पति के सामने ही महिला से सामूहिक दुष्कर्म किया।

घटना को अंजाम देने के बाद आरोपी मौके से फरार हो गए थे। पीड़िता की शिकायत पर गुढ़ थाना पुलिस ने तत्काल मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू की। अलग-अलग टीमों ने दबिश देकर सभी आरोपियों को गिरफ्तार किया।

गुढ़ में हुई इस घटना को फास्ट ट्रैक कोर्ट में लाया गया और 5 महीने 12 दिन के भीतर सुनवाई पूरी कर ली गई। चतुर्थ अपर सत्र न्यायाधीश पदमा जाटव की अदालत ने तथ्य प्रमाणित होने के बाद सभी आठ दोषियों को उम्र कैद की सजा सुनाई। कोर्ट ने कहा-

अभियोजक की तरफ से 24 सबूत पेश किए गए थे। जिनसे प्रथम दृष्ट्या गैंग रेप का अपराध सिद्ध होता है।

बियानी ग्रुप ऑफ कॉलेजेस में नर्सिंग विभाग के लिए शक्ति प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। विद्याधर नगर स्थित बियानी ग्रुप ऑफ कॉलेजेस में नर्सिंग विभाग के विद्यार्थियों के लिए शक्ति प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया गया। इस ड्राइव का मुख्य उद्देश्य योग्य नर्सिंग छात्रों को रोजगार के अवसर प्रदान करना रहा। इस कैंपस ड्राइव में भगवान महावीर कैंसर हॉस्पिटल ने बतौर रिक्रूटमेंट पार्टनर सहयोग किया। ड्राइव में अस्पताल की ओर से एचआर प्रतिनिधि मिस्टर रितूराज, मिस दलजीत कौर और मिस मोनिका उपस्थित रहे। ड्राइव में नर्सिंग विभाग के 50 से 60 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिनमें से लगभग 35 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इस अवसर पर कॉलेज के निदेशक डॉ. संजय बियानी ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ दीं और नर्सिंग प्रोफेशन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें अपने कौशल को लगातार विकसित करने के लिए प्रेरित किया। प्लेसमेंट हेड स्मृति तिवाड़ी ने कहा कि यह ड्राइव नर्सिंग छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है, जिससे उन्हें प्रतिष्ठित संस्थानों में कार्य करने का मौका मिलेगा। नर्सिंग वाइस प्रिंसिपल जीशू जॉर्ज और प्रिंसिपल लथा पी.एस. ने सभी छात्राओं को उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। कैंपस ड्राइव का सफल संचालन किशन चौधरी ने किया।

संविधान कक्षः संविधान के हर पहलू से रूबरू करवाता है ये कक्ष

शिक्षा मंत्री राजस्थान मदन दिलावर के निर्देशन में विद्यालयों में किए जा रहे विभिन्न नवाचार

जोधपुर के बावड़ी कस्बे स्थित पीएम श्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के अनोखे नवाचार ने बटोरी प्रशंसा

विद्यालय में बनाया गया है संविधान कक्ष

संविधान निर्माण से जुड़ी अद्भुत जानकारियों का किया गया है संकलन

डॉ. राम भजन कुमावत

जयपुर। पीएम श्री विद्यालयों में किए जा रहे नवाचार प्रशंसा बटोर रहे हैं। शिक्षा मंत्री राजस्थान मदन दिलावर के निर्देशन में विद्यालयों में नवाचार किए जा रहे हैं। नई सोच, नए प्रयास नए उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। ऐसा ही एक अनोखा उदाहरण पेश किया है जोधपुर जिले के बावड़ी कस्बे स्थित पीएम श्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय ने। विद्यालय ने देश के संविधान को पूरी तरह समर्पित एक कक्ष का निर्माण करवाया है, जिसे संविधान कक्ष का नाम दिया गया है। यह कक्ष न केवल विद्यार्थियों को संविधान से जुड़ी विभिन्न जानकारियों से रूबरू करवा रहा है, बल्कि उनमें अपने देश के संविधान के प्रति आदर भाव भी बढ़ा रहा है।

अब लगाए जाएंगे ऑडियो सिस्टम

अपनी देखरेख में संविधान कक्ष को तैयार कराने वाले स्कूल लेक्चरर सुरेंद्र सिंह राजपुरोहित बताते हैं कि संविधान की मूल कॉपी पर 284 सदस्यों ने हस्ताक्षर किए थे। सभी के हस्ताक्षर, संविधान सभा से संबंधित चित्र और संविधान सभा में विभिन्न सदस्यों के कथन आदि के पोस्टर लगाकर संविधान कक्ष को जीवंतता प्रदान करने का प्रयास किया गया है। अगले चरण में विद्यालय परिवार के सहयोग से संविधान कक्ष में सीसीटीवी कैमरे, संविधान कक्ष में मैटिंग लगाना, संविधान कक्ष में संविधान की मूल कॉपी लगाने और ऑडियो सिस्टम जैसे कार्य किए जाएंगे।

शुरुआत से ही बच्चे जानें अपना संविधान

संविधान कक्ष जय नारायण व्यास यूनिवर्सिटी जोधपुर के असिस्टेंट प्रोफेसर दिनेश गहलोत की देखरेख में तैयार हुआ है। उनका कहना है कि यह बनाने के पीछे लक्ष्य यह था कि नई पीढ़ी शुरुआत से ही संविधान के बारे में जानें। यह किन परिस्थितियों में तैयार हुआ, किन- किन लोगों की भागीदारी रही जैसी बातें उन्हें पता चलें। पीएम श्री विद्यालयों में नागरिक सहभागिता के तहत यह किया गया है। यह कदम बेहद कारगर साबित हो रहा है।

सजा है महान विभूतियों की तस्वीरों से

विद्यालय के संविधान कक्ष में संविधान से जुड़े विभिन्न पहलुओं को जीवंत करने का प्रयास किया गया है। जिसके अंतर्गत भारतीय संविधान की अनेक विशेषताओं को समावेशित करते हुए संविधान निर्माण में योगदान देने वाले डॉ.राजेन्द्र प्रसाद, डॉ.बी आर अंबेडकर, सरदार वल्लभ भाई पटेल, पं. जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद, सचिदानंद सिन्हा, प्रो. के. टी. शाह, एच. वी. कामथ, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, के.एम. मुंशी, टी.टी. कृष्णमाचारी, वी.टी.कृष्णमाचारी, अल्लादी कृष्णा स्वामी अय्यर, गोपालास्वामी आयंगर, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, चौधरी रणबीर सिंह, एच.सी. मुखर्जी, फ्रैंक जे एंथोनी, प्रो. सिब्बन लाल सक्सेना, हीरालाल शास्त्री, जय नारायन व्यास, पुरुषोत्तम दास टंडन, जयपाल सिंह मुंडा, महावीर त्यागी, टी प्रकाशम, के संथानम, के हनुमंतैया के फोटो तैयार कर लगवाए गए हैं। इसके अतिरिक्त संविधान सभा के सदस्य नहीं होते हुए भी संविधान निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले बी. ए. राव, नंदलाल बोस, एस एन मुखर्जी, एच वी आर आयंगर एवं प्रेम बिहारी नारायण रायजादा के योगदान भी याद किया गया।

नारी शक्ति के योगदान को भी किया रेखांकित

संविधान कक्ष में नारी शक्ति के महत्ती योगदान को भी याद किया गया है। संविधान सभा में 15 महिलाएं सदस्य थीं, महिलाओं के संविधान निर्माण में योगदान को रेखांकित करने के उद्देश्य से सभी 15 महिलाओं अम्मू स्वामीनाथन, दाक्षायाणी वेलायुधन, दुर्गाबाई देशमुख, हंसा मेहता, मालती चौधरी, सुचेता कृपलानी, पूर्णिमा बनर्जी, कमला चौधरी, सरोजनी नायडू, लीला रे, विजयलक्ष्मी पंडित, राजकुमारी अमृत कौर, रेणुका रे, बेगम एजाज रसूल, ऐनी मस्करीनी की तस्वीरें भी यहां लगाई गई हैं।

संविधान की है विस्तृत जानकारी

भारतीय संविधान से सम्बंधी महत्वपूर्ण तथ्यों में संविधान के भाग, अनुसूचियां, संविधान सभा के अधिवेशन, प्रारूप समिति, संविधान सभा की महत्वपूर्ण समितियां, संघ सरकार, राज्य सरकार, स्थानीय सरकार, उद्देशिका मूल कर्तव्य, राजस्थान से संविधान सभा के सदस्य आदि के चार्ट तैयार कर लगवाए गए हैं। इसके साथ ही संविधान निर्माण के दौरान महत्वपूर्ण तिथियां जैसे 9 दिसम्बर 1946, 26 नवम्बर 1949, 24 जनवरी 1950 के दिन के कार्यों को भी प्रदर्शित किया गया है।

शिक्षा जगत के प्रतिष्ठित नाम प्रो. (डॉ.) अरविंद अग्रवाल बने दीपशिखा समूह एवं यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी के मुख्य सलाहकार और मार्गदर्शक

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर । महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार के संस्थापक कुलपति प्रो. (डॉ.) अरविंद कुमार अग्रवाल को दीपशिखा समूह एवं यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी ने मुख्य सलाहकार एवं एमेरिटस प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया है।

यह सम्मानजनक पद उन्हें शिक्षा और समाज में उनके अभूतपूर्व योगदान के लिए प्रदान किया गया है। उनकी अनवरत शिक्षण, गहन शोध और असाधारण मार्गदर्शन की विरासत ने अनगिनत छात्रों और सहकर्मियों पर अमिट छाप छोड़ी है।

विश्वविद्यालय का गौरवपूर्ण निर्णय

दीपशिखा कला संस्थान के अध्यक्ष डॉ. अंशु सुराणा ने इस अवसर पर कहा, प्रो. अग्रवाल की विशेषज्ञता और अनुभव विश्वविद्यालय के लिए अत्यंत मूल्यवान हैं। उनकी सोच और मार्गदर्शन से शिक्षा जगत को नई ऊंचाइयां मिलेंगी।

स्वीकृति और भविष्य की अपेक्षाएं

प्रो. अग्रवाल के इस महत्वपूर्ण पद को स्वीकार करने के बाद, विश्वविद्यालय ने उनके मार्गदर्शन में नई शोध परियोजनाओं, शैक्षणिक विकास और नवाचार की संभावनाओं को बल देने की आशा जताई है।

इस नियुक्ति से दीपशिखा समूह और यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक नया आयाम मिलेगा और छात्रों को उनके अनुभवों से लाभान्वित होने का सुनहरा अवसर मिलेगा।

शाला प्रवेश कार्यक्रम के साथ विद्यार्थियों का नए सत्र में स्वागत किया

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

सीकर । ग्रैंड सीकर रोड, राजावास स्थित, एनके पब्लिक स्कूल में नवीन सत्र 2025-26 की शुरुआत हुई जिसमें अगली कक्षाओं में क्रमोन्नत विद्यार्थियों के साथ नव प्रविष्ट विद्यार्थियों का शाला में गर्मजोशी के साथ स्वागत किया गया। कक्षा नर्सरी से 5 तक के क्रमोन्नत विद्यार्थियों के साथ ही सभी नवीन प्रविष्ट विद्यार्थियों का तिलक किया गया व मिठाई स्वरूप नन्हे मुन्ने बच्चों को फरूटी, चॉकलेट, चिप्स, ग्रीटिंग मैसेज आदि वितरित किए गए। विद्यालय के प्रबंध निदेशक, डॉ एन सी लूनायच नें सभी विद्यार्थियों को नवीन सत्र 2025-26 में अगली कक्षा में प्रवेश होने पर बधाई एवं आशीर्वाद प्रदान करते हुए सभी अध्यापक अध्यापिकाओं से लक्ष्य निर्धारित अध्ययन की बात कही। विद्यालय के निदेशक, कुलदीप सिंह नें सभी नन्हे मुन्ने बच्चों को अपने आशीर्वचन में नव सत्र में अच्छी मेहनत कर माता-पिता के सपनों को साकार करने की प्रेरणा दी तथा उपस्थित अध्यापक अध्यापिकाओं से आग्रह किया कि वह जिम्मेदारी की भावना के साथ बच्चों को लेकर आगे बढ़ें। प्रधानाचार्या, कविया प्रेमा ने बताया की उपस्थित सभी विद्यार्थियों में एक विशिष्ट प्रकार का उल्लास परिलक्षित हो रहा था। सभी बच्चे विद्यालय में मुस्कुराहट के साथ आए।कार्यक्रम में उप प्रधानाचार्य, गौरव माथुर, समन्वयक राम अवतार खूंटेटा, सोनिया शर्मा, नेहा शर्मा, नीलम पांडे, स्टाफ सेक्रेटरी पूनम शर्मा सहित सभी अध्यापक एवं अध्यापिकाएं उपस्थित रहे। नन्हे मुन्ने बच्चों नें विभिन्न गानों पर थिरकते हुए नजर आए।

नीमराणा स्थित रैफल्स यूनिवर्सिटी का छठा दीक्षांत समारोह 5 अप्रैल को होगा आयोजित

344 विद्यार्थियों को डिग्री और 21 को प्रदान किए जाएंगे गोल्ड मेडल

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। नीमराणा स्थित रैफल्स यूनिवर्सिटी अपना छठा दीक्षांत समारोह 5 अप्रैल, शनिवार को यूनिवर्सिटी कैम्पस में आयोजित करने जा रहा है। समारोह का आयोजन सुबह 10:30 बजे से होगा, जिसमें भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन केंद्रीय मंत्री, भूपेंद्र यादव मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करेंगे। वहीं, सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया के न्यायाधीश, जस्टिस दीपांकर दत्ता और एमार, दुबई के संस्थापक, हिज एक्सीलेंसी मोहम्मद अलब्बर, विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल होंगे। रैफल्स यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर, प्रो. (डॉ.) राजेंद्र सिंह सांगवान ने बताया कि समारोह का एक प्रमुख आकर्षण हिज एक्सीलेंसी मोहम्मद अलब्बर को डॉक्टरेट डिग्री (ऑनोरिस कॉसा) से सम्मानित करना भी होगा। दीक्षांत समारोह की शुरुआत अकादमिक प्रोसेशन के साथ होगी। इस दौरान कुल 344 विद्यार्थियों को पीएचडी, स्नातकोत्तर और स्नातक डिग्रियां प्रदान की जाएंगी। यह डिग्रियां उन्हें इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट, एग्रीकल्चर, लॉ, ह्यूमैनिटीज, फार्मेसी,और बेसिक एंड एप्लाइड साइंस आदि सहित अन्य क्षेत्रों में प्रदान की जाएगी। इसके अतिरिक्त, विभिन्न विभागों के 21 गोल्ड मेडलिस्ट्स को मेडल्स देकर सम्मानित किया जाएगा। समारोह की अध्यक्षता, यूनिवर्सिटी के चेयरपर्सन, विवेक गोम्बेर करेंगे। इस अवसर पर गोम्बेर एजुकेशन फाउंडेशन के चेयरपर्सन, डॉ. जस्टिस मीना वी. गोम्बेर भी उपस्थित रहेंगे। समारोह की शुरुआत यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रो. (डॉ.) राजेंद्र सिंह सांगवान द्वारा वेलकम एड्रेस के साथ होगी। जिसके बाद वे यूनिवर्सिटी की वार्षिक रिपोर्ट भी प्रस्तुत करेंगे। समारोह का समापन रजिस्ट्रार प्रो. (डॉ.) के. कार्तिकेयन द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ होगा।

पांच दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम का समापन समारोह

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। मालवीय नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमएनआईटी) जयपुर में उन्नत भारत अभियान के तहत आयोजित पांच दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम का समापन समारोह आयोजित किया गया। 28 मार्च से 1 अप्रैल तक चले इस कार्यक्रम ने जयपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के 50 छात्रों को आवश्यक कौशल प्रदान किए। मुख्य अतिथि श्रीमती मिथलेश मीना (आर.ए.एस), राजस्थान राज्य खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति निगम में प्रबंधक (कार्मिक) ने अपने संबोधन में ग्रामीण पृष्ठभूमि से प्रशासनिक सेवा तक के अपने प्रेरक सफर को साझा किया। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित करते हुए कहा, डिजिटल साक्षरता और कौशल विकास ग्रामीण भारत को विकसित करने की कुंजी है।

कार्यक्रम के दौरान छात्रों को निम्नलिखित प्रशिक्षण दिए गए:

- एमएस ऑफिस और ऑनलाइन बैंकिंग सहित व्यावहारिक डिजिटल कौशल
- रिज्यूमे निर्माण और करियर तैयारी
- सरकारी योजनाओं और जिम्मेदार नागरिकता के बारे में जागरूकता

राजभवन के शैक्षणिक भ्रमण ने कार्यक्रम को विशेष बना दिया, जहां छात्रों ने अधिकारियों के साथ बातचीत की और शासन प्रक्रियाओं के बारे में जाना। भुरथल गांव के की छात्र चन्द्रमुखी ने कहा, राजभवन का भ्रमण करने से मुझे शिक्षा और दृढ़ संकल्प से क्या संभव है, इसका पता चला।

एमएनआईटी में उन्नत भारत अभियान की संयोजक डॉ. नीरजा सारस्वत ने कहा, यह पहल शहरी-ग्रामीण विभाजन को पाटने के हमारे प्रयासों को दर्शाती है। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ शिव ओम मीना ने प्राशिक्षण कार्यक्रम का परिचय करवाया। समन्वयक डॉ. पूजा जांगिड़ ने कार्यक्रम से जुड़े अनुभव साझा किए। समारोह में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए गए और समन्वयक डॉ रामदयाल पंडा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम आत्मनिर्भर भारत मिशन के तहत ग्रामीण युवाओं को सशक्त बनाने के एमएनआईटी का गंभीर प्रयास है।

मुख्य बिंदु: 50 ग्रामीण छात्रों को प्रशिक्षण राजभवन का शैक्षणिक भ्रमण डिजिटल और करियर कौशल पर फोकस आर.ए.एस अधिकारी के साथ प्रेरक संवाद स्वावलंबन पर जोर

पंचायत समिति जाँलसु की साधारण सभा का हुआ आयोजन

ग्रामीण क्षेत्र के विकास कार्यों पर हुई चर्चा

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर । पंचायत समिति कार्यालय जाँलसु में पंचायत समिति जाँलसु की साधारण सभा का आयोजन जाँलसु प्रधान हरदेव यादव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सभा में उपखण्ड अधिकारी अशोक कुमार, स्थानीय विधायक प्रशांत शर्मा, उप जिलाप्रमुख मोहन डागर, विकास अधिकारी सुप्यार कटारिया, तहसीलदार रामचन्द्र गुर्जर, जालसु सरपंच संघ अध्यक्ष रामजीलाल यादव मौजूद रहे। बैठक में डागर ने ब्लॉक के सभी राजस्व गांवों में शुद्ध पेयजल की उचित व्यवस्था करने , किसानों को कृषि कार्यो हेतु रात की बजाय दिन में विधुत आपूर्ति करने, टुटी हुई सडकों का नवीनीकरण करवाने, किसानों को ब्लॉक में किसान गोष्ठी का आयोजन कर सरकारी योजनाओं की जानकारी देने, ग्राम पंचायतों द्वारा आबादी भूमि मे जरुरतमंद नागरिकों को निःशुल्क पट्टे आवंटित करने, राजकीय विधालयों में खेल मैदान आवंटन करने ,सहित बिजली, पानी, सड़क, सहित अन्य प्रमुख समस्याओं पर चर्चा कर प्रस्ताव रखे। इस दौरान बैठक में उप प्रधान सुमन देवी, सरपंच बबली सत्यनारायण शर्मा, सीता रमेश यादव, राजेन्द्र यादव, गंगा देवी,आशा देवी, कमला देवी, शैलेश बौहरा, मेनका देवी, पंचायत समिति सदस्य ऐश्वर्य अटल, जयराम कुमावत, कविता देवी, सन्तोष देवी, भगवान सहाय बुनकर सहित अन्य विभागों के प्रशानिक अधिकारी मौजूद थे।

श्रीमद् भागवत कथा में प्रह्लाद चरित्र सुन भावुक हुए श्रद्धालु, उमड़ा जनसैलाब

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बालेर, खंडार। बालेर कस्बे के निकटवर्ती बागोरा गांव में हनुमानजी मंदिर में चल रहे श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ में बुधवार को कथावाचक पं. महावीर कृष्ण गोपाल शास्त्री ने भावुक कर देने वाले प्रसंग सुनाए। संगीतमयी भागवत कथा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। कथा के दौरान प्रह्लाद चरित्र और नृसिंह अवतार की कथा सुनाई गई।

कथावाचक ने कहा कि भगवान की भक्ति में ही असली शक्ति है। भागवत कथा जीवन को सही दिशा देती है। भक्ति करनी है तो ध्रुव और प्रह्लाद जैसी करनी चाहिए। भगवान ने प्रह्लाद की रक्षा के लिए अवतार लिया और हिरण्यकश्यप का वध किया। जब भक्ति सच्ची हो तो ईश्वर स्वयं सहायता करते हैं। भगवान को मन में बसाने से जीवन में बदलाव आता है। भगवान अपने भक्त को पाना चाहते हैं। भक्त भगवान के बिना अधूरा है, वैसे ही भगवान भी भक्त के बिना अधूरे हैं।

उन्होंने कहा कि बच्चों को अच्छे संस्कार देना जरूरी है। ताकि वे बुजुर्ग माता-पिता की सेवा कर सकें। गो सेवा और साधु सेवा कर सकें। मनुष्य को दिखावा नहीं करना चाहिए। भगवान को सच्चे मन से याद करना चाहिए।

पं. शास्त्री ने कहा कि अहंकार, घृणा, ईर्ष्या और गर्व से मुक्त होने पर ही ईश्वर की कृपा मिलती है। यदि मनुष्य संसार में पूरी तरह लिप्त रहता है तो उसकी भक्ति केवल दिखावा बन जाती है। प्रह्लाद चरित्र पिता-पुत्र के संबंध को दर्शाता है। यदि भक्त सच्चा हो तो कोई भी परिस्थिति उसे भगवान से दूर नहीं कर सकती।

प्रह्लाद ने राक्षसी प्रवृत्ति वाले पिता हिरण्यकश्यप के घर में रहते हुए भी ईश्वर भक्ति नहीं छोड़ी। उन्होंने पुत्र धर्म निभाया। उन्होंने कहा कि यदि पिता कुमार्ग पर हो तो पुत्र का कर्तव्य है कि उसे सुमार्ग पर लाने का प्रयास करे। प्रह्लाद ने बिना भय के ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया। उन्होंने पिता को भी ईश्वर की ओर प्रेरित किया। लेकिन हिरण्यकश्यप ने उनकी बात नहीं मानी। अंत में भगवान नरसिंह ने उसका वध किया। इसके बाद भी प्रह्लाद ने अपने पिता की सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। कथा के अंत में आरती हुई। आयोजकों ने श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया गया।

कैमेस्ट्री, फिजिक्स मध्यम और मैथ्स आसान, पेपर एनालिसिस जेईई मेन अप्रैल 2025

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। बीई-बीटेक कोर्स में प्रवेश के लिए देश की सबसे बड़ी इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा के दूसरे सेशन जेईई मेन-अप्रैल 2025 की 2ुरुआत बुधवार से हुई। परीक्षा कम्प्यूटर बेस्ड मोड पर हुई। एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक डॉ. बृजेश माहेश्वरी ने बताया कि स्टूडेंट्स के फीडबैक के आधार पर पेपर का एनालिसिस किया गया है। विद्यार्थियों से प्राप्त जानकारी के अनुसार सुबह की पारी में कैमेस्ट्री व फिजिक्स का स्तर मध्यम एवं जबकि मैथ्स आसान रही। फिजिक्स केमिस्ट्री एवं मैथ्स में 25-25 प्रश्न पूछे गए, सेक्शन 2 के सभी प्रश्न अनिवार्य थे। विद्यार्थियों को पहले दिन किसी भी तकनीकी समस्या का सामना नहीं करना पड़ा।

कैमेस्ट्री: सुबह की पारी में कैमेस्ट्री का पेपर मध्यम रहा। इनऑर्गेनिक कैमिस्ट्री से 40 प्रतिशत, फिजीकल कैमिस्ट्री से 40 एवं ऑर्गेनिक कैमेस्ट्री से 20 प्रतिशत प्रश्न पूछे गए। पेपर में सिंगल विकल्प प्रश्नों में स्टेटमेंट तथा मैचिंग लिस्ट के प्रश्न भी पूछे गए।

फिजिक्स: सुबह की पारी के पेपर में काइनेमेटिक्स, रोटेशनल डायनेमिक्स, ज्योमेट्रिकल ऑप्टिक्स, मैग्नेटिक इफेक्ट ऑफ करंट से दो-दो प्रश्न पूछे गए। जबकि मॉडर्न फिजिक्स, इलेक्ट्रोस्टेटिक्स, एलास्टिसिटी, हीट थर्मोडाइनेमिक्स से तीन-तीन प्रश्न पूछे गए। न्यूटन्स लॉ, करंट इलेक्ट्रिसिटी, इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वेव्ज एंड वेव ऑप्टिक्स, सेमीकंडक्टर एवं एसएचएम से एक-एक प्रश्न पूछा गया।

मैथ्स: सुबह की पारी में मैथ्स का पेपर आसान लेकिन लेन्दी रहा। ऐसे में पेपर सॉल्व करने में समय लगा। एलजेब्रा से 40 प्रतिशत, वेक्टर थ्री डी से 12 प्रतिशत, कोऑर्डिनेट्स से 16, कैलकुलस से 24 प्रतिशत एवं आठ प्रतिशत प्रश्न मिश्रित पूछे गए।

शोभा यात्रा को लेकर दिया गणेश जी को निमंत्रण

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

चाकसू। 6 अप्रैल को श्री रामनवमी के अवसर पर कस्बे में श्री राम नवमी महोत्सव समिति चाकसू द्वारा विशाल शोभायात्रा निकाली जाएगी। इसे लेकर समिति पदाधिकारीयों व गणमान्य लोगों ने तहसील भवन के बाहर स्थित प्राचीन गणेश मंदिर में विधिवत पूजा अर्चना कर गणेश जी को निमंत्रण दिया। पंडित रामबाबू शर्मा ने वैदिक मंत्र उच्चारण के साथ गणेश जी की पूजा करवाई और आरती के बाद प्रसाद वितरित किया गया। इस दौरान कृषि मंडी के पूर्व अध्यक्ष कैलाश शर्मा, महेश शर्मा, केशव गौतम,रमेश साहू, रामावतार सैनी, पार्षद दिनेश शर्मा, कृष्ण बिहारी शर्मा, रामराज गौतम, नवीन खंडेलवाल, आलोक लाभी, गिरिराज बूसर, मोहित अग्रवाल सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

लोकोमोटिव उत्पादन में बना नया कीर्तिमान

1681 लोकोमोटिव का उत्पादन करके भारत ने अमेरिका और यूरोप को पीछे छोड़ा

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

नई दिल्ली देश में रेलवे लोकोमोटिव का उत्पादन बढ़कर 1681 हो गया है जो संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप, दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के कुल लोको उत्पादन से भी अधिक है। वित्तीय वर्ष 2024-25 में देश के सभी लोकोमोटिव इकाइयों की उपलब्धियों के बारे में बताते हुए रेलवे बोर्ड के प्रवक्ता ने कहा कि पिछले साल भारत में 1472 लोकोमोटिव का उत्पादन हुआ था। इस तरह इस वर्ष पिछले साल की तुलना में 19% अधिक लोकोमोटिव का उत्पादन हुआ है। मेड इन इंडिया की अवधारणा को मजबूत करने के उद्देश्य से लिए गए निर्णयों के आलोक में देश में लोकोमोटिव का उत्पादन लगातार बढ़ रहा है। 2004 से 2014 तक की अवधि में देश में कुल 4695 लोकोमोटिव का उत्पादन हुआ था जिसका राष्ट्रीय वार्षिक औसत 469.5 रहा जबकि 2014 से 2024 के बीच देश में 9168 रेलवे लोकोमोटिव का उत्पादन हुआ और वार्षिक औसत करीब 917 रहा। वित्तीय वर्ष 2024-25 में 1681 लोकोमोटिव का उत्पादन हुआ है। इस वर्ष चितरंजन लोकोमोटिव वर्क्स में 700, बनारस लोकोमोटिव वर्क्स में 477, पटियाला लोकोमोटिव वर्क्स में 304, मधेपुरा में 100 और मरहौरा में 100 लोकोमोटिव का उत्पादन हुआ है। देश में सबसे अधिक लोकोमोटिव मालगाड़ियों को चलाने के लिए उत्पादित किए गए।

कोतवाली थाने में सीएलजी सदस्यों की बैठक आगामी त्यौहारों को लेकर दी जानकारी

साइबर क्राइम और ठगी के साथ शहर में बढ़ रहे स्मैक के नशे को लेकर हुई चर्चा

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

» बाड़ी..सीएलजी बैठक में मौजूद सदस्य और पुलिस अधिकारी

बाड़ी। शहर के कोतवाली थाने में बुधवार को शांति समिति के सदस्यों की एक आवश्यक बैठक का आयोजन बाड़ी सीओ महेंद्र कुमार एवं कोतवाली एसएचओ अमित शर्मा के सानिध्य में किया गया। इस दौरान 6 अप्रैल को रामनवमी,12 अप्रैल को हनुमान जयंती,14 अप्रैल को बाबा साहेब बीआर अंबेडकर जयंती सहित वर्तमान में चल रहे चैत्रीय नवरात्र महोत्सव को लेकर चर्चा की गई। सभी सदस्यों को एसएचओ अमित शर्मा ने आग्रह किया कि वे आगामी त्यौहारों को देखते हुए सतर्क रहें और कहीं पर भी किसी प्रकार की कोई भी आपराधिक घटना या झगड़े की आशंका होने का अंदेशा होने पर तुरंत पुलिस को सूचना दे।

एसएचओ अमित शर्मा ने सभी सदस्यों को बताया कि वर्तमान में जो साइबर क्राइम है। उसको लेकर लोगों को सचेत करना जरूरी है। क्योंकि इसमें परिवारों में रहने वाले एकल सदस्य सबसे अधिक समस्या का सामना कर रहे हैं। ऐसे में आम जनता के बीच यह बात पहुंचे और कहीं पर भी कोई फोन आने पर या व्हाट्सएप्प कॉल आने पर पुलिस या अन्य किसी अधिकारी बनकर किसी को ठगी का शिकार बनाने वाले लोगों को बचाया जा सके एवं तुरंत पुलिस को मामले की सूचना मिल सके। इसके लिए सदस्यों को प्रयास करने होंगे। ऐसे में हर घर तक यह मैसेज पहुंचाना जरूरी है। उन्होंने कहा कि डिजिटल अरेस्ट का शिकार लोग ना हो इसके लिए भी यह बैठक बुलाई है साथ में शहर में फैल रहे स्मेक जैसे खतरनाक नशे का शिकार युवा ना हो, इसको लेकर भी सदस्यों को जानकारी दी गई। बैठक के दौरान सीएलजी टीम के सदस्य अनिल गोयल आरटीआई ने नवरात्रि मेले में सप्तमी, अष्टमी, नवमी को जाप्ता बढ़ाने तथा बालिका विद्यालय से सटकर ठेले को हटाने की मांग की गई। इस मौके पर डॉ वीरेंद्र यादव, डॉ जितेंद्र गुलपारिया, डॉ आशुतोष शर्मा, राकेश दीक्षित, ज्वान सिंह मीणा, राजेश शर्मा, टीकम सिंह, सतीश प्रजापति, राजेंद्र गर्ग , मुकेश विधोलिया, रामधीश समाधियां, इसरार खां ट्रेलर, महेश भेटले, आरटीआई अनिल गोयल, लखना यादव,पार्षद राजकुमार भारद्वाज एवं अन्य सदस्य मौजूद रहे।

छठ मईया के मंदिर पर भरेगा आज लक्खी मेला

सीमावर्ती राज्यों से भी बड़ी संख्या में दर्शनों को पहुंचते हैं श्रद्धालु

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

राजाखेड़ा। राजाखेड़ा उपखंड के नया गांव में स्थित छठ मईया के मंदिर पर गुरुवार को विशाल लक्खी मेले का आयोजन किया जाएगा। नये गांव वाली माता मंदिर पर मेले के आयोजन को लेकर गांव अम्बरपुर निवासी माधोसिंह जादौन एवं बालाजी जादौन ने बताया कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी चैत्र शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को छठ मईया के मंदिर पर लक्खी मेला भरने जा रहा है।

इस मेले के अंतर्गत स्थानीय लोगों के अलावा सीमावर्ती राज्यों से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु माता के दर्शनों को पहुंचते हैं। माधोसिंह ने बताया कि राजपूत समाज एवं अन्य समाजों में छठ मईया की विशेष मान्यता है उन्होंने कहा कि जो भी भक्त सच्चे मन से माता के दर्शन कर मनौती मांगते हैं माता उनकी सारी मनोकामनाएं पूर्ण करती है।

जिंदगी का सफर बस यूं ही कट गया जो सहारे बने...

वृहद काव्य गोष्ठी का आयोजन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

» धौलपुर..काव्य गोष्ठी में उपस्थित कवि व अतिथि

धौलपुर। समरस संस्थान साहित्य सृजन भारत की धौलपुर इकाई के सौजन्य से सनातन नवीन वर्ष विक्रम संवत 2082 के स्वागत में कामाक्षी आईटीआई के सभाकक्ष में एक वृहद काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 16 कवियों ने शहर के गणमान्य, सुधी श्रोताओं के समक्ष हास्य व्यंग्य, ओजवीर, श्रृंगार एवं भक्ति रस की रचनाओं का काव्य पाठ कर श्रोताओं को बांधे रखा। कवियों ने देश व प्रदेश की खुशहाली की कामना के साथ परस्पर शुभकामनाएं समर्पित की। शहर के वयोवृद्ध कवि नत्थी लाल त्यागी के मुख्य आतिथ्य में इस कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के अध्यक्ष गोविंद शर्मा पटवारी ने की। वरिष्ठ कवयित्री अनुसुइया शर्मा, संस्थान की प्रांतीय महामंत्री रजनी शर्मा एवं कवि वीरेंद्र त्यागी व विश्वंभर दयाल शर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। राजवीर सिंह क्रांति ने मां सरस्वती की वंदना में सारगर्वित शब्द सुमन अर्पित किए। नत्थी लाल त्यागी ने अनेक रचनाओं के साथ बांध कर आए थे, कर पसारे गए, मांग कर लाए दिन, वह समारे गए। जिंदगी का सफर बस यूं ही कट गया, जो सहारे बने, कर किनारे गए। रचना के माध्यम से सभी को चिंतन के लिए मजबूर कर दिया। संस्थान के अध्यक्ष गोविंद शर्मा पटवारी ने संचालन के साथ-साथ सभी का आभार प्रकट किया व्यक्त किया। एवं भविष्य में ऐसे कार्यक्रमों की महति आवश्यकता पर जोर दिया।

जिले में 14 मई तक चलेगा मलेरिया क्रैश कार्यक्रम

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की ओर से जिले में 14 मई तक मलेरिया क्रैश कार्यक्रम का प्रथम चरण चलाया जाएगा। कार्यक्रम की सफल क्रियान्वित को लेकर सभी खंड मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी तथा चिकित्सा अधिकारी प्रभारियों को निर्देश जारी किए गए है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. धर्मसिंह मीणा ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान मलेरिया सहित अन्य मच्छर जनित मौसमी बीमारियों से बचाव, रोकथाम की प्रभावी कार्यवाही की जाएगी। साथ ही मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया आदि मौसमी बीमारियों से बचाव, रोकथाम व जागरूकता सबंधी गतिविधियां की जाएगी। इस संबंध में उप मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. चेतराम मीणा ने बताया कि कार्यक्रम के प्रथम चरण के दौरान बायोलॉजिकल कंट्रोल के तहत हैचरी क्रियाशील करने व स्थाई जल स्रोतों में लार्वा भक्षी गम्बूशिया मछली डालने के भी निर्देश दिए हैं। कार्यक्रम में घर-घर जाकर बुखार के मरीजों का सर्वे कर रक्त पट्टिका ली जाएगी। त्वरित जांच कर पॉजिटिव पाए जाने पर उपचार किया जाएगा। पॉजिटिव मरीजों के घरों के आसपास मच्छरों के प्रजनन स्थलों की पहचान कर लार्वा रोधी गतिविधियां की जाएगी। सभी चिकित्सा अधिकारी प्रभारियों को प्रत्येक शनिवार अपने अधीन समस्त एएनएम की टीम गठित कर स्वास्थ्य केंद्र मुख्यालय पर से एन्टीलार्वल, सोर्स रिडक्शन तथा आमजन में जागरूकता पैदा करने के साथ ही क्षेत्र के प्रत्येक सरकारी, निजी विद्यालयों में भ्रमण कर विद्यार्थियों को मलेरिया, डेंगू चिकनगुनिया से बचाव हेतु शिक्षा प्रदान करने के निर्देश दिए। प्रत्येक चिकित्सा संस्थान पर मलेरिया, डेंगू आईईसी कॉर्नर स्थापना करने के भी निर्देश दिए गए हैं।

अशोक कुमार ने जिला खेल अधिकारी के पद पर किया कार्य ग्रहण

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। बुधवार को धौलपुर जिला खेलकूद प्रशिक्षण केंद्र में जिला खेल अधिकारी के रिक्त पद पर अशोक कुमार पूर्व जिला खेल अधिकारी ने कार्य ग्रहण किया। अपने संबोधन में खेल संघों के पदाधिकारी और अल्पकालीन खेल प्रशिक्षकों से वार्ता करते हुए कहा कि हम सब मिलकर धौलपुर में खेल गतिविधियों को सुचारू ढंग से संचालन में सहयोग करेंगे धौलपुर जिले के प्रतिभावान खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने एवं राज्य सरकार से जो भी सुविधा और संसाधन उनको मिल सकते हैं दिलवाने का प्रयास करेंगे। इस अवसर पर जिला खेलकूद प्रशिक्षण केंद्र के सहायक प्रशासनिक अधिकारी अमृतलाल रामेश्वर जिला खो खो संघ के सचिव अनिल मिश्रा, जिला फुटबाल संघ के सचिव संदीप राणा, हैंडबॉल प्रशिक्षक अंशुल राणा, तीरंदाजी प्रशिक्षक अनिल कंसाना, हॉकी प्रशिक्षक नमन कुमार, बैडमिंटन संघ के सचिव मोहम्मद जाकिर हुसैन एवं इरशाद मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

शहर में बदबूदार जलापूर्ति से परेशान मौहल्लेवासी, एसई से की शीघ्र सुधार की मांग

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

» धौलपुर..जलदाय विभाग के एसई को ज्ञापन सौंपते भाजपा कार्यकर्ता

धौलपुर। भारतीय जनता पार्टी वरिष्ठ नेता एवं प्रदेश प्रवक्ता जन अधिकार मंच राजस्थान विजय श्रीवास्तव ने शहर में खराब बदबूदार जलापूर्ति पूरे शहर में कही सुबह तो कही शाम को पानी सप्लाई की चरमराती व्यवस्था को लेकर जलदाय विभाग के अधीक्षण अभियंता यादव से कार्यालय में मुलाकात कर व्यवस्थाओं को शीघ्र सुधारने यथा शीघ्र सुबह और शाम पानी सप्लाई करने की मांग की गई।

प्रदेश प्रवक्ता विजय श्रीवास्तव ने बताया कि वर्तमान में लगभग कई सालों से जलदाय विभाग के आलाअफसरों एवं कर्मचारियों की लापरवाही से शहर की आमजनता को सीवर लाइन जैसा बदबूदार पानी पीने को मजबूर है। पूरे शहर में पानी की किल्लत के कारण आम जनता त्रस्त है। कई बार मोहल्लों की महिलाओ ने भी आला अफसरों को शिकायत की है, मगर अधिकारियों के कान पर जूं तक नहीं रैंग रही है। कायस्थपाडा, नाना साहब का बाड़ा, बजरिया के हालत बहुत खराब है। उक्त स्थानों पर सुबह शाम पानी की सप्लाई की जाये। जिलाध्यक्ष पूर्व पार्षद महेशचन्द्र कोली ने बताया कि कसाईपाड़ा, छोले वाली गली, मोहल्ला खदाना, नौगजा पुराने शहर में जलापूर्ति की व्यवस्था चरमरा रही है। यदि सात दिवस में व्यवस्था नहीं सुधरती है तो धरना प्रदर्शन किया जायेगा। मुलाकात में जिला मीडिया प्रभारी दिग्विजय सिंह राजावत, अनमोल शर्मा, गिरीश कुमार, मुकेश श्रीवास्तव, महावीर गर्ग, ओम प्रकाश कोली, सुभाष पचोरी, राजेश कुमार उपस्थित रहे।

कलश यात्रा के साथ श्रीमद् भागवत कथा शुरू

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

» धौलपुर...कलश यात्रा में शामिल भक्तगण।

धौलपुर। शहर की सिंचाई विभाग कॉलोनी से बुधवार सुबह भव्य कलश यात्रा निकाली गई। यात्रा राजराजेश्वरी झोर वाली माता मंदिर पर पहुंचकर संपन्न हुई। इस यात्रा के साथ ही श्रीमद् भागवत महापुराण कथा का आयोजन प्रारंभ हुआ। भगत कैलाश चंद चौधरी ने बताया कि यह कथा 8 अप्रैल तक झोर वाली माता मंदिर में आयोजित की जाएगी। कथा का वाचन रामशरण शास्त्री लालपुर वाले द्वारा किया जायेगा। प्रतिदिन दोपहर 12 बजे से 4 बजे तक कथा और ज्ञान सत्र का आयोजन होगा। इसके अलावा 30 मार्च से सत्य चंडी पाठ भी प्रारंभ किया गया है। श्रद्धालुओं के बीच इस धार्मिक आयोजन को लेकर विशेष उत्साह देखने को मिल रहा है। आयोजकों ने अधिक से अधिक भक्तों से इसमें शामिल होने की अपील की है। कथा परक्षित पुजारी कैलाश चंद्र, लखनलाल, लवकुश शर्मा, दीपू गुप्ता, प्रशांत गुप्ता, प्रेम सिंह, सत्य प्रकाश शर्मा, हरिचंद, निरंजन सिंह, पवन यदुवंशी, पप्पू सभी मां के भक्तगण मौजूद रहे।

भारत विकास परिषद सूरज प्रकाश शाखा की नवीन कार्यकारिणी का गठन, जगदीश पहाड़िया बने अध्यक्ष

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

» बाड़ी... नवीन पदाधिकारियों का स्वागत करते परिषद सदस्य

बाड़ी। शहर में भारत विकास परिषद डा. सूरज प्रकाश शाखा की नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया है। जिसमे चुनाव पर्यवेक्षक जयंत मोदी द्वारा सर्वसम्मति से अध्यक्ष एवं अन्य कार्यकारिणी का गठन किया है। प्रांतीय प्रकल्प प्रभारी जयंत मोदी ने बताया की डॉ सूरज प्रकाश शाखा की नवीन कार्यकारिणी का गठन हुआ है। जिसमें सर्वसम्मति से पप्पूमल जिंदल के प्रस्ताव पर जगदीश पहाड़िया को अध्यक्ष चुना गया है। सचिव पद पर राकेश शर्मा के प्रस्ताव पर संजीव गर्ग को जिम्मेदारी सौंपी गई है। वहीं नरेंद्र मंगल के प्रस्ताव पर कोष की जिम्मेदारी पंकज चौधरी को सौंपी गई है।

भारत विकास परिषद के रीजनल संयुक्त सचिव डॉ. शिवदयाल मंगल की निगरानी में कार्यकारिणी का गठन किया गया है। उन्होंने बताया कि परिषद के सभी सदस्य समान है। पद एक दायित्व है जिसे हर सदस्य को बखूबी निभाना है। ऐसे में सभी पदाधिकारी अपनी जिम्मेदारी से जनहित,समाज हित और लोकहित में कार्य करें। बैठक के दौरान प्रांतीय प्रकल्प प्रभारी जितेंद्र जादोन ने कहा कि परिषद समृद्ध लोगों का संगठन है। जिन्हें समाज में सेवा, समर्पण,संस्कार जैसे मुक्त भाव रखते हुए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

वार्षिक चुनाव के इस कार्यक्रम में हरिओम सिंगल,उमेश सिंगल, राधेश्याम, नीरज, सुधाकर, राजीव, रजनी, महिला संयोग का मंजू अग्रवाल, मुकेश अग्रवाल, महेश अवस्थी, अनीता, बबीता, कृष्णा, नेहा सहित महिला और पुरुष पदाधिकारी मौजूद रहे। इस दौरान नवीन कार्यकारिणी के गठन के बाद सभी पदाधिकारी को शुभकामना दी गई साथ में होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया।

थाना बसईडांग ने फायरिंग का फरार आरोपी किया गिरफ्तार

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। जिला पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में चलाये जा रहे वांछित आरोपियों एवं हथियार की धरपकड़ अभियान के तहत थाना बसईडांग पुलिस की टीम ने फायरिंग के आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। थानाधिकारी गंभीर सिंह ने बताया कि पुलिस थाना टीम के द्वारा थाना क्षेत्र के गांव गरवापुरा में 27 मार्च को हुई फायरिंग की घटना में वक्त घटना में फरार आरोपी सौरभ पुत्र मुरारी गुर्जर निवासी गरवापुरा को गांव से गिरफ्तार किया है। पुलिस टीम द्वारा आरोपी से एक अवैध देशी कट्टा 315 बरामद किया है। थाना क्षेत्र मे वांछित अरोपियों के विरुद्ध धरपकड़ अभियान जारी है।

उत्तर मैट्रिक छात्रवृति योजना में 30 अप्रैल तक करें आवेदन

धौलपुर । शैक्षणिक सत्र 2024-25 में राजस्थान राज्य के मूल निवासियों के लिए सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा संचालित उत्तर मैट्रिक छात्रवृति योजनाओं एसटी, एससी, एमबीसी, ओबीसी, एबीसी, डीटीएंटी, मिरासी एवं मिश्ती में ऑनलाइन आवेदन करने कि अंतिम तिथि 30 अप्रैल निर्धारित की गई है 7 ऑनलाईन आवेदन बेव पोर्टल अथवा एसएसओ पोर्टल पर स्कॉलरशिप एसजेई एप अथवा मोबाईल ऐप एसजेईडी एप्लीकेशन के माध्यम से आवेदन आमंत्रित किये जायेंगे।

चोरों ने गैंगसा मशीन में रखे ट्रांसफार्मर बनाया निशाना, तांबे के वायर किया पार

आंगई थाना क्षेत्र स्थित गिर्राजी स्टोन गैंगसा की घटना

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

» सरमथुरा..चोर द्वारा जहां की गई चोरी

सरमथुरा। उपखंड के आंगई थाना क्षेत्र में एक बड़ी चोरी की वारदात सामने आई है। राष्ट्रीय राजमार्ग 11बी पर स्थित गिरिराज स्टोन गेंगसा मशीन पर चोरों ने ट्रांसफॉर्मर को निशाना बनाया। चोरों ने रात के अंधेरे में मशीन बंद होने का फायदा उठाते हुए ट्रांसफॉर्मर से तांबे के तार और तेल चुरा लिया। स्टोन गेंगसा के मालिक बनिया राम मीणा ने चोरी की शिकायत आँगई थाने में दर्ज कराई है। चोरी की इस घटना से क्षेत्र के पत्थर व्यापारियों में दहशत का माहौल है। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण किया है और इलाके में गश्त बढ़ा दी है।पुलिस अधिकारियों के अनुसार आरोपियों की पहचान के लिए आसपास के सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है। पुलिस ने जल्द ही चोरों को पकड़ने का दावा किया है।

राजस्थान फार्मर रजिस्ट्री में देश में अव्वल- राजस्व मंत्री

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। प्रदेश के राजस्व एवं उपनिवेशन मंत्री हेमन्त मीणा ने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कुशल मार्गदर्शन में फार्मर रजिस्ट्री में पीएम किसान के 81 प्रतिशत पात्र लाभार्थियों का रजिस्ट्रेशन कर राजस्थान ने देश में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने विभागीय अधिकारियों के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि उनके सफल प्रयासों का ही परिणाम है कि फार्मर रजिस्ट्री में प्रदेश के 73 लाख से अधिक किसानों का रजिस्ट्रेशन किया जा चुका है। उन्होंने अधिकारियों को योजनाबद्ध रूप से कार्य कर फार्मर रजिस्ट्री के शत प्रतिशत लक्ष्य को प्राप्त करने के निर्देश दिए। मीणा बुधवार को शासन सचिवालय में वीसी के माध्यम से राजस्व तथा उपनिवेशन विभाग की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने अधिकारियों को सीमाज्ञान,आपसी सहमति से बंटवारा, भू-रूपांतरण के लंबित प्रकरणों की प्रभावी मॉनिटरिंग कर त्वरित निस्तारण करने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि किसानों के हितों को प्राथमिकता देते हुए सीमाज्ञान के लिए संचालित ई-धरती पोर्टल में आवश्यक संशोधन कर इसे और अधिक बेहतर बनाने की दिशा में कार्य करें। राजस्व मंत्री ने कहा कि राजस्व से संबंधित लंबित प्रकरणों का व्यवस्थित और समयबद्ध निस्तारण कर अधिकारी जीरो पेंडेंसी पर कार्य करना सुनिश्चित करें। बैठक में श्री मीणा ने राजस्व मंडल एवं अधीनस्थ राजस्व न्यायालयों, संभागीय आयुक्त न्यायालयों, जिला कलक्टर न्यायालयों के लंबित वादों की स्थिति की भी समीक्षा की। उन्होंने कहा कि 10 से अधिक वर्षों से लंबित राजस्व वादों का प्रत्येक न्यायालय चिन्हित कर प्राथमिकता से गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करें। राजस्व मंत्री ने कहा कि राइजिंग राजस्थान में किए गए एमओयू प्रदेश के विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने समस्त जिला कलेक्टर्स को राजनिवेश पोर्टल के माध्यम से राइजिंग राजस्थान के भू आवंटन, नामांतरण दर्ज करने, संपरिवर्तन आदि प्रकरणों की जांच कर गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध निस्तारण करने के निर्देश दिए।

प्रमुख शासन सचिव, राजस्व एवं उपनिवेशन विभाग दिनेश कुमार ने कहा कि प्रदेश में फार्मर रजिस्ट्री में रजिस्ट्रेशन के लिए जिला कलेक्टर पटवार मंडल स्तरों पर डोर-टू-डोर रजिस्ट्रेशन चालू रखें, जिससे फार्मर रजिस्ट्री के शत प्रतिशत लक्ष्य को सुनिश्चित किया जा सके। उन्होंने बताया कि राज्य में डिजिटल क्रॉप सर्वे की दिशा में प्रभावी कार्य किए जा रहे हैं। बैठक में राजस्व मंडल अध्यक्ष हेमन्त कुमार गेरा ने मंडल द्वारा किये गए नवाचारों से अवगत कराया। बैठक में समस्त संभागीय आयुक्त, जिला कलक्टर्स एवं आयुक्त, उपनिवेशन वीसी के माध्यम से तथा निबंधक राजस्व मंडल, भू प्रबन्ध आयुक्त सहित वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

तीन माह प्रतिदिन गंगापुर सिटी-मथुरा के बीच स्पेशल ट्रेन का संचालन

कोटा। रेल प्रशासन द्वारा अतिरिक्त यात्रा भार को कम करने के उद्देश्य से मथुरा-गंगापुर सिटी-मथुरा के मध्य स्पेशल ट्रेन चलाया जा रहा है। गाड़ी संख्या 04191/04192 मथुरा-गंगापुर सिटी-मथुरा स्पेशल ट्रेन अप्रैल से जून 2025 तीन माह तक दोनों दिशाओं में कुल 91-91 ट्रिप चलेगी। इस गाड़ी में कुल 12 कोच होंगें। गाड़ी संख्या 04191 मथुरा-गंगापुर सिटी स्पेशल मथुरा से शाम 16:15 बजे प्रस्थान कर मध्यवर्ती स्टेशनों पर रूकते हुए रात 22:55 बजे गंगापुर सिटी पहुंचेगी। इसी प्रकार वापसी में गाड़ी संख्या 04192 गंगापुर सिटी-मथुरा रात 23:25 बजे गंगापुर सिटी से प्रस्थान कर मध्यवर्ती स्टेशनों पर रूकते हुए अगले दिन सुबह 07.00 बजे मथुरा पहुंचेगी। गाड़ी के हाल्ट-यह गाड़ी दोनों दिशाओं में मथुरा से गंगापुर सिटी के मध्य गोवर्धन, डीग, बृजनगर, गोविंदगढ़, रामगढ़, अलवर, राजगढ़, बाँदीकुई जंक्शन, दौसा जंक्शन, नांगल राजावतान, लालसोट, मण्डावरी, पिपलई एवं बामनवास स्टेशनों पर रुकेगी। इस संबंध में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ जैन ने बताया कि यात्रियों की सुविधाओ को ध्यान में रखते हुए सीजन में स्पेशल ट्रेनों का संचालन किया जा रहा है। यात्रियों से अनुरोध है कि ट्रेन की उचित स्थिति की जानकारी स्टेशन, एनटीईएस, रेल मदद 139 अथवा ऑनलाइन प्राप्त कर यात्रा करें।

मौसमी बीमारियों से बचाव की हो पुख्ता तैयारियां, अलर्ट मोड में रहें अधिकारी- गजेन्द्र सिंह खींवसर

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने कहा कि मौसम विभाग के अनुसार इस वर्ष भी राजस्थान सहित देश के कई राज्यों में भीषण गर्मी एवं हीटवेव की चेतावनी दी गई है। इसे देखते हुए सभी जिलों में अधिकारी अलर्ट मोड में रहते हुए जल्द से जल्द आवश्यक तैयारियां सुनिश्चित करें। किसी भी चिकित्सा संस्थान में जांच, दवा एवं उपचार से संबंधित व्यवस्थाओं में कोई कमी नहीं रहे। किसी भी स्तर पर लापरवाही सामने आई तो संबंधित अधिकारी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी। चिकित्सा मंत्री बुधवार को स्वास्थ्य भवन में आयोजित उच्च स्तरीय बैठक में वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से आगामी गर्मियों में मौसमी बीमारियों से बचाव की तैयारियों सहित अन्य विषयों पर समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य स्तर से मौसमी बीमारियों से बचाव की तैयारियों की सतत मॉनिटरिंग की जाए। साथ ही, राज्य स्तर से अधिकारी नियमित रूप से फील्ड में जाकर निरीक्षण करें। साथ ही, संभाग एवं जिला स्तर के अधिकारी भी अपने-अपने क्षेत्र में आवश्यक रूप से निरीक्षण करें ताकि चिकित्सा व्यवस्थाएं चाक-चौबंद रहें।

खींवसर ने सभी जिलों में चिकित्सकों एवं नर्सिंग स्टाफ की उपलब्धता की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि जहां भी डॉक्टर्स या नर्सिंग स्टाफ पर्याप्त संख्या में उपलब्ध नहीं है, वहां वैकल्पिक व्यवस्था की जाए। स्थानीय स्तर पर नियमानुसार संविदा आधार पर चिकित्सक या अन्य चिकित्साकर्मियों की सेवाएं ली जाएं। उन्होंने गुरूवार दोपहर तक सभी जिलों से चिकित्सा संस्थानों में मानव संसाधन की स्थिति की विस्तृत जानकारी भिजवाने के निर्देश दिए।

चिकित्सा मंत्री ने कहा कि किसी भी चिकित्सा संस्थान में पंखे, कूलर, एसी आदि की कमी की शिकायत नहीं आए। समय रहते जरूरी संसाधनों की खरीद एवं मेंटीनेंस सुनिश्चित किया जाए। इसके लिए तात्कालिक आवश्यकतानुसार आरएमआरएस में उपलब्ध राशि का नियमानुसार उपयोग किया जाए। साथ ही, दानदाताओं, स्वयंसेवी संस्थाओं एवं भामाशाहों से भी सहयोग लिया जा सकता है। खींवसर ने कहा कि जिलों में कंट्रोल रूम स्थापित कर उनका सुचारू संचालन किया जाए। सभी अस्पतालों में आपातकालीन चिकित्सा व्यवस्थाएं पुख्ता हों। एम्बुलेंस की क्रियाशीलता एवं उसमें सभी जीवन रक्षक उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित हो। आमजन को मौसमी बीमारियों से बचाव के लिए जागरूक करने के निर्देश भी दिए।

कार्यालय ग्राम पंचायत चितौरा, पंचायत समिति सैंपऊ (धौलपुर)

क्रमांकः/ ग्रा.पं./ई.नि.नि.सा./2025/102 दिनांक :- 01.04.2025

ई-निविदा सूचना 01/2025-26

ग्राम पंचायत परिक्षेत्र में ग्रामीण विकास तथा पंचायतीराज की विभिन्न योजनाओं के तहत सम्पूर्ण वर्षवार स्वीकृत निर्माण कार्यों में निर्माण सामग्री आपूर्ति अनुमानित लागत लगभग 50.00 लाख के लिये सक्षम श्रेणी के पंजीकृत फर्मों से ऑनलाइन ई-निविदा दिनांक 11.04.2025 को समय 10.00 एएम तक आमंत्रित की जाती है, जिसका यूबीएन नम्बर क्रमशः ZDH2526GLRC00001 है। विस्तृत विवरण https://sppp.rajasthan.gov.in व https://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा व डाउनलोड किया जा सकता है।

प्रशासक
ग्राम पंचायत चितौरा
पं.समिति सैंपऊ, धौलपुर

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत चितौरा
पं.समिति सैंपऊ, धौलपुर

संपादकीय

अमेरिकी धमकी से पहले भी भारत पर हुआ है बड़ा प्रभाव, रूस से कच्चा तेल खरीदना अब हो सकता है मुश्किल

अमेरिका की नई धमकी से भारत की चिंता जरूर कुछ बढ़ गई है, क्योंकि सचमुच अगर वह ऐसा करता है, तो भारत की तेल कंपनियों के लिए रूस से तेल खरीदना मुश्किल हो जाएगा। अभी भारत सबसे अधिक कच्चा तेल रूस से खरीदता है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप शायद विश्व राजनीति में धमकी की नई परंपरा कायम करने पर तुले हैं। अब उन्होंने रूस से कच्चा तेल खरीदने वालों को धमकाया है कि जो ऐसा करेगा, वह अमेरिका में कारोबार नहीं कर पाएगा। ऐसे देशों पर पच्चीस से पचास फीसद तक अतिरिक्त शुल्क लगाया जाएगा। यह धमकी उन्होंने इसलिए दी है कि रूस-यूक्रेन युद्ध समाप्त करने की दिशा में न तो रूस और न ही यूक्रेन ने अपेक्षित सहयोग का रुख दिखाया है। इससे ट्रंप निराश हैं। पिछले महीने यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की को बुला कर ट्रंप ने कड़े शब्दों में फटकार लगाई थी। यूक्रेन को दी जाने वाली अमेरिकी मदद पर रोक लगा दी गई है। इससे उम्मीद बनी थी कि रूस, अमेरिका की युद्ध विराम संबंधी शर्तें मान जाएगा, मगर उसने अपनी शर्त रख दी कि सभी नाटो देश यूक्रेन को सैन्य मदद और गोपनीय सूचनाओं पर रोक लगाएं, तभी वह युद्ध विराम पर विचार कर सकता है। यह अमेरिका के लिए कठिन ही नहीं, शायद कभी पूरी न हो सकने वाली शर्त है। ऐसे में ट्रंप ने अब रूस पर नकेल कसने का रास्ता चुना है। मगर यह रास्ता भी उनके लिए कितना आसान और कारगर साबित होगा, कहना मुश्किल है। अमेरिका की नई धमकी से भारत की चिंता जरूर कुछ बढ़ गई है, क्योंकि सचमुच अगर वह ऐसा करता है, तो भारत की तेल कंपनियों के लिए रूस से तेल खरीदना मुश्किल हो जाएगा। अभी भारत सबसे अधिक कच्चा तेल रूस से खरीदता है। पहले ईरान और खाड़ी देशों से खरीदता था, मगर अमेरिकी प्रतिबंध के बाद भारतीय तेल कंपनियों ने वहां से तेल खरीदना बंद करके रूस से खरीदना शुरू कर दिया था। इस तरह कच्चे तेल की कीमत बढ़ने से महंगाई तेजी से बढ़ेगी, जिसका अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा असर पड़ेगा। हालांकि भारतीय तेल कंपनियां अभी समझ नहीं पा रही हैं कि अमेरिका का अतिरिक्त शुल्क लगाने का ढांचा क्या होगा, इसलिए वे इसे अधिक चिंता का विषय नहीं मान रही हैं, पर जिस तरह पहले ही पारस्परिक शुल्क नीति के तहत अमेरिका ने भारी शुल्क थोप दिए हैं, उससे भारत के लिए संतुलन बिठाना कठिन हो रहा है। यह नया शुल्क और परेशान करने वाला साबित हो सकता है। मगर ट्रंप प्रशासन के लिए भी अपनी शुल्क नीति पर लंबे समय तक कायम रह पाना कठिन होगा। इसे लेकर अमेरिका में ही विरोध हो रहा है। इसलिए कि पारस्परिक शुल्क के चलते अमेरिकी कारोबार पर भी बुरा असर पड़ सकता है। जिन चीजों के लिए अमेरिका दूसरे देशों पर निर्भर है, उनकी कीमतें बढ़ेंगी, तो वहां भी महंगाई बढ़ेगी। ऐसे में अमेरिकी लोगों का विरोध लंबे समय तक सहन कर पाना ट्रंप के लिए आसान नहीं होगा। वहां के मध्यावधि चुनाव में ट्रंप की पार्टी के लिए भी मुश्किलें बढ़ सकती हैं। फिर यह भी कि ट्रंप के नए ऐलान से रूस कितने दबाव में आ पाएगा, कहना मुश्किल है। यूक्रेनी राष्ट्रपति के साथ जैसा व्यवहार ट्रंप ने किया, उससे ज्यादातर पश्चिमी देश नाराज हैं। इसलिए रूस-यूक्रेन संघर्ष रुकवाने का उनका दावा कमजोर पड़ता जा रहा है। दोनों देशों के बीच चल रहा संघर्ष निश्चित रूप से रुकना चाहिए, यह दुनिया की बेहतरी के लिए बहुत जरूरी है। मगर धौंस और धमकी के सहारे ऐसा हो पाना शायद ही संभव हो, इसके और उलझने की आशंका बनी रहेगी।

बदलाव के दौर में गांवों के अस्तित्व का संकट, शहरी संस्कृति की तरफ बेतहाशा दौड़ रहे लोग

> गांव शब्द आते ही हम और आप खेतों, किसानों, ग्रामीण महिलाओं, और गलियों में खेलते बच्चों की कल्पना करने लग जाते हैं। हालांकि अब गांव भी वैसे नहीं रहे जैसे कि हमारी कल्पनाओं में अब तक रहे हैं। ग्रामीण इलाकों में जिस तरह सामाजिक और आर्थिक जटिलताएं रही हैं, उसके मद्देनजर देखें तो कुछ मायनों में यह काफी अच्छा है कि हमारे गांव आज की दुनिया से जुड़ रहे हैं।

भले ही शहर के किराए के कमरों में छोटी-सी घुटन भरी जगह में रहना पड़े, सिर्फ शहर में रहने के लिए लोग मजबूरीवश खुला आकाश भूल जाते हैं। छोटी-छोटी चीजों के लिए संघर्ष करना उनकी दिनचर्या का भाग बन जाता है। लेकिन जब कुछ लोग अपने बच्चों को शहर दे पाते हैं तब भी वे गांव वापस लौटना पसंद नहीं करते हैं।

गांव शब्द आते ही हम और आप खेतों, किसानों, ग्रामीण महिलाओं, और गलियों में खेलते बच्चों की कल्पना करने लग जाते हैं। हालांकि अब गांव भी वैसे नहीं रहे जैसे कि हमारी कल्पनाओं में अब तक रहे हैं। ग्रामीण इलाकों में जिस तरह सामाजिक और आर्थिक जटिलताएं रही हैं, उसके मद्देनजर देखें तो कुछ मायनों में यह काफी अच्छा है कि हमारे गांव आज की दुनिया से जुड़ रहे हैं। आज की दुनिया तकनीक और प्रचार पर चलती है। गांव के लोग भी समझ रहे हैं कि अगर दुनिया में टिके रहना है तो हमें इन सभी चीजों को अपनाना होगा।

मगर इस क्रम में जो दिशा अपनाई गई है और जो रफ्तार है, इससे जो समझ विकसित और मजबूत हो रही है, उसने गांव को गांव से दूर कर दिया है। जहां गांव की सरलताएं शहरों में पहुंचनी चाहिए थी, वहां शहर गांवों तक पहुंच गए हैं। इमारतें बन गईं, खेत कट गए, जंगलों का हाल बेहाल हो गया। यहां तक कि दूरदराज के गांवों की दशा यह होती गई है कि वे खाली होते जा रहे हैं। इसके अलावा, गांव की सरलता और सहजता अब धीरे-धीरे गायब होती दिखने लगी है। गांव जिस तरह शहरों से जुड़ रहे हैं, वहां तक तो ठीक है, लेकिन इस क्रम में जो चीजें पीछे छूट गई या जो लोग पिछड़ गए, उनका अस्तित्व संकट में पड़ गया है। वे गांव कई-कई स्तर पर खाली हो गए, क्योंकि उनके बाशिंदे रोजगार, नई दुनिया की तलाश, बराबरी के माहौल और अपने भीतर के गांव को निकालने शहर आ गए। शहर में बसने का एक मुख्य कारण शिक्षा भी रहा। शिक्षा, रोजगार, नौकरी, पैसा, शोहरत सभी शहर में है, तो फिर प्रश्न है कि गांव का क्या होगा? गांव को किसने इस हाल में छोड़ दिया कि लगातार 'अहा ग्राम्य जीवन' के राग और महिमामंडन के बीच गांव लाचार होते चले गए? आज भी ऐसे गांवों को देखा जा सकता है जिनका ज्यादातर हिस्सा खाली हो गया है। कुछ लोगों ने वहां बड़े-बड़े आशियाने बसाए, लेकिन अब वहां सिर्फ पक्षी बैठते हैं। उन घरों को देखकर ऐसा लगता है कि उन्हें मेहनत और आशा के साथ बनाया गया था, लेकिन उन सब पर शहर हावी हो गया और गांव पीछे छूट गया। ऐसे तमाम लोग हैं, जिनके भीतर अपने कुछ मित्रों, रिश्तेदारों का शहरी जीवन देखकर घर के प्रति लगाव कमजोर पड़ गया और वे शहरी संस्कृति की तरफ बेतहाशा दौड़ने लगे। इनके मूल में एक वजह यह भी है कि गांव में रोजगार की कमी है। सरकारें आईं और गईं। योजनाएं भी लाई गईं और उन्हें कार्यान्वित करने की कोशिश आज भी जारी है, लेकिन छोटे-मोटे कामों, इंसानी और छोटे कारोबारियों के अतिरिक्त अधिकतर गांवों की दशा ठीक नहीं है। ऐसे में मजबूर परिवार गांव छोड़ देते हैं। किसी के गांव से शहर चले जाने पर कई बार सवाल तो उठाया जाता है, लेकिन शहर का रुख करने की वजहों पर शायद गौर नहीं किया जाता। जो लोग गांव में जीवन के जीवंत अनुभवों के साथ जीते हैं, उनके सामने आखिर कैसी परिस्थितियां पैदा होती हैं कि वे गांव छोड़ कर बाहर निकल जाते हैं? भले ही शहर के किराए के कमरों में छोटी-सी घुटन भरी जगह में रहना पड़े, सिर्फ शहर में रहने के लिए लोग मजबूरीवश खुला आकाश भूल जाते हैं। छोटी-छोटी चीजों के लिए संघर्ष करना उनकी दिनचर्या का भाग बन जाता है। लेकिन जब कुछ लोग अपने बच्चों को शहर दे पाते हैं तब भी वे गांव वापस लौटना पसंद नहीं करते हैं। शहर उनकी आस बन जाता है और गांव उनका इतिहास हो जाता है। वे अब कभी नहीं लौटना चाहते उन घरों में जिनमें वे कभी बहुत खुश रहते थे और खुले गलियारों में जहां उन्हें सांस लेने के लिए शुद्ध हवा मिलती थी। ऐसा क्यों हुआ? इसके बहुत से कारण हो सकते हैं, लेकिन शहरों का भी कम बुरा हाल नहीं है। भीड़ बढ़ने से शहरों की स्थिति बहुत खराब हो गई गई है। शहर में प्रदूषित हवा, अस्वच्छता, कंक्रीट की इमारतें, वृक्षविहीन सड़कें, वाहनों का शोर, मनुष्य की टकराहट और भावनाओं के आवेग का प्रदूषण है। इसे चाहकर भी मिटाना संभव नहीं है। ऐसे में क्या किया जाए? क्यों न गांव के खालीपन को भरा जाए और वहां भी शहर जैसा विकास किया जाए, ताकि लोग गांव छोड़कर न जाएं? रोजगार, शिक्षा, कारोबार, तकनीक नई दुनिया से गांव का परिचय करवाकर ऐसा संभव हो सकता है। फिर लोग लौटने लगेंगे अपने खाली पड़े आशियानों में, खेतों में रौनक होगी, जंगल फिर बढ़ेंगे, शहर भी सांस लेने लगेंगे और सब ठीक होने लग जाएगा। शहर और गांव अलग-अलग होंगे, पर कदम-ताल मिला सकेंगे। गांव के बच्चे भी शहर के बच्चों की तरह पढ़ सकेंगे, तकनीकों से अवगत हो सकेंगे। गांव का सूनापन भर उठेगा, आंगन खिल उठेगा, वही शहर का शोर-शराबा थोड़ी राहत देगा और कोलाहल शांति में तब्दील हो जाएगा। शहर स्वच्छ और सुंदर बनेंगे, गांव न केवल खेती, बल्कि हर क्षेत्र में आगे होंगे, इसके लिए दोनों ही व्यवस्थाओं को संरक्षित करने का प्रयास करना होगा। न केवल सरकार को, बल्कि व्यक्तिगत तौर पर हम सबका कर्तव्य है कि गांव और शहर की व्यवस्था को सही रूप में लाएं। इसी में राष्ट्र का विकास निहित है। ये ही हमारे राष्ट्र को गांव की संस्कृति की तरफ लेकर चलेगा, जिसमें प्रेम, करुणा, संवेदना, कल्याण और मानवीय हित निहित होगा।

जम्मू-कश्मीर में दम तोड़ता अलगाववाद, बढ़ने लगी पाकिस्तान की मुश्किलें

द्विपक्षीय संबंधों की दृष्टि से भी देखें तो पाकिस्तान को दबाव में बनाए रखने और अधिक भाव न देने की नीति इस अर्थ में भी कारगर रही कि सीमा पर हिंसक घटनाएं कम हुई हैं। वर्ष 2020 में चीन द्वारा पूर्वी लद्दाख में सैन्य मोर्चा खोलने के समय भी पाकिस्तान ने पश्चिमी मोर्चे पर कोई आक्रामक मुद्रा नहीं अपनाई । केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने हाल में संसद को एक सुखद सूचना दी। उन्होंने बताया कि जम्मू-कश्मीर में अलगाववादी संगठन हुर्रियत कांफ्रेंस के कुछ धड़ों ने भारत के प्रति निष्ठावान रहने का निर्णय किया है। इन गुटों में कश्मीर के सबसे कट्टरपंथी और पाकिस्तानपरस्त समझे वाले नेता सैयद अली शाह गिलानी के राजनीतिक उत्तराधिकारी मोहम्मद शफी की पार्टी डेमोक्रेटिक पीपुल्स मूवमेंट भी शामिल है। यह परिवर्तन दर्शाता है कि कश्मीर के कट्टरपंथी अलगाववादी इस्लामिक गुटों पर अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद से की गई सख्ती के अपेक्षित परिणाम सामने आ रहे हैं। अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद सरकार ने हुर्रियत में शामिल कई अलगाववादी गुटों पर अवैध गतिविधि निवारण अधिनियम यानी यूएपीए के अंतर्गत प्रतिबंध लगा दिया था। इसके साथ ही पाकिस्तान से और विभिन्न प्रकार की अवैध गतिविधियों से प्राप्त होने वाले काले धन के प्रवाह को रोकने के लिए भी कठोर कार्रवाई की गई। गत 12 मार्च को ही मीरवाइज उमर फारूक की अवामी एक्शन कमेटी पर प्रतिबंध लगाकर स्पष्ट संकेत दिया गया कि कश्मीर में अलगाववाद की कोई दुकान चलने नहीं दी जाएगी, चाहे उसे चलाने वाला कितना ही बड़ा नाम क्यों न हो। इस बीच अमित शाह ने कई बार दोहराया कि अनुच्छेद 370 की किसी भी सूरत में वापसी नहीं होने वाली। उनके और मोदी सरकार के इस संकल्प ने अलगाववादियों का मनोबल तोड़ने का काम किया है। इसका यह नतीजा निकला है कि राजनीतिक महत्वाकांक्षा रखने वाले कश्मीरी मुस्लिम नेताओं को समझ आ गया कि यदि राजनीतिक वजूद बनाए रखना है तो अलगाववादी राजनीति को छोड़ना ही होगा। मोदी सरकार की यह नीति मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली संप्रग सरकार के एकदम उलट है। मनमोहन सरकार तो हुर्रियत के धड़ों में यही ढूंढ़ने का प्रयास करती थी कि उनमें नरम अलगाववादी कौन हैं। मनमोहन सरकार ने संभवतः उन्हें नरम अलगाववादी माना जो कश्मीर की आजादी का राग तो छेड़ते थे, परंतु सीधे तौर पर पाकिस्तान में शामिल होने की बात नहीं करते थे। मनमोहन सरकार ने कभी यह सोचा ही नहीं कि कश्मीर की आजादी कभी संभव नहीं हो सकती, क्योंकि भारत से अलग होते ही पाकिस्तान बलात उस पर कब्जा कर लेगा। नरम अलगाववाद को हवा देने वाली मनमोहन सरकार की इस विवेकशून्य नीति के दायरे में यासीन मलिक तक आ गए थे। यासीन मलिक वही दुर्दांत आतंकी था, जिसके हाथ वायु सेना अधिकारियों के खून से सने थे। उस दौर में ऐसे आतंकी की प्रधानमंत्री आवास पर मेहमाननवाजी की जाती थी। जब भारत सरकार ही हुर्रियत के अलगाववादी नेताओं को कश्मीर पर चर्चा के लिए बुलाकर उन्हें कश्मीरियों के प्रतिनिधि के रूप में मान्यता देती थी तो पाकिस्तान भी द्विपक्षीय वार्ता में हुर्रियत को पक्ष बनाने की जिद करता था। दिलचस्प बात यह थी कि हुर्रियत चुनावों का बहिष्कार करती थी, फिर भी उसे कश्मीरियों का प्रतिनिधि माना जाता था। स्पष्ट है कि सड़कों पर दंगा-फसाद करने की हुर्रियत की क्षमता से ही उसे कश्मीरियों का प्रतिनिधि मान लिया गया था। इसके चलते भारत को गालियां देने और स्वयं को पाकिस्तानी बताने वाले सैयद अली शाह गिलानी जैसे हुर्रियत नेताओं की दिल्ली में खूब आवभगत होती रही। उनका इलाज भी भारत के बेहतरीन अस्पतालों में कराया जाता था। उनके बच्चों की पढ़ाई भी नामी-गिरामी देसी-विदेशी संस्थानों में होती रही। अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद हुर्रियत के वे सुनहरे दिन लद गए। अब हुर्रियत के राष्ट्रविरोधी नेताओं को जेल में रहना पड़ रहा है या फिर भारत के प्रति निष्ठावान रहने की कसमें खानी पड़ रही हैं। यह सब साबित करता है कि दशकों तक इन अलगाववादियों को लेकर अपनाई लचर नीतियों ने ही कश्मीर में अलगाववाद को मजबूत किया था। इस आलोक में पूर्ववर्ती सरकारों की पाकिस्तान नीति की भी तुलनात्मक समीक्षा आवश्यक है। बार-बार भारत में आतंकी हमले कराने के बावजूद पाकिस्तान से बात इसलिए की जाती थी, क्योंकि सरकारें कहीं न कहीं मानती थीं कि पाकिस्तान में ही यह क्षमता है कि वह हुर्रियत और जिहादी आतंकी संगठनों के जरिये जब चाहे कश्मीर को अस्थिर कर सकता है। लिहाजा उससे बात करते रहना आवश्यक है। ऐसा करने पर होता यह था कि द्विपक्षीय वार्ता शुरू करने के कुछ समय बाद ही पाकिस्तान वार्ता की मेज पर दबाव बनाकर लाभ हासिल करने के लिए और बड़े आतंकी हमले कराता था। यह दुष्चक्र दशकों से अनवरत चल रहा था। मोदी सरकार ने उड़ी आतंकी हमले के बाद से इसके ठीक विपरीत नीति अपनाते हुए पाकिस्तान से केवल बातचीत ही बंद नहीं की, बल्कि सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक जैसे कदम उठाने से भी परहेज नहीं किया। इतना ही नहीं भारत ने पाकिस्तान की परमाणु हौव्वे की हेकड़ी भी निकाल दी। पाकिस्तान से वार्ता बंद करने का दूसरा लाभ यह हुआ कि पूरे विश्व में भारत-पाकिस्तान का नाम एक साथ जोड़ने की कूटनीतिक संस्कृति लगभग समाप्त हो चुकी है। अब पाकिस्तान भारत का समकक्ष नहीं रहा। अंतरराष्ट्रीय पटल पर भारत का नाम अब चीन और रूस जैसे शक्तिशाली देशों के साथ लिया जाता है। द्विपक्षीय संबंधों की दृष्टि से भी देखें तो पाकिस्तान को दबाव में बनाए रखने और अधिक भाव न देने की नीति इस अर्थ में भी कारगर रही कि सीमा पर हिंसक घटनाएं कम हुई हैं। वर्ष 2020 में चीन द्वारा पूर्वी लद्दाख में सैन्य मोर्चा खोलने के समय भी पाकिस्तान ने पश्चिमी मोर्चे पर कोई आक्रामक मुद्रा नहीं अपनाई। उलटे इस तनाव के बीच ही फरवरी 2021 में उसने भारत के साथ नियंत्रण रेखा को लेकर संघर्षविराम की घोषणा कर दी, जो अभी तक जारी है। चूंकि पाकिस्तान अब भारत को लेकर अपनी जनता का ध्यान भटकाने में सक्षम नहीं रहा, इसलिए वहां आम जन का ध्यान अब घरेलू मुद्दों की ओर जाने लगा है। आंतरिक मोर्चे पर सशस्त्र अलगाववाद एवं गंभीर असंतोष ने भी पाकिस्तान की मुश्किलें और बढ़ा दी हैं।

वक्फ पर फैसले का वक्त, लोकसभा में पेश किए जाने की तैयारी

> वक्फ संशोधन विधेयक को लोकसभा में पेश किए जाने की सरकार की तैयारी पर विपक्षी दलों के अतार्किक रवैये को देखते हुए इस नतीजे पर पहुंचने के अलावा और कोई उपाय नहीं कि उसने अंधविरोध का रास्ता अपना लिया है। सभी इससे परिचित हैं कि मौजूदा वक्फ कानून के चलते वक्फ बोर्ड केवल मनमाने अधिकारों से ही लैस नहीं ह

वक्फ विधेयक पर विपक्ष के दुराग्रह भरे रवैये को देखते हुए सरकार के लिए आवश्यक केवल यह नहीं है कि लोकसभा और फिर राज्यसभा में उस पर व्यापक बहस हो। इसके साथ ही यह भी जरूरी है कि वह वक्फ विधेयक को लेकर हो रहे दुष्प्रचार के खिलाफ भी सक्रिय हो ताकि लोगों को गुमराह कर उन्हें सड़कों पर उतारने वालों के मंसूबों पर पानी फेरा जा सके। वक्फ संशोधन विधेयक को लोकसभा में पेश किए जाने की सरकार की तैयारी पर विपक्षी दलों के अतार्किक रवैये को देखते हुए इस नतीजे पर पहुंचने के अलावा और कोई उपाय नहीं कि उसने अंधविरोध का रास्ता अपना लिया है। सभी इससे परिचित हैं कि मौजूदा वक्फ कानून के चलते वक्फ बोर्ड केवल मनमाने अधिकारों से ही लैस नहीं हैं, बल्कि उनकी भ्रष्ट कार्यप्रणाली के चलते वक्फ संपत्तियों का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग भी हो रहा है और इसी कारण लाखों करोड़ रुपये की उसकी संपत्तियों का कोई लाभ निर्धन मुसलमानों को नहीं मिलता। ऐसे मुस्लिम निर्धन परिवारों के बारे में जानना कठिन है, जिन्हें वक्फ बोर्डों से किसी तरह की कोई सहायता मिली हो। आखिर ऐसे किसी कानून में कोई संशोधन-परिवर्तन क्यों नहीं होना चाहिए, जो अपने मूल उद्देश्यों को प्राप्त करने में नाकाम हो? होना तो यह चाहिए था कि विपक्षी दल ऐसे सुझाव लेकर सामने आते, जिससे वक्फ बोर्डों की कार्यप्रणाली सुधरती, लेकिन उनके नेताओं ने कुल मिलाकर इससे इन्कार ही किया। वक्फ संशोधन विधेयक पर गठित संयुक्त संसदीय समिति में शामिल विपक्षी दलों के सांसदों ने कोई ठोस सुझाव देने के स्थान पर उसमें हंगामा-हल्ला ही अधिक किया। इस समिति का कार्यकाल भी बढ़ाया गया, लेकिन विपक्षी नेता इसी कुतर्क को दोहराते रहे कि वक्फ कानून में किसी संशोधन की आवश्यकता नहीं। वे इसके बाद भी ऐसा कह रहे थे, जब वक्फ बोर्डों की मनमानी कार्यप्रणाली के अनेक चौंकाने वाले समाचार कर्नाटक, केरल, गुजरात, मध्य प्रदेश आदि राज्यों से आ रहे थे। वक्फ संशोधन विधेयक पर विपक्षी दलों का व्यवहार तुष्टीकरण और वोट बैंक की क्षुद्र राजनीति का ही परिचायक है। इसी राजनीति के चलते वे कुछ मुस्लिम नेताओं के साथ इस दुष्प्रचार को हवा देने में लगे हुए हैं कि वक्फ संशोधन विधेयक का उद्देश्य मस्जिदों, मदरसों आदि की जमीन पर कब्जा करना है।

विपक्षी नेता यह देखने से भी साफ इन्कार कर रहे हैं कि किस तरह अनेक मुस्लिम संगठन वक्फ बोर्डों के कामकाज में सुधार की आवश्यकता जता रहे हैं। विपक्ष की ओर से दिया जा रहा यह तर्क हास्यास्पद ही है कि मौजूदा वक्फ कानून में किसी तरह का संशोधन नहीं हो सकता। आखिर जब इस कानून में पहले भी संशोधन होते रहे हैं, तो देश, काल और परिस्थितियों के हिसाब से उसमें फिर से संशोधन क्यों नहीं हो सकते? वक्फ विधेयक पर विपक्ष के दुराग्रह भरे रवैये को देखते हुए सरकार के लिए आवश्यक केवल यह नहीं है कि लोकसभा और फिर राज्यसभा में उस पर व्यापक बहस हो। इसके साथ ही यह भी जरूरी है कि वह वक्फ विधेयक को लेकर हो रहे दुष्प्रचार के खिलाफ भी सक्रिय हो, ताकि लोगों को गुमराह कर उन्हें सड़कों पर उतारने वालों के मंसूबों पर पानी फेरा जा सके।

संसदीय समिति के आदेश के बावजूद अधिकारियों ने नहीं दिया अचल संपत्ति का ब्योरा, उनके कार्यशैली पर सवाल उठना स्वाभाविक

> यह तय है कि ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही के बिना कहीं भी सुशासन की उम्मीद नहीं की जा सकती। अगर कोई अधिकारी आदेश के अनुपालन में लापरवाही बरतता है, तो उसके खिलाफ निस्संदेह कार्रवाई होनी चाहिए। संसद की स्थायी समिति का यह सुझाव उचित है कि संपत्ति का ब्योरा दाखिल करने के लिए एक निगरानी तंत्र स्थापित हो और इसमें एक कार्यबल का गठन किया जाए, जो ब्योरा दाखिल न करने वाले अधिकारियों पर नजर रखे।

ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही के बिना कहीं भी सुशासन की उम्मीद नहीं की जा सकती। अगर कोई अधिकारी आदेश के अनुपालन में लापरवाही बरतता है, तो उसके खिलाफ निस्संदेह कार्रवाई होनी चाहिए। सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों को अपनी संपत्ति का ब्योरा देने के लिए बार-बार कहने पर भी सार्थक नतीजे नहीं निकले हैं, तो इसकी वजह क्या हो सकती है, इसे समझा जा सकता है। दरअसल, कोई बड़ी दंडात्मक कार्रवाई न होने से प्रायः अधिकारी अपनी संपत्ति का ब्योरा देने से कतराते हैं। ऐसे में, संसद की एक स्थायी समिति ने निर्धारित समय सीमा में ब्योरा दाखिल न करने वाले भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों के खिलाफ उचित कार्रवाई का सुझाव देकर स्पष्ट कर दिया है कि उनमें कहीं न कहीं पारदर्शिता की कमी है। हैरत की बात है कि निर्देश के बावजूद वर्ष 2024 में इक्यानबे अधिकारियों ने अपनी संपत्ति का ब्योरा दाखिल किया। जबकि इससे पहले तिहत्तर अधिकारियों ने ही ऐसा किया था। बड़े अधिकारी ब्योरा देने से बच रहे हों, तो जाहिर है कि कहीं न कहीं उनमें ईमानदारी का अभाव है। अगर कोई भ्रष्ट आचरण नहीं किया, तो फिर अपनी

अचल संपत्ति की जानकारी देने से क्यों गुरेज? वे कुछ छिपा रहे हैं, तो कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ है। ऐसे में अधिकारियों की कार्यशैली पर सवाल उठना स्वाभाविक है। कोई दो मत नहीं कि ऐसे अधिकारी ही जवाबदेही से बचने का प्रयास करते हैं। जब ऊपरी स्तर पर जवाबदेही नहीं दिखेगी, तो निचले स्तर पर क्या उम्मीद की जा सकती है। यह तय है कि ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही के बिना कहीं भी सुशासन की उम्मीद नहीं की जा सकती। अगर कोई अधिकारी आदेश के अनुपालन में लापरवाही बरतता है, तो उसके खिलाफ निस्संदेह कार्रवाई होनी चाहिए। संसद की स्थायी समिति का यह सुझाव उचित है कि संपत्ति का ब्योरा दाखिल करने के लिए एक निगरानी तंत्र स्थापित हो और इसमें एक कार्यबल का गठन किया जाए, जो ब्योरा दाखिल न करने वाले अधिकारियों पर नजर रखे। इसके बाद आगे की प्रक्रिया तय होगी। सरकारी तंत्र में जवाबदेही सुनिश्चित होनी ही चाहिए। संसदीय समिति को इसी जवाबदेही की चिंता है। बेहतर होता कि बजाय कार्रवाई के डर से, अधिकारी स्वेच्छा से अपनी संपत्ति की सूचना देते। समिति की सिफारिश के बाद उम्मीद की जा सकती है कि इसके सकारात्मक नतीजे सामने आएं।

बार्सिलोना और रियल मैड्रिड लीजेंड्स के बीच मुंबई में खेले जाने वाले मुकाबले के लिए दोनों टीमों के स्क्वॉड का ऐलान

नई दिल्ली। बार्सिलोना और रियल मैड्रिड लीजेंड्स के बीच मुंबई में 6 अप्रैल को खेले जाने वाले मुकाबले के लिए दोनों टीमों के स्क्वॉड का ऐलान हो गया है। यह पहली बार होगा जब रियल मैड्रिड और बार्सिलोना दोनों के पूर्व खिलाड़ी भारत में एल-क्लासिको मैच में खेलेंगे।

कार्ल्स पुयोल बार्सिलोना लीजेंड्स की कप्तानी करेंगे, जबकि लुइस फिगो को रियल मैड्रिड लीजेंड्स का कप्तान बनाया गया है।

6 अप्रैल को 55,000 दर्शकों की क्षमता वाले डीवाई पाटिल स्टेडियम में दो स्पेनिश क्लब के बीच होने वाला फैंडली मैच भारतीय समयानुसार शाम 7 बजे शुरू होगा।

रियल मैड्रिड लीजेंड्स- लुइस फिगो (कप्तान), पेड्रो कॉन्ट्रेरास, किको कैसिला, फ्रांसिस्को पावोन, फर्नांडो सानज, अगस्टिन गार्सिया, पेड्रो मुनिटिस, रूबेन डे ला रेड, एंटोनियो टोनी डेल मोरल सेगुरा, जॉर्ज जोको ओस्टिज, इवान पेरेज, जीजस एनरिक वेलास्को मुनोज, जोस लुइस कैबरेरा, जुआन जोस ओलाल्ला फर्नांडीज, डेविड बराल टोरेस, क्रिश्चियन करेम्ब्यू, फर्नांडो मोरिएंटेस, पेपे, माइकल ओवेन

बार्सिलोना लीजेंड्स- कार्ल्स पुयोल (कप्तान), जीसस एंजॉय, विटोर बाया, जोफ्रे माटेउ, फर्नांडो नवारो, रॉबर्टो ट्रैशोरस, जेवियर सविओला, फिलिप कोकू, फ्रैंक डी बोअर, जियोवानी सिल्वा, रिवाल्डो, मार्क वैलिएंटे हर्नांडेज, लुडोविक गिउली, रिकार्डो क्वारेस्मा, गैज्का मेंडिएटा, सर्जी बारजुआन, जावी, जोस एडमिलसन गोम्स डी मोरेस, पैट्रिक क्लुइवर्ट।

न्यूजीलैंड ने दूसरा वनडे 84 रन से जीता

पाकिस्तान के खिलाफ वनडे सीरीज जीती, मिचेल ने नाबाद 99 रन बनाए

नई दिल्ली। न्यूजीलैंड ने दूसरे वनडे में पाकिस्तान को 84 रन से हरा दिया। इसी के साथ कीवी टीम ने तीन मैचों की वनडे सीरीज भी जीत ली। टीम सीरीज में 2-0 से आगे है।

हैमिल्टन में बुधवार को खेले गए मैच में पाकिस्तान ने टॉस जीतकर पहले बॉलिंग का फैसला किया। न्यूजीलैंड ने 50 ओवर में 8 विकेट पर 292 रन बनाए। 293 रन के टारगेट का पीछा करने उतरी पाक टीम 41.2 ओवर में 208 रन पर ऑलआउट हो गई। न्यूजीलैंड के मिचेल हे ने नाबाद 99 रन बनाए। उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। सीरीज का तीसरा और आखिरी मुकाबला 5 अप्रैल को माउंट माउंगानुई में खेला जाएगा।

न्यूजीलैंड के लिए 7वें नंबर पर बैटिंग करने उतरे मिचेल हे ने 78 बॉल पर नाबाद 99 रन बनाए। उनके अलावा मुहम्मद अब्बास ने 41, निक केली ने 31 और हेनरी निकोल्स ने 22 रन बनाए। मिचेल ने 4 कैच भी पकड़े। पाकिस्तान के लिए मोहम्मद वसीम और सुफियान मुकीम ने 2-2 विकेट लिए। फहीम अशरफ, अकिफ जावेद और हारिस रऊफ को 1-1 विकेट मिला। सियर्स ने 5 विकेट झटके 293 रन के टारगेट का पीछा करने उतरी पाकिस्तान टीम के लिए फहीम अशरफ और नसीम शाह ने अर्धशतक लगाए। फहीम ने 80 बॉल पर 73 और नसीम ने 44 बॉल पर 51 रन की पारी खेली। लेकिन, दोनों खिलाड़ी अपनी टीम को जीत दिलाने में नाकाम रहें। न्यूजीलैंड के लिए बेन सियर्स ने 5 और जैकब डफी ने 3 विकेट झटके। नाथन स्मिथ और विल ओरूर्क को 1-1 विकेट मिला। न्यूजीलैंड ने पाकिस्तान को पहले वनडे में 73 रन से हराया था। 3 मैचों वाली वनडे सीरीज का पहला मुकाबला शनिवार को न्यूजीलैंड के नापियर में खेला गया। इस मैच में पाकिस्तान ने टॉस जीतकर फिल्डिंग चुनी। कीवी टीम ने 9 विकेट के नुकसान पर 344 रन बनाए थे। 345 रन के टारगेट का पीछा करने उतरी पाकिस्तान टीम 44.1 ओवर में 271 रनों पर सिमट गई।

गोवा से डोमेस्टिक क्रिकेट खेलेंगे यशस्वी जायसवाल, मुंबई एसोसिएशन से एनओसी मांगा

नई दिल्ली। भारतीय ओपनर यशस्वी जायसवाल अगले सीजन में गोवा से डोमेस्टिक क्रिकेट खेलते नजर आएंगे। इतना ही नहीं, उन्हें गोवा का कप्तान बनाया जा सकता है।

23 साल के भारतीय ओपनर यशस्वी ने मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन से नो-ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट मांगा है। एमसीए के एक अधिकारी ने बुधवार को बताया- हां, उनका यह फैसला चौकाने वाला है, लेकिन उसने कुछ न कुछ सोचा होगा। उसने खुद को रिलीज करने की मांग की। एमसीए ने जायसवाल की मांग को स्वीकार्य कर लिया है।

जायसवाल ने मुंबई के लिए आखिरी मुकाबला 23 से 25 जनवरी तक रणजी ट्रॉफी में जम्मू एंड कश्मीर के खिलाफ खेला था। उस मुकाबले में जायसवाल ने 4 और 26 रन बनाए थे।

गोवा क्रिकेट संघ के सचिव शांभा देसाई ने कहा- वे हमारे लिए खेलना चाहते हैं और हम उनका स्वागत करते हैं। यशस्वी को कप्तान बनाए जाने के सवाल पर देसाई ने कहा- हां, यह हो सकता है। उन्होंने भारतीय टीम के लिए खेला है। जब वे नेशनल ड्यूटी में नहीं होंगे और घरेलू क्रिकेट के लिए उपलब्ध होंगे। तो उसने कप्तान बनाया जाएगा।

यशस्वी मुंबई छोड़कर गोवा से खेलने वाले तीसरे क्रिकेट हैं। उनसे पहले अर्जुन तेंदुलकर और सिद्धार्थ लाड गोवा की ओर से खेल चुके हैं। तेंदुलकर-लाड 2022-23 के सीजन में गोवा की ओर से उतरे थे। उसके बाद सिद्धार्थ ने मुंबई में वापसी भी की। वे कूलिंग पीरियड में भी रहे।

भारत के लिए 19 मैच खेल चुके हैं जायसवाल यशस्वी जायसवाल ने जुलाई 2023 में वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट डेब्यू किया था और तभी से वह ओपनर के तौर पर पहली पसंद बने हुए हैं। यशस्वी ने डेब्यू करने के बाद से भारत के लिए 19 मैच खेले हैं और बड़े मंच पर शानदार प्रदर्शन किया है।

पंत की कप्तानी में लखनऊ की दूसरी हार पर मालिक संजीव गोयनका भड़के, फैंस कर रहे सोशल मीडिया पर जमकर ट्रोल

नई दिल्ली। आईपीएल 2025 के 13वें मुकाबले में लखनऊ सुपर जाएंट्स को पंजाब किंग्स के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। पहले बल्लेबाजी करते हुए लखनऊ ने 7 विकेट के नुकसान पर 171 रन का टारगेट सामने रखा। जिसे पंजाब ने 16.2 ओवर में ही हासिल कर लिया।

यह लखनऊ की इस सीजन में तीन मैचों में दूसरी हार है। अपने पहले मैच में टीम को दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था। वहीं दूसरी मैच में टीम ने हैदराबाद को हराया था।

लखनऊ सुपर जाएंट्स की हार के बाद टीम के मालिक संजीव गोयनका गुस्से में नजर आए। उन्होंने ग्राउंड पर कप्तान रिषभ पंत को सबके सामने फटकार लगाई। उसके बाद वे ड्रेसिंग रूम में भी पंत से कुछ बात करते नजर आए।

इस सीजन तीन मैचों में पंत का प्रदर्शन निराशाजनक रहा। पंत 3 पारियों में कुल 17 रन ही बना सके हैं। वे दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ अपने पहले मैच में शून्य पर आउट हो गए थे। वहीं उन्होंने हैदराबाद के खिलाफ 15 और पंजाब के खिलाफ 2 रन बनाए।

रिषभ पंत ढ्ढक्करु इतिहास के सबसे महंगे खिलाड़ी हैं। उन्हें लखनऊ सुपर जाएंट्स ने नवंबर 2024 के मेगा ऑक्शन में 27 करोड़ रुपए में खरीदा था। इतनी रकम मिलने के बावजूद इस सीजन में उनके निराशाजनक प्रदर्शन से फैंस नाखुश हैं। लोगों ने सोशल मीडिया पर पंत को ट्रोल करना शुरू कर दिया है। मीम्स के जरिए उनका मजाक उड़ाया जा रहा है। कोई उन्हें 27 करोड़ का पहलवान कह रहा है तो कोई उन्हें ड्रॉप करने की बात कह रहा है।

लखनऊ का अगला मैच 4 अप्रैल को लखनऊ अपना अगला मुकाबला 4 अप्रैल को मुंबई इंडियंस के खिलाफ खेलेगी। मैच लखनऊ के भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी क्रिकेट स्टेडियम में शाम 7-30 बजे से शुरू होगा। फिलहाल रुस्त्र 2 पॉइंट्स के साथ पॉइंट टेबल में 9वें स्थान पर है।

व्यापार

टाटा कंज्यूमर का शेयर 7 प्रतिशत चढ़ा, गोल्डमैन ने शेयर की रेटिंग को 'बाय' में अपग्रेड किया

नई दिल्ली। गोल्डमैन सैक्स ने टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स के शेयर की रेटिंग को 'बाय' में अपग्रेड किया है। टारगेट को 1,040 से बढ़ाकर 1,200 कर दिया है। इसके बाद आज इसके शेयर में 7त्न की तेजी रही। ये 1,060 रुपए पर बंद हुआ।

गोल्डमैन सैक्स ने रेटिंग अपग्रेड करने के पीछे वित्त वर्ष 25-27 के दौरान टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स के लिए स्ट्रॉन्ग अर्निंग ग्रोथ पोटेंशियल का हवाला दिया।

टाटा कंज्यूमर का तीसरी तिमाही में मुनाफा 281.92 करोड़ रुपए था

टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड का दिसंबर, 2024 को समाप्त तीसरी तिमाही का शुद्ध मुनाफा 6.5त्न घटकर 281.92 करोड़ रुपए था। कंपनी ने एक साल पहले अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में 301.51 करोड़ रुपए का नेट प्रॉफिट कमाया था।

इस तिमाही के दौरान कंपनी की परिचालन आय 16.81 प्रतिशत बढ़कर 4,443.56 करोड़ रुपए हो गई। एक साल पहले की समान अवधि में यह 3,803.92 करोड़ रुपए थी। वहीं दिसंबर तिमाही में टाटा कंज्यूमर का कुल खर्च 22 प्रतिशत बढ़कर 4,087.07 करोड़ रुपए हो गया।

दिसंबर तिमाही में टाटा कंज्यूमर का कुल ब्रांडेड कारोबार 18.3 प्रतिशत बढ़कर 4,026.15 करोड़ रुपए हो गया।

पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में यह 3,403.31 करोड़ रुपए था। टाटा कंज्यूंर के ब्रांडेड कारोबार में चाय, कॉफी, पानी और अन्य विभिन्न वैल्यू एडेड बिजनेस शामिल हैं।

भारत में ब्रांडेड कारोबार से इसका रेवेन्यू 19.31 प्रतिशत बढ़कर 2,833.68 करोड़ रुपए हो गया। अंतरराष्ट्रीय ब्रांडेड कारोबार 15.95 प्रतिशत बढ़कर 1,192.47 करोड़ रुपए हो गया। जबकि, गैर-ब्रांडेड कारोबार से इसका रेवेन्यू 446.12 करोड़ रुपये रहा, जो 8.66 प्रतिशत की वृद्धि है।

टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड की स्थापना 1962 में हुई थी। यह कंपनी पहले ÷टाटा ग्लोबल बेवरेजेस के नाम से जानी जाती थी। टाटा टी ने भारत में चाय के बाजार में अपनी मजबूत पहचान बनाई और बाद में इसे वैश्विक स्तर पर विस्तारित किया गया।

हेल्थ एप में एआई डॉक्टर का ऑप्शन लाएगी एपल यूजर्स को डाइट और नींद से जुड़ी हेल्थ टिप्स मिलेंगी

नई दिल्ली। टेक कंपनी एपल जल्द ही आईफोन के हेल्थ एप में एआई डॉक्टर का ऑप्शन लाने का प्लान कर रही है। इसके जरिए यूजर्स को एप में 24×7 पर्सनलाइज्ड हेल्थ टिप्स दी जाएंगी। नए अपडेट्स हेल्थ एप को पूरी तरह से चेंज करेंगे। इन टिप्स को एपल वॉच, बड्स और अन्य जगहों से इकट्ठा किए गए पर्सनलाइज्ड डेटा के इनपुट पर बनाया जाएगा। इसे मलबेरी प्रोजेक्ट के अंडर डेवलप किया जा रहा है। अपडेट अभी ट्रेनिंग फेज में है, सितंबर तक इसे रोल आउट किया जा सकता है।

हार्ट रेट, ब्लड प्रेशर जैसे डेटा से कस्टमाइज्ड टिप्स मिलेंगी

एआई डॉक्टर यूजर्स की सेहत का डेटा एनालाइज करके सुझाव देगा। एआई आपके डेली रूटीन, हार्ट रेट, ब्लड प्रेशर जैसे डेटा को एनालाइज करेगा। इसके बाद आपको डेटा के आधार पर डाइट, एक्सरसाइज और नींद से जुड़ी सलाह देगा। एपल के डॉक्टर्स आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को ट्रेनिंग दे रहे हैं। जल्द ही बाहर के डॉक्टर्स भी प्रोजेक्ट से जुड़ेंगे।

नए हेल्थ एप में कंपनी एक होस्ट की तरह दिखने वाला एआई मॉडल प्रोवाइड कर सकती है। ये यूजर्स के हेल्थ से जुड़े सवालों के जवाब देगा। इसके लिए कंपनी एक बड़ी डॉक्टर पर्सनैलिटी की तलाश कर रही है।

कैलिफोर्निया में बनाई नई फैसिलिटी

कंपनी ने इस प्रोजेक्ट के लिए कैलिफोर्निया के ओकलैंड में नया सेंटर खोला है। यहां एप के लिए डॉक्टर्स के वीडियो कंटेंट को बनाया जा रहा है। प्रोजेक्ट में कंपनी का मकसद यूजर्स को ऐसी पर्सनलाइज्ड हेल्थ टिप्स देना है, जैसे कोई असली डॉक्टर सलाह देता हो। प्रोजेक्ट को डॉ. सुंबुल देसाई और जेफ विलियम्स लीड कर रहे हैं।

भारत के विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि मार्च में 8 महीने के उच्चतम स्तर पर, पीएमआई के आंकड़े जारी

नई दिल्ली। भारत के विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि दर मार्च में बढ़कर आठ महीने के उच्च स्तर पर पहुंच गई है। बाजार में बेहतर मांग के कारण कारखाना ऑर्डर और उत्पादन बढ़ने से वृद्धि दर में इजाफा हुआ है। बुधवार को जारी पीएमआई के मासिक सर्वेक्षण में यह जानकारी दी गई है।

मौसमी रूप से समायोजित एचएसबीसी इंडिया मैन्युफैक्चरिंग परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआई) मार्च में 58.1 पर पहुंच गया। यह आंकड़ा फरवरी में 56.3 था। फरवरी में, नए ऑर्डरों और उत्पादन में धीमी वृद्धि के बीच भारत का विनिर्माण पीएमआई 14 महीने के निचले स्तर पर आ गया था।

पीएमआई की भाषा में, 50 से ऊपर का अंक विस्तार को दर्शाता है, जबकि 50 से नीचे का अंक संकुचन को दर्शाता है। आंकड़ों के अनुसार, भारत में विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि ने फरवरी में खोई हुई जमीन वापस हासिल कर ली है।

मार्च में कुल बिक्री में जुलाई 2024 के बाद से सबसे अधिक वृद्धि

सर्वेक्षण के अनुसार, मार्च में कुल बिक्री में जुलाई 2024 के बाद से सबसे अधिक वृद्धि देखी गई। इस दौरान कंपनियों में सकारात्मक ग्राहक रुचि, अनुकूल मांग की स्थिति और सफल मार्केटिंग दिखी।

2024-25 वित्तीय वर्ष के अंत में फर्मों ने उत्पादन की मात्रा बढ़ा दी। इससे विनिर्माण की वृद्धि दर आठ महीने के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। हालांकि मार्च में नए निर्यात ऑर्डर में जोरदार वृद्धि जारी रही, लेकिन वृद्धि की गति तीन महीने के निचले स्तर पर आ गई। पैनलिस्टों ने अंतरराष्ट्रीय बिक्री के मामले में एशिया, यूरोप और मध्य पूर्व में हुई वृद्धि का हवाला दिया।

बीएसएनएल ने जियो से 1,757 करोड़ रुपए नहीं वसूले

कैग ने कहा - टावर जैसे बुनियादी ढांचे का इस्तेमाल करने का पैसा नहीं लिया

नई दिल्ली। भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के अनुसार सार्वजनिक बीएसएनएल ने टावर जैसे बुनियादी ढांचे को साझा करने पर अपने समझौते के अनुसार जियो से 10 साल कोई वसूली नहीं की। जिससे सरकार को 1,757.56 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। ये वसूली मई 2014 से नहीं की गई है।

कैग ने बयान में कहा कि बीएसएनएल को 38.36 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ, क्योंकि वह दूरसंचार बुनियादी ढांचा प्रदाताओं को दिए जाने वाले राजस्व हिस्से से लाइसेंस शुल्क का हिस्सा काटने में विफल रही।

29 करोड़ रुपए तस्ञ्ज का भी नुकसान कैग ने कहा है कि बीएसएनएल मेसर्स रिलायंस जियो इन्फोकॉम लिमिटेड के साथ मास्टर सर्विस एग्रीमेंट को लागू करने में विफल रही और बीएसएनएल के साझा टावर जैसे बुनियादी ढांचे का अतिरिक्त इस्तेमाल करने के लिए बिल नहीं दिया।

इसके कारण मई 2014 से मार्च 2024 के बीच सरकारी खजाने को 1,757.76 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। कैग ने यह भी पाया कि क्च्स्हरु ने इंफ्रा शेयरिंग चार्ज का बिल भी कम बनाया। इससे तस्ञ्ज समेत 29 करोड़ रुपए के रेवेन्यू का नुकसान हुआ।

जियो के देश में सबसे ज्यादा 46.51 करोड़ यूजर ट्राई की तरफ से दिसंबर महीने का जो डेटा जारी किया गया है उसके मुताबिक देश में जियो के 46.51 करोड़ यूजर हैं। वहीं एयरटेल के 38.53 करोड़, वोडाफोन आइडिया के 20.72 करोड़ और क्च्स्हरु के 9.17 करोड़ यूजर हैं।

मुख्यमंत्री ने ली सहकारिता विभाग की समीक्षा बैठक

किसानों को सशक्त एवं समृद्ध बनाए जाने में सहकार आन्दोलन की महत्वपूर्ण भूमिका - मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार के अन्त्योदय के संकल्प को साकार करने में सहकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका है। सहकार से समृद्धि की भावना के साथ समाज के कमजोर वर्ग को सशक्त बनाना राज्य सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि हमारे गांवों को समृद्ध और खुशहाल बनाने के लिए राज्य सरकार प्रदेश की प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर ग्राम सेवा सहकारी समितियों की स्थापना कर रही है।

शर्मा मुख्यमंत्री निवास पर सहकारिता विभाग की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रदेश के किसानों को सशक्त एवं समृद्ध बनाए जाने में सहकार आन्दोलन की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस हेतु राज्य सरकार राजस्थान सहकारिता अधिनियम 2001 को वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रासंगिक बनाने के लिए नवीन कॉपरेटिव कोड लेकर आएगी। इसके लिए गठित एक समिति ने सहकारी आंदोलन में अग्रणी महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश और केरल जैसे राज्यों का दौरा कर वहां के सहकारी कानूनों का व्यवहारिक अध्ययन भी किया है। शर्मा ने कहा कि किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से राज्य सरकार ने बजट 2024-25 की अनुपालना में 23 हजार करोड़ रुपये से अधिक का ब्याज मुक्त अल्पकालीन फसली ऋण वितरित किया है। इससे राज्य के 35 लाख से अधिक किसान लाभान्वित हुए हैं। बजट 2025-26 में भी 25 हजार करोड़ रुपये के ऋण वितरण की घोषणा की गई है।

शर्मा ने सहकारिता विभाग से संबंधित बजट घोषणाओं की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को इनका समयबद्ध रूप से प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सहकारी संस्थाओं के भण्डारण की क्षमता में वृद्धि करने के लिए 150 ग्राम सेवा सहकारी समितियों में 100 से 500 मेट्रिक टन क्षमता के गोदामों का निर्माण कराया जा रहा है। इन गोदामों में कृषि उत्पादों का योजनाबद्ध ढ़ंग से भण्डारण सुनिश्चित हो, ताकि इनका अधिकतम उपयोग लिया जा सके। श्री शर्मा ने कहा कि राज्य के 1 लाख गोपालक परिवारों को गोपाल क्रेडिट कार्ड के तहत 1 लाख रुपये तक का ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। बजट 2025-26 में इन परिवारों की संख्या बढ़ाकर 2 लाख 50 हजार कर दी गई है। साथ ही, इस बजट में पीएम किसान सम्मान निधि के तहत दी जाने वाली राशि को भी बढ़ाकर आगामी वर्ष से 9 हजार प्रतिवर्ष करने की घोषणा की गई है।

खरीफ-2024 में दलहन और तिलहन की 4700 करोड़ रुपये से अधिक की खरीद– मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान राज्य सहकारी क्रय विक्रय संघ लि0 की ओर से खरीफ सीजन 2024 में दलहन और तिलहन जैसे मूंग, उड़द, मूंगफली, सोयाबीन की 4 हजार 700 करोड़ रुपये से अधिक की खरीद की गई, जिसमें मूंगफली की 4 लाख 38 हजार 800 मेट्रिक टन से भी अधिक की रिकॉर्ड खरीद की गई। साथ ही, रबी सीजन 2025-26 के लिए सरसों और चने की खरीद हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ हो चुका है। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि पर्याप्त प्रचार-प्रसार कर किसानों को केन्द्र और राज्य सरकार की योजनाओं की जानकारी दी जाए। पात्र किसानों को सहकारी बैंकों के द्वारा किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराया जाए। यह भी सुनिश्चित किया जाए कि किसानों और ग्रामीणों के अधिक से अधिक बचत खाते सहकारी बैंकों में खुलें।

बैठक में सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक, मुख्य सचिव सुधांश पंत, अतिरिक्त मुख्य सचिव वित्त अखिल अरोड़ा, अतिरिक्त मुख्य सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) शिखर अग्रवाल, प्रमुख सचिव (मुख्यमंत्री) आलोक गुप्ता, शासन सचिव पशुपालन समित शर्मा, प्रबंध निदेशक राजफेड टीकम चन्द बोहरा, प्रबंध निदेशक आरएसएलडीबी जितेन्द्र प्रसाद सहित संबंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

जयपुर में इस बार आईपीएल देखना हुआ महंगा: टिकटों में 3000 रुपए तक की बढ़ोतरी

स्टूडेंट्स के लिए 500 रुपए में टिकट

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। जयपुर में इस बार आईपीएल के मैच देखना महंगा हो गया है। राजस्थान रॉयल्स ने अपनी टिकटों की रेट में 3000 रुपए तक की बढ़ोतरी की है। वहीं स्टूडेंट्स को राहत दी है।

जयपुर में आईपीएल के 5 मैच होंगे। पहले मैच के लिए ऑफलाइन टिकटों की बिक्री 5 अप्रैल से शुरू हो जाएगी। ये टिकटें राजस्थान रॉयल्स मैनेजमेंट द्वारा 13 अप्रैल को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और राजस्थान रॉयल्स के बीच होने जा रहे पहले मुकाबले के लिए काउंटर पर बेचीं जाएंगी। इसमें स्टूडेंट्स के लिए आईडी दिखाने पर 1000 रुपए का डिस्काउंट दिया जाएगा। उन्हें 1500 रुपए का टिकट महज 500 रुपए में मिलेगा। वहीं अन्य कैटेगरी में टिकटों की दरें डिमांड के अनुसार बढ़ाई जाएंगी। राजस्थान रॉयल्स मैनेजमेंट ने हर मैच में टिकटों प्राइज अलग-अलग होने के संकेत दिए हैं।

ऑर्गनाइजिंग कमेटी का आज गठन

राजस्थान खेल विभाग के सचिव नीरज कुमार पवन ने बताया कि जयपुर में होने जा रहे इंडियन प्रीमियर लीग के मुकाबलों के लिए 5 अप्रैल से ऑफलाइन टिकट की सेल शुरू कर दी जाएगी। जहां स्टूडेंट्स भी अपना आईडी कार्ड दिखाकर स्टूडेंट टिकट ले सकेंगे।

जयपुर में इस बार पिछले सीजन के मुकाबले इस सीजन में आईपीएल मैच देखना महंगा हो गया है। रॉयल्स ने अपने अलग-अलग कैटेगरी के टिकट की रेट 3 हजार रुपए तक बढ़ाई है। हालांकि, नया सीजन स्टूडेंट्स के लिए फायदेमंद होगा। क्योंकि उनकी कैटेगरी में 1500 वाले टिकट केवल 500 रुपए में मिलेंगे।

इस बार आईपीएल मैचों के लिए टिकट के रेट 1500 से लेकर 20 हजार रुपए तक तय किए गए हैं। पिछली बार सबसे सस्ता टिकट 1000 रुपए में था। इस बार इसका रेट 500 रुपए बढ़ा दिया गया है। इसके साथ ही अलग-अलग स्टैंड और लाउंज की रेट में 3000 हजार रुपए तक की बढ़ोतरी की गई है। रॉयल बॉक्स की रेट जो पिछली बार 6000 रुपए निर्धारित की गई थी। उसे इस बार बढ़ाकर 9000 रुपए किया गया है।

1500 वाली टिकट 500 रुपए में मिलेगी

स्टूडेंट्स के लिए 1500 वाली टिकट की कीमत 500 रुपए रखी गई है। ये टिकट सिर्फ ऑफलाइन मिलेगी। स्टूडेंट को अपना आईडी कार्ड दिखाकर ले सकेंगे। एक स्टूडेंट आईडी कार्ड से सिर्फ एक टिकट ही ले सकेंगे। इसके साथ ही मैच की टिकटें ऑनलाइन बुक कर सकते हैं। हालांकि, राजस्थान रॉयल्स द्वारा बीकानेर रूफटॉप, सांभर लाउंज, अजमेर रूफटॉप, नॉर्थ ईस्ट लॉन, नॉर्थ वेस्ट लॉन, ईस्ट लॉन 1, ईस्ट लॉन 2 की रेट लिस्ट फिलहाल जारी नहीं की गई है। राजस्थान रॉयल्स प्रबंधन द्वारा बताया गया है कि जयपुर में आयोजित होने जा रहे 5 मैच के दौरान टिकटों की रेट में मैच की डिमांड के अनुसार बढ़ोतरी हो सकती है। इसके लिए स्टेडियम के पास और अन्य जगहों पर काउंटर लगाए जाएंगे।

राजस्थान में 12वीं पास के लिए 13,252 पदों पर वैकेंसी: 1 मई तक कर सकेंगे अप्लाई

जून में होगी परीक्षा और नवंबर में आएगा रिजल्ट

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। राजस्थान में नौकरी की तलाश कर रहे युवाओं के लिए अच्छी खबर है। राजस्थान सरकार ने नेशनल स्वास्थ्य मिशन और राजस्थान मेडिकल एजुकेशन सोसायटी के 28 पदों पर 13 हजार 252 वैकेंसी निकाली है। इसके लिए 12वीं पास से लेकर ग्रेजुएशन कर चुके उम्मीदवार राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड की वेबसाइट पर जाकर आज से 1 मई तक ऑनलाइन अप्लाई कर सकते हैं।

इसके बाद कंप्यूटर बेस्ड टेस्ट के आधार पर उम्मीदवारों का सिलेक्शन किया जाएगा। बता दें कि राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड द्वारा आयोजित की जा रही यह सभी भर्तियां संविदा आधारित होंगी। जिसकी समय अवधि को सरकार द्वारा बढ़ाया या कम किया जा सकता है।

जून में होगी परीक्षा, नवंबर में आएगा रिजल्ट

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड द्वारा निकाली गई इन भर्ती परीक्षाओं में 1 मई तक आवेदन की प्रक्रिया पूरी होने के बाद जून में भर्ती परीक्षा का आयोजन किया जाएगा। इसके बाद 2 जून से 12 जून तक अलग-अलग भर्ती परीक्षाओं का आयोजन किया जाएगा। इसके बाद बोर्ड द्वारा जून और जुलाई में ही भर्ती परीक्षा की आंसर-की जारी कर अभ्यर्थियों से आपत्ति मांगी जाएगी। इसके बाद 13 नवंबर तक सभी भर्तियों का फाइनल रिजल्ट जारी किया जाएगा।

कंप्यूटर, टैबलेट आधारित टेस्ट होगा

अलग-अलग कैटेगरी में होने वाली इन भर्ती परीक्षा का टेस्ट कंप्यूटर या टैबलेट आधारित होगा। इसमें से दोगुना अभ्यर्थियों को डॉक्युमेंट वेरिफिकेशन के लिए बुलाया जाएगा। इसके आधार पर उम्मीदवारों का सिलेक्शन किया जाएगा। भर्ती प्रक्रिया में शामिल होने के लिए उम्मीदवार की उम्र 18 से 40 साल होनी जरूरी है। वहीं, आरक्षित श्रेणी को 40 साल से ज्यादा का होने पर भी भर्ती प्रक्रिया में शामिल होने की छूट दी जाएगी।

राजस्थान के 15 जिलों में आज बारिश की संभावना: 5 अप्रैल को बदलेगा मौसम

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। राजस्थान में पश्चिमी हवा चलने के साथ ही तापमान बढ़ने लगा है। कल राज्य में दिन का अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। पश्चिमी राजस्थान के जिलों में गर्मी तेज होने लगी है। वहीं, पूर्वी राजस्थान में भी तापमान बढ़ने से सुबह-शाम की ठंडक कम होने लगी है। मौसम विज्ञान केन्द्र जयपुर ने राज्य में 3 अप्रैल को पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय होने से 15 जिलों में आंधी चलने और हल्की बारिश की संभावना जताई है। वहीं, 5 अप्रैल को पश्चिमी जिलों में हीटवेव चलने का येलो अलर्ट जारी किया है।

शेखावाटी के सीकर, पिलानी, चूरू, फतेहपुर में ठंडक बरकरार है। फतेहपुर में कल न्यूनतम तापमान 11 डिग्री सेल्सियस, बारां में 11.5, सीकर में 12, पिलानी, भीलवाड़ा में 13.8, चित्तौड़गढ़ में 14.3, चूरू में 14.6 और हनुमानगढ़ में 11.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ।

सीएम-डिप्टी सीएम को धमकी के बाद सेंट्रल-जेलों से हटाई आरएसी: कैदियों से मिलीभगत बाद एक्शन

गेट के बाहर बैठेंगे, कैदियों को नहीं करेंगे सर्च

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। प्रदेश की सेंट्रल जेल से सीएम और डिप्टी सीएम को धमकियां मिलने के बाद प्रदेश की जेलों की सिक्योरिटी को लेकर बड़ा बदलाव किया है। जेल की सुरक्षा और चेकिंग के लिए तैनात आरएसी टीम को जेल से बाहर कर दिया है। अब आरएसी टीम केवल जेल के मैन गेट पर ही तैनात रहेगी।

दरअसल, हाल ही में सीएम भजनलाल शर्मा को बीकानेर सेंट्रल जेल और डिप्टी सीएम प्रेमचंद बैरवा को जयपुर सेंट्रल जेल से धमकी मिली थी। सीएम को अब तक चार बार जेल से धमकी मिल चुकी है। इसके बाद डीजी जेल गोविंद गुप्ता की ओर से मामले की जांच की तो सामने आया कि आरएएसी की टीम जेल प्रहरियों के साथ मिलकर कैदियों की भी जांच करती है। ऐसे में कैदी, जेल प्रहरी और आरएसी टीम में तैनात जवान मिलकर अंदर तक सामान पहुंचा रहे है। इसके बाद डीजी ने आदेश जारी कर मैन गेट के अलावा जेल में बैरिकेट तक तैनात आरएसी की टीम को हटाने के लिए कहा है।

सीएम औ डिप्टी सीएम को धमकी मिलने के बाद जेल विभाग के अधिकारियों की मीटिंग हुई। इसमें सामने आया कि आरएएसी टीम जिनकी तैनाती मुख्य गेट तक थी वह जेल सिक्योरिटी के तीसरे बैरक तक पहुंच गई। यहां आने वाले कैदियों के सामान, कैदियों और उनके परिजनों की जांच भी जेल प्रहरी की जगह ये करने लगे।

जेल अधिकारियों का मानना था कि जेल बैरक के गेट तक आरएएसी के जवानों की जांच के बाद जेल प्रहरी और कैदियों की मिलीभगत बढ़ गई। कैदी, जेल प्रहरी से मिलीभगत करता है और इसके बाद जेल प्रहरी आरएएसी के जवान से, क्योंकि कैदियों के लिए आने वाला सामान भी वहीं जांचने लगा था। इसमें जेल अधिकारियों ने बताया कि कैदी जेल प्रहरी और आरएएसी जवान की कड़ी को तोड़ने के लिए आरएसी टीम को जेल के बाहर मुख्य गेट पर तैनात कर दिया जाना चाहिए, जिससे ये सिस्टम को रोका जा सके। इस मीटिंग के बाद प्रदेश की सेंट्रल जेल और हाई सिक्योरिटी जेल में इस व्यवस्था को बदल दिया गया है।

इस मामले को लेकर डीजी जेल का कहना है कि जो नियमों में है वह कर रहे है। जो नियमों में नहीं है और वह जेल में हो रहा है तो उसे सुधारने की जिम्मेदारी हमारी है। उन्होंने बताया कि जेल में सालों दशकों से जेल प्रहरी और आरएएसी की टीम ही जेल में जाने वाले सामन,कैदी की जांच किया करते थे। लेकिन अब केवल जेल विभाग के प्रहरी ही जेल में जांच का काम करेंगे। यहां वह जेल के लिए आने वाले सामान की जांच करेगी। कैदी की जांच नहीं करेगी लेकिन उनका सामान जरूर चेक करेगी। जांच करने वाली आरएसी की टीम के लिए बाहर टेंट लगा दिया गया है। उन्होंने बताया कि इसके लिए जेल के मेन गेट पर गुमटी लगा दी जाएगी जो केवल आरएएसी जवानों के लिए होगी।

एक आरएसी कंपनी रहती है तैनात, अब जेल प्रहरी की होगी जिम्मेदारी

प्रदेश की सभी सेंट्रल और हाई सिक्योरिटी जेल में आरएएसी की एक टीम तैनात है। एक टीम में 60 जवान होते है। दरअसल, जेल में जाने के लिए तीन लेयर सिक्योरिटी होती है। पहला मैन गेट, जहां आरएसी के जवान तैनात रहते है। इसके बाद जेल में एंट्री के लिए लोहे का गेट होता है। जहां कैदियों और उनके सामान की जांच की जाती है। इसके बाद तीसरा गेट होता है, जो बैरक से पहले होता है। नई व्यवस्था के तहत आरएएसी के जवान अब मेन गेट पर ही तैनात रहेंगे। जेल में जाने वाले कैदियों, उनके परिजनों और सामान के चैकिंग की जिम्मेदारी केवल जेल प्रहरियों की होगी। मेन गेट पर आएएसी के जवान जेल के लिए आने-जाने वाले सामान और केवल कैदियों के सामान की ही जांच करेंगे।

बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन में लापरवाही या देरी बर्दाश्त नहीं : बचनेश अग्रवाल

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग के निदेशक एवं विशिष्ट शासन सचिव बचनेश अग्रवाल ने कहा कि बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन में किसी भी तरह की लापरवाही या देरी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता बजट घोषणाओं को धरातल पर उतारने की है। उन्होंने कहा कि अधिकारीगण माइक्रो प्लानिंग कर घोषणाओं को मूर्त रूप देने में जुट जाएं।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत के निर्देश पर अग्रवाल ने बुधवार को सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के मुख्यालय अम्बेडकर भवन स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल से जिला स्तरीय अधिकारियों से वीसी (वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग) के जरिए बैठक ली और आवश्यक दिशा–निर्देश दिए। इस दौरान निदेशालय सहित संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे। इस दौरान उन्होंने योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन और संचालन के लिए अधिकारियों की प्रशंसा भी की तो कम प्रदर्शन करने वाले जिलों को मोटिवेट भी किया। उन्होंने कहा घोषणाओं की उच्च स्तर पर निरंतर समीक्षा की जा रही है, ऐसे में अधिकारीगण किसी भी स्तर पर कोर–कसर नहीं छोडें।

अग्रवाल ने कहा किया बजट 2025-26 घोषणाओं की क्रियान्विति से पूर्व पिछले वर्ष की जो भी बजट घोषणाएं अपूर्ण हैं, उन्हें सबसे पहले पूरी करने पर जोर दें। उन्होंने बजट 2025-26 की घोषणाओं के अनुसार और आवश्यकता के अनुरूप भूमि चिन्हीकरण एवं आवंटन से जुड़ी गतिविधियों को तय समयावधि में पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि योजनाओं के संचालन में समयबद्धता, गुणवत्ता और उपयोगिता पर विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। उन्होंने बजट घोषणाओं के कार्यों को रफ्तार देने की जरूरत पर भी जोर दिया।

बैठक के दौरान बाबा साहेब अंबेडकर आदर्श ग्राम योजना, स्वयंसिद्धा आश्रम, देवनारायण आवासीय योजना, कामकाजी महिला आवास योजना, बेघर वृद्धजन एवं असहाय निराश्रित व्यक्तियों के पुनर्वास हेतु स्थापित किया जा रहे स्वयं सिद्ध आश्रमों, विमुक्त घुमंतू और अर्ध घुमंतु समुदायों के सशक्तिकरण एवं उत्थान की दृष्टि से दादू दयाल घुमंतू सशक्तिकरण योजना प्रारंभ करने, प्रदेश के एससी-एसटी, ओबीसी, ईडब्ल्यूएस, सफाई कर्मचारी, दिव्यांगजन आदि को आर्थिक संबल प्रदान करने की दृष्टि से अनुजा, ओबीसी एवं अल्पसंख्यक निगमों द्वारा दिए गए ऋणों के क्रम में वन टाइम सेटलमेंट स्कीम लाने सहित अन्य विभिन्न विषयों पर विस्तार से समीक्षा की गई।

इस दौरान उन्होंने मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना से जुड़े आवेदनों की जांच और सत्यापन कार्य आगामी 3 दिवसों में पूर्ण करने के भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यह राज्य सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं में से एक है। उन्होंने सामाजिक सुरक्षा पेंशन के सत्यापन से शेष मामलों में अधिकारियों को शत–प्रतिशत सत्यापन सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अधिकारी ग्राम पंचायत स्तर पर नवाचार करते हुए ओटीपी और एप के जरिए वेरिफिकेशन करवाएं। उन्होंने 7 और 8 अप्रेल को देहरादून में होने वाले चिंतन शिविर तथा 14 अप्रेल को अंबेडकर जयंती पर होने वाले कार्यक्रमों से जुड़ी तैयारियों को भी पूर्ण करने के निर्देश दिए।

बैठक में अतिरिक्त निदेशक केसरलाल मीणा, अतिरिक्त निदेशक रीना शर्मा, अतिरिक्त निदेशक अशोक जांगिड़, अतिरिक्त निदेशक हरिसिंह मीणा, अतिरिक्त निदेशक अरविंद सैनी सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

जयपुर में सीरियल ब्लास्ट की साजिश रचने वाला आरोपी रतलाम में गिरफ्तार, 5 लाख का इनाम था

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। राजस्थान के जयपुर को सीरियल ब्लास्ट से दहलाने की साजिश रचने वाले आखिरी फरार आरोपी फिरोज उर्फ सब्जी की गिरफ्तारी एक बड़ी सफलता मानी जाएगी। रतलाम पुलिस और राष्ट्रीय जांच एजेंसी की सतर्कता ने आतंकवादी संगठनों की मंशा पर करारा प्रहार किया है। इस गिरफ्तारी से न केवल कानून-व्यवस्था को मजबूती मिली है, बल्कि यह भी स्पष्ट हुआ है कि आतंक के खिलाफ सरकार और सुरक्षा एजेंसियां पूरी मुस्तैदी से कार्य कर रही हैं।

फिरोज उर्फ सब्जी, जिसे अल-सुफा संगठन का खजांची माना जाता है, लंबे समय से फरार था और उस पर एनआईए द्वारा 5 लाख रुपये का इनाम घोषित किया गया था। यह गिरफ्तारी पुलिस और खुफिया एजेंसियों के मजबूत नेटवर्क और अत्याधुनिक जांच तकनीकों का परिणाम है। जिस तरह से रतलाम पुलिस ने कई स्तरों पर ऑपरेशन को अंजाम दिया और संभावित ठिकानों की निगरानी करते हुए आरोपी को धर दबोचा, वह अन्य राज्यों के लिए भी एक मिसाल है।

फिरोज की गिरफ्तारी भारत की सुरक्षा एजेंसियों की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और यह दर्शाती है कि देश में आतंकवाद को किसी भी स्तर पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। लेकिन हमें यह भी याद रखना होगा कि यह लड़ाई केवल एक गिरफ्तारी से नहीं जीती जा सकती। आतंकवाद की जड़ों को उखाड़ फेंकने के लिए हमें सामाजिक, आर्थिक और वैचारिक मोर्चे पर भी संगठित प्रयास करने होंगे। जब तक आतंक को समर्थन देने वाली शक्तियों का समूल नाश नहीं होता, तब तक यह खतरा पूरी तरह समाप्त नहीं होगा।

पत्रकारों का राष्ट्रीय अधिवेशन 26- 27 अप्रैल को

जयपुर। एसोशिएशन ऑफ़ स्माल एंड मीडियम न्यूजपेपर्स ऑफ़ इंडिया (असमनी) का 31वां राष्ट्रीय अधिवेशन 26 एवं 27 अप्रैल को जयपुर में आयोजित किया जाएगा। असमनी की राजस्थान इकाई के अध्यक्ष एवं जयपुर पल्स के संपादक गोपाल गुप्ता ने विज्ञप्ति में बताया कि दो दिवसीय अधिवेशन में विभिन्न राज्यों से लगभग 350 प्रतिनिधि भाग लेंगे । यहां उल्लेखनीय है कि वर्ष 1986 में गठित संगठन का पहला अधिवेशन भी इसी वर्ष जयपुर में ही आयोजित किया गया था। इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका कलम कुंभ में राज्यों की पत्रकारिता का इतिहास संकलित किया जाएगा।स्मारिका के मुख्य पृष्ठ पर राज्य के प्रमुख दुर्गों सहित जयपुर के आराध्य देव गोविंद देव के चित्र को संजोया गया है। साथ ही अग्रपूज्य मोती डूंगरी गणेश जी के चित्र एवं आलेख सहित स्मारिका की शुरुआत होगी।

कोल्हू के बैल हैं हम

एसके मंगल

तेली के कोल्हू के बैल अजीब कहानी है। वह सारे दिन तेल निकालने के लिए चलता है और शाम को जब उसे रोका जाता है तो उसे लगता है कि उसने पूरे दिन बहुत काम किया है। यही स्थिति हमारी है। हम परिवार में कोल्हू के बैल की तरह लगे हैं और जिंदगी की शाम को जब हम जाने की तैयारी में होते हैं तो लगता है हमने बहुत कुछ किया है, मगर एक दम खाली। निराश, एकदम हताश होकर हम दुनिया छोड़ जाते हैं। परिवार के लिए चक्कर लगाते-लगाते अपने विकास के लिए वक्त निकालना सचमुच चुनौती बन जाता है। ज्यादातर लोग इसी उधेड़बुन में रहते हैं कि जो समय और ऊर्जा बची है, उसे कहां लगाएं–अपनों की खुशी में या अपनी तरक्की में। शायद इसका जवाब छोटे -छोटे कदमों में छुपा हो। जैसे, दिन में 15-20 मिनट भी अपने लिए निकाल लिए जाएं–कुछ पढ़ने, सीखने या बस अपने विचारों को सुलझाने के लिए। क्या आपको लगता है कि ऐसा कोई छोटा बदलाव आपकी दिनचर्या में फिट हो सकता है? या फिर कोई खास चीज है जो आप अपने विकास के लिए करना चाहते हैं, मगर वक्त की कमी आड़े आती है? परिवार के लिए चक्कर लगाना एक ऐसी सच्चाई है जो बहुतों की जिंदगी में दिखती है। ये मेहनत, त्याग और प्यार का मिश्रण है–जैसे कोल्हू का बैल तेल निकालने के लिए चलता है, वैसे हम अपनों के लिए दिन-रात एक कर देते हैं। लेकिन कभी-कभी ये भी लगने लगता है कि इस दौड़ में खुद के लिए वक्त या सांस लेने की फुर्सत ही नहीं बचती। क्या आपको कभी ऐसा लगता है कि परिवार के साथ-साथ अपने लिए भी कुछ करने का मौका मिले? या फिर परिवार ही आपकी वो ताकत है जो इस चक्कर को चलाए रखती है?आपका सवाल जिंदगी के एक गहरे पहलू को छूता है। कोल्हू के बैल की तरह दिनचर्या में बंधी जिंदगी का अहसास कई बार हमें ऐसा ही लगने लगता है–एक चक्कर, जो बस चलता रहता है, बिना किसी बड़े बदलाव या ठहराव के। शायद ये सच है कि बैल की तरह हमारी मेहनत भी कहीं न कहीं कुछ न कुछ तो पैदा करती है, भले ही वो तुरंत नजर न आए।क्या आपको लगता है कि आपकी जिंदगी में कुछ ऐसा है जो इस चक्कर को तोड़ सके या उसे नया मतलब दे सके? कोई छोटी खुशी, सपना, या बदलाव जो इसे सिर्फ एक रुटीन से ज्यादा बना दे?आपकी बात में एक गहरी थकान और मजबूरी झलकती है। ÷सुबह से शाम तक चक्कर लगाने वाले कोलू के बल÷ बनने की भावना शायद उस रुटीन या मेहनत को बयां करती है, जो बिना रुके चलती रहती है, जैसे कोल्हू में बैल दिनभर चलते हैं।

जिला कलक्टर ने इन्द्रगढ़ में लिया बीजासन माता मेला व्यवस्थाओं का जायजा

दर्शनार्थियों के लिए सभी आवश्यक प्रबंध सुनिश्चित करने के दिए निर्देश

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बूंदी। जिला कलक्टर अक्षय गोदारा ने मंगलवार को इन्द्रगढ़ में आयोजित हो रहे बीजासन माता मेले को लेकर की गई व्यवस्थाओं का जायजा लिया और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जिला कलक्टर ने निर्देश दिए कि दर्शन के लिए आने वाले यात्रियों को किसी तरह की परेशानी नहीं हो, इसका विशेष ध्यान रखा जाए। मेला स्थल पर पार्किंग व्यवस्था सुचारू रहें और साफ-सफाई व्यवस्था को बेहतर रखा जाएं। उन्होंने सार्वजनिक निर्माण व वन विभाग के अधिकारियों को सड़क के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस दौरान आमजन द्वारा मोबाइल नेटवर्क नहीं आने की समस्या से जिला कलक्टर को अवगत कराया गया, इस पर उन्होंने समस्या का समाधान करने का भरोसा दिलाया। उन्होंने निर्देश दिए कि मंदिर क्षेत्र में सीसीटीवी कैमरों से व्यवस्थाओं की निगरानी रखी जाए। इसके लिए कंट्रोल रूम में लगाए गए कार्मिक पुरी मुस्तैदी के साथ नजर रखें। यात्रियों की सुरक्षा के लिए लगाया गया पुलिस जाब्ता पुरी सतर्कता बरतें। इसके अलावा कंट्रोल रूम में मौजूद मेडिकल टीम सभी आवश्यक व्यवस्था के साथ मुस्तैद रहें। यात्रियों के लिए पेयजल आदि के समुचित प्रबंध रहे। बीजासन मेले का जायजा लेने के बाद जिला कलक्टर ने लाखेरी के रामधन चौराहे पर ट्रैफिक व्यवस्था को सुचारू रखने के संबंध में संबंधित अधिकारी को भी आवश्यक निर्देश दिए। इस दौरान पुलिस अधीक्षक ने सम्बंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि यात्रियों की सुरक्षा के दृष्टिगत मेला स्थल व आसपास के क्षेत्र में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम रहें। यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाए रखा जाए, ताकि यात्रियों को किसी तरह की परेशानी नहीं हो। निरीक्षण के दौरान उपखंड अधिकारी लाखेरी भावना सिंह, पुलिस उपाधीक्षक नरेन्द्र नागर तहसीलदार इन्द्रगढ़ राजेन्द्र मीणा सहित मंदिर समिति के पदाधिकारी मौजूद रहे।

जैतसागर नाले की निर्माण गति बढ़ाने के लिए अब दिन-रात शुरू होगा कार्य

जिला कलक्टर ने किया शहर में संचालित विकास कार्यों का निरीक्षण, पेच वर्क में गुणवत्ता नहीं मिलने पर संवेदक का भुगतान रोकने के निर्देश

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बूंदी। जिला कलक्टर अक्षय गोदारा ने बुधवार को शहर में संचालित सीवरेज, जैतसागर नाला निर्माण, खेल संकुल के मल्टी परपज हॉल, नवल सागर झील पर पर्यटन विकास आदि कार्यों की प्रगति का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने कार्यों में गुणवत्ता बनाए रखने और निर्धारित समयावधि में कार्यों को पूरा करने के लिए भी संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

पेचवर्क में गुणवत्ता नहीं, भुगतान रोकने के निर्देश

जिला कलक्टर ने चित्तौड़ रोड़ चौराहे और सिलोर रोड़ क्षेत्र में सीवरेज कार्य के बाद किए जा रहे सड़कों के पेच वर्क में गुणवत्ता नहीं मिलने पर नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि सड़क के पेच वर्क में खानापूर्ति नहीं की जाए और निर्धारित मापदण्डों के अनुसार गुणवत्ता के साथ कार्य करवाया जाए। उन्होंने नगर परिषद के अधिशाषी अभियंता को निर्देश दिए कि सड़क रिपेयर के कार्य की गुणवत्ता में सुधार करते हुए सड़क को दुरुस्त किया जाए। साथ ही कार्य करवाने वाले संवेदक का भुगतान रोकने की कार्यवाही की जाए। इस दौरान नगर परिषद के अधिशासी अभियंता धर्मेन्द्र मीणा ने बताया कि शहर में अमृत 2.0 परियोजना का 95 प्रतिशत काम पूरा किया जा चुका है। उन्होंने बताया कि शहर में सीवरेज कार्यों के तहत 1550 में से 1170 कनेक्शन करवाए जा चुके है। मेन होल के 1050 में से 1025 का कार्य पूर्ण हो चुका है। इसके अलावा सीवर लाइन बिछाने 23.20 किलोमीटर में से अब तक 22.8 किलोमीटर तक बिछाई जा चुकी है।जिप लाइन को हटाने के लिए टेंडर प्रक्रिया शुरू करवाई जा रही है।

जैतसागर नाले का 26 प्रतिशत कार्य पूरा, अब दिन-रात शुरू होगा काम

जैतसागर नाले के निर्माण की प्रगति देखने के बाद जिला कलक्टर ने अधिकारियों से कहा कि कार्य में कम से कम 150 श्रमिक नियोजित किए जाएं और मशीनरी की संख्या बढ़ाई जाए। इसके अलावा नैनवां रोड़ और इम्मानुएल स्कूल क्षेत्र में भी टीम और मशीनरी लगाकर शीघ्र काम शुरू किया जाए। उन्होंने कहा कि नाला निर्माण की प्रगति बढ़ाने के लिए अधिक टीमें और मशीनरी लगाकर दिन-रात कार्य शुरू किया जाए, ताकि कार्य शीघ्र पूरा किया जा सके।

निरीक्षण के दौरान आरयूआईडीपी की अधिशासी अभियंता सोनम शर्मा ने जिला कलक्टर को बताया कि जैतसागर नाले का अब तक 26 प्रतिशत काम पूरा हो चुका है। नाले पर हो रहा अतिक्रमण लगभग हटा दिया गया है। इससे आने वाले दिनों में काम में और तेजी लाई जा सकेगी। मीरा गेट वाले क्षेत्र में दीवार खड़ी करने का काम पूरा कर लिया गया है। जिला कलक्टर ने नवल सागर झील पर पर्यटन विकास के लिए करवाए जा रहे म्यूजिकल फाउंटेन एवं वाटर स्क्रीन मल्टीमीडिया की स्थापना के कार्य का अवलोकन किया। उन्होंने यहां दर्शक दीर्घा के लिए चिह्नित जगह को समतल कराने और कुर्सियां लगाने के निर्देश दिए। साथ ही कहा कि जिप लाइन को शिफ्ट करने की प्रक्रिया भी शीघ्र शुरू की जावें।

भारत विकास परिषद बारां ने जीवदया और पर्यावरण संरक्षण अभियान की शुरुआत परिंडे लगाकर की

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बारां। भारत विकास परिषद. बारां द्वारा जीवदया और पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से बुधवार को एक विशेष "परिंडा अभियान" की शुरुआत की गई। जिसके अंतर्गत संस्कृत महाविद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में परिषद द्वारा 101 परिंडे लगाने का संकल्प लिया गया, जिसकी प्रथम कड़ी में बुधवार को 11 परिंडे लगाकर अभियान का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता परिषद अध्यक्ष नरेश खंडलवाल ने की। इस अवसर पर अनेक गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति रही जिनमें प्रमुख रूप से ओमप्रकाश खत्री, दिनेश गर्ग, जय प्रकाश विजय, हितेश खंडेलवाल, राजेंद्र डंग , गिरिराज माहेश्वरी, डॉ. वीरेंद्र माथोड़िया, प्रदीप जैन, सत्येंद्र गौतम और पुरुषोत्तम गौतम आदि सम्मिलित रहे। परिषद द्वारा यह अभियान पक्षियों की सेवा हेतु चलाया जा रहा है, जिसमें गर्मी के मौसम में पक्षियों को जल और आहार उपलब्ध करवाने हेतु सार्वजनिक स्थलों, विद्यालयों एवं मंदिर परिसरों में परिंडे लगाए जाएंगे। सभी सदस्यों ने "जीवदया ही सच्ची सेवा है" का संकल्प लेकर इस सेवा प्रकल्प को जन-जन तक पहुंचाने का दृढ़ निश्चय किया।

भारत निर्वाचन आयोग का राजनीतिक दलों के साथ सबसे बड़ा संपर्क अभियान

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बारां। भारत निर्वाचन आयोग (ईसीआई) ने देश भर में निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी (ईआरओ), जिला निर्वाचन अधिकारी (डीईओ) और मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) के स्तर पर राजनीतिक दलों के साथ व्यापक एवं योजनाबद्ध तरीके से संपर्क स्थापित किया है. बीते 25 दिनों की अवधि में 31 मार्च तक विभिन्न स्तर पर राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ कुल 4,719 बैठकें आयोजित की गई हैं. इनमें मुख्य निर्वाचन अधिकारियों द्वारा 40 बैठकें, जिला निर्वाचन अधिकारियों द्वारा 800 बैठकें और निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों द्वारा 3,879 बैठकें शामिल हैं, जिनमें देश भर में राजनीतिक दलों के 28,000 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया.

मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) श्री ज्ञानेश कुमार, निर्वाचन आयुक्त डॉ. सुखबीर सिंह संधू और डॉ. विवेक जोशी द्वारा 4-5 मार्च को नई दिल्ली में आयोजित मुख्य निर्वाचन अधिकारियों के सम्मेलन के दौरान जारी किए गए निर्देशों के अनुसार ये बैठकें आयोजित की गईं। आयोग की ओर से इस विशेष संपर्क अभियान का उद्देश्य संबंधित सक्षम प्राधिकारी, यानी निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी, जिला निर्वाचन अधिकारी या मुख्य निर्वाचन अधिकारी द्वारा चुनावी प्रक्रिया से जुड़े किसी लंबित मुद्दे को जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 और 1951, निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण नियम, 1960, चुनाव संचालन नियम, 1961 और समय-समय पर भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी मैनुअल, दिशानिर्देशों और निर्देशों के अनुरूप मौजूदा कानूनी ढांचे के भीतर हल करना है. इस क्रम में अग्रिम आकलन के लिए सभी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य निर्वाचन अधिकारियों से कार्रवाई रिपोर्ट मांगी गई है. यदि मौजूदा कानूनी ढांचे के भीतर कोई मुद्दा अनसुलझा रहता है, तो आयोग के स्तर पर उसका निस्तारण किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि विभिन्न राजनीतिक दलों से भी इस सम्पर्क अभियान को भरपूर सराहना मिली है. इस दौरान विधानसभा क्षेत्रों, जिलों और राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में राजनीतिक प्रतिनिधियों की सक्रिय और उत्साही भागीदारी रही है. देश भर में हुई बैठकों की तस्वीरें भारत निर्वाचन आयोग के आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल पर देखी जा सकती हैं।

विजयवर्गीय महिला मंडल ने गणगौर पर्व उत्साह से मनाया, विभिन्न प्रतियोगिताएं हुई

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बारां। विजयवर्गीय महिला मंडल द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी गणगौर का कार्यक्रम खाकी बाबा की बगीची में रखा गया। अध्यक्ष आशा विजय, सचिव ममता विजय ने बताया कि कार्यक्रम में बच्चों के लिए ईसर गणगौर प्रतियोगिता रखी गई, जिसमें प्रथम नेवेध्या विजय, द्वितीय दिनिका विजय, ईसर में प्रथम कार्वी विजय रहे। सरप्राइज गिफ्ट में राम विजय, दमयंती, सुनीता व दिव्या विजय ने बाजी मारी। जेलेरी सजाओ प्रतियोगिता में प्रथम वर्षा हिमांशु विजय, बच्चों में कास्वी विजय व अनवी विजय रहे। निर्णायक मंडल में विनिता विजय, सीमा विजय, संतोष विजय रहे। कार्यक्रम में मंडल की कोषाध्यक्ष निशा विजय, सांस्कृतिक मंत्री अंजना विजय, कार्यक्रम संयोजिका लता विजय, प्रियंका विजय, मेघा विजय, गायत्री विजय आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम में समाज की महिलाओं ने आनंद लिया व अंत में अध्यक्ष द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

कर्मचारी महासंघ भामसं ने की शिक्षा मंत्री मदन दिलावर से मुलाकात

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बूंदी। राजस्थान राज्य कर्मचारी महासंघ भामसं के प्रदेश अध्यक्ष मेघवाहन सिंह के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल मदन शिक्षा मंत्री मदन दिलावर से उनके कोटा स्थित निजी निवास पर मिला। बूंदी जिले में होने वाले 26 27 अप्रैल को राष्ट्रीय अधिवेशन में आने का निमंत्रण दिया तथा कर्मचारियों की समस्याओं पर चर्चा की। महासंघ भामसं के जिला अध्यक्ष विकास दीक्षित ने बताया कि माननीय शिक्षा मंत्री जी से शिक्षा विभाग के जिला शिक्षा अधिकारियों तथा प्राचार्य के पदोन्नति के पश्चात नई पदस्थापन तथा तृतीय श्रेणी से द्वितीय श्रेणी में पदोन्नति संबंधी कई मांगों पर चर्चा की। जिस पर शिक्षा मंत्री जी द्वारा जल्द ही सभी समस्याओं का निराकरण करने का सकारात्मक आश्वासन दिया तथा राष्ट्रीय अधिवेशन में आने की स्वीकृति प्रदान की। प्रतिनिधि मंडल में जिला महामंत्री सुदेश गौतम, पूर्व कार्यकारी जिला अध्यक्ष अशोक जादूगर, कोषाध्यक्ष ऋषि राज कुमावत, जिला उपाध्यक्ष गिरिराज बसुवाल उपस्थित रहे।

चादर पेश करने के साथ हजरत बाबा आरिफ मोमिन साहब का दो दिवसीय उर्स शुरू

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बूंदी। शहर के मीरा गेट स्थित हजरत बाबा मोमिन आरीफ साहब रहमतुल्लाह अलैह के दो दिवसीय उर्स का आगाज बुधवार को दरगाह में चादर पेश करने के साथ हुआ। खादिम इदरिस बाबा, मस्जिद के सदर जफर बक्ष ने बताया कि उर्स के अवसर पर हर साल की तरह इस वर्ष भी बाबा का उर्स बड़ी धूमधाम से दो दिवसीय मनाया जायेगा। बुधवार को मस्जिद कमेटी की ओर से बाबा की दरगाह पर चादर पेश की गई। चादर पेश करने के दौरान मौजूद लोगों ने नात शरीफ पेश की। इस दौरान फातिया पढ़कर सभी को तबुरुख तकसीम किया गया। बाद नमाज ईशा मुफ्ती नदीम अख्तर स्काफी ने दरगाह परिसर में तकरीर पेश की।

इस दौरान मस्जिद पेश ईमाम शेख अकरम रजा, नूर मौलाना, सदस्य सैफ अली, मौलाना टेलर, बिलाल अतारी, हाजी शमीमुद्दीन चिश्ती, नावेद रजा, लियाकत अली मुस्लिम समाज के कई लोग मौजूद थे। उर्स के दूसरे दिन गुरुवार को सुबह 6 बजे से कुरान ख्वानी होगी वही ब्रह्मपुरी बड़ी मस्जिद से चादर शरीफ का जुलूस निकलेगा। जुलूस मुख्य बाजारों में होते हुए दरगाह पहुंचेगा। इसके बाद फतिहा का आयोजन किया जाएगा। बाद में लंगर का आयोजन होगा।

अंतराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन द्वारा गणगौर महोत्सव मनाया

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बारां। अंतराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन द्वारा कोटा रोड स्थित निजी रेस्टोरेंट पर गणगौर महोत्सव मनाया गया। अंतराष्ट्रीय वैश्य जिलाध्यक्ष नीतू गुप्ता ने बताया कि यह पर्व भारतीय परंपरा रीति रिवाज संस्कृति को आगे बढ़ाने का माध्यम है। महामंत्री शिल्पा ठाकुरिया ने बताया कि इसमें वैश्य सदस्यों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। सभी सदस्य सोलह सिंगार कर बन ठन कर आई। ईशर गणगौर के रूप में सभी सदस्य ईसर गणगौर बनकर भी आए। सभी सदस्यों ने इस कार्यक्रम को बहुत उत्साह के साथ मनाया। हाथों में जलेरी पूजा की थाली गुने व गणगौर लेकर सज धज कर गणगौर की झांकी निकाली गई और सभी सदस्यों ने गोर गोर गोमती ईसर पूजा पार्वती पार्वती का आला टीला गौर का सोना का टीला टीला दे तमका दे आदि गीतों द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की। कार्यक्रम में ईसर गणगौर को पानी पिलाया गया और उसमें सभी ने अलग-अलग दोहे सुनाकर कर सभी ने मन मोह लिया। मंच संचालन मृदुल मारू द्वारा किया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं करवाई गई। सभी प्रतियोगियों ने अपनी प्रस्तुति बहुत ही मनोरंजन अंदाज में दी। ईसर गणगौर प्रतियोगिता में सुनीला अग्रवाल व मंजू गोयल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। स्वामी झालावाड़ी, उषा गोयल सांगोद द्वितीय स्थान पर रही। सजी-धजी गणगौर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर अनीता माहेश्वरी, द्वितीय स्थान पर शिल्पा ठाकुरिया और तृतीय स्थान पर मधु खंडेलवाल रही। सभी प्रतियोगिताओं को पारितोषिक देकर सम्मानित किया गया। जज की भूमिका सुधामारू और मीना सोमानी ने निभाई। कार्यक्रम में शशि गर्ग ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर नैना पतिरा, नेहा गुप्ता, मंजू सोमानी, हीना पतिरा, निर्मल जैन, भानु गर्ग, श्यामा गोयल, अनीता पनवाड़ आदि मौजूद रही।

ग्रामीण महिलाओ, पुरुषो, बच्चों एवं सभी जरुरतमंदों को जूते-चप्पलों का किया वितरण

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बूंदी। इनरव्हील क्लब ने जन सेवा का अपना कार्य निरंतर बढ़ाते हुए आज पादरा गांव, लेसरदा के. पाटन में सभी ग्रामीणों को जूते-चप्पल पहनाकर खुशियां बांटी । बच्चों ने कविताएं , कहानी और खेल खेले ।इनरव्हील क्लब सामाजिक कार्यों में अपनी भागीदारी निभा कर सराहनिय कार्य कर रहा है। इस दौरान अध्यक्ष पूर्णिमा दीक्षित ,संतोष भाकल ,सरोज वर्मा, सुलोचना शर्मा ,दीपा गुप्ता मौजूद रही।

दी बूंदी अर्बन को ऑपरेटिव बैंक ने रिकॉर्ड 3 करोड़ 1 लाख का सकल लाभ अर्जित कर बनाया कीर्तिमान

बूंदी । दी बूंदी अर्बन कोऑपरेटिव बैंक के वित्तीय वर्ष 2024- 25 की समीक्षा की एवं बैंक अध्यक्ष सत्येश शर्मा ने बैंक के वित्तीय वर्ष 2024- 25 के आंकड़े प्रस्तुत करते हुए बताया कि बैंक ने 3 करोड़ 1 लाख का सकल लाभ अर्जित किया है जिसमें 66 लाख आयकर 10 लाख का एनपीए एवं 5 लाख का स्टैंडर्ड असेट्स का प्रोविजन करने के पश्चात 2 करोड़ 19 लाख शुद्ध लाभ हुआ है बैंक के इतिहास में अब तक का सर्वाधिक शुद्ध लाभ हुआ है जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है वर्ष 2024 - 25 में बैंक की शेयर राशि 11.34 लाख डिपॉजिट 766.96 ऋण 179.36 वर्किंग कैपिटल 1091.58 तथा बैंक सदस्यता में 47 व्यक्ति की वृद्धि हुई है बैंक द्वारा प्राप्त की गई आर्थिक वृद्धि दर अभूतपूर्व एवं उत्साहवर्धक है बैंक अध्यक्ष सत्येश शर्मा व मुख्य कार्यकारी अधिकारी राजेंद्र सिंह हाडा द्वारा वर्ष की समीक्षा के दौरान इसका से संचालक मंडल के सभी सहयोगी संचालक गण बैंक के सदस्यों व ग्राहकों तथा बैंक के निष्ठावान कर्मचारियों की टीम को देते हुए धन्यवाद दिया।

व्यक्तिगत विकास, स्मार्टनेस एवं गुड ऑर्डर का रखें ध्यान - औदिच्य

हिन्दुस्तान स्काउट गाइड के राज्य सचिव रहे बून्दी दौरे पर स्काउट व गाइड गतिविधियों और आधारभूत संरचनाओं की समीक्षा

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बूंदी। हिन्दुस्तान स्काउट गाइड एसोसिएशन के राज्य सचिव एवं नेशनल ऑर्गेनाइजर कमिश्नर नरेन्द्र औदिच्य मंगलवार को बून्दी जिले के प्रवास पर रहें। इस दौरान इन्होंने जिले में चल रही संगठन की गतिविधियों के बारे में जानकारी ली। बून्दी पहुंचने पर राज्य सचिव एवं नेशनल ऑर्गेनाइलर कमिश्नर नरेन्द्र औदिच्य का जिला आयुक्त (मुख्यालय) कृष्ण कांत राठौर, जिला सचिव लोकेश कुमार जैन तथा जिला कोषाध्यक्ष निधी गंगवाल सहित सभी कार्यकारिणी के पदाधिकारियों ने स्कार्फ व पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत अभिनन्दन किया। इस दौरान जिला आयुक्त (मुख्यालय) कृष्ण कांत राठौर ने सभी जिला कार्यकारिणी सदस्यों का परिचय करवाते हुए जिले में संचालित गतिविधियों से अवगत करवाया। इस मौके पर राज्य सचिव नरेन्द्र औदिच्य ने जिला कार्यकारिणी सदस्यों का माल्यार्पण व पुष्पगुच्छ देकर नवीन दायित्व निर्वहन करने पर शुभकामनाऐं दी। उत्कृष्ट सेवा कार्य करने की बात पर जोर देते हुए राज्य सचिव नरेन्द्र औदिच्य ने कहा कि स्काउट गाइडिंग गतिविधि को सुनियोजित ढंग से संचालित करवाने एवं सक्रियता बढ़ाने हेतु दिशा निर्देश प्रदान किए। इन्होंने कहा कि व्यक्तिगत विकास, स्मार्टनेस एवं गुड ऑर्डर का ध्यान रखते हुए सकाउट गाइड की गुणातमक वृद्धि पर फोकस करें। राज्य सचिव औदिच्य ने जिला सचिव लोकेश जैन, जिला कोषाध्यक्ष निधी जैन गंगवाल तथा जिला ऑर्गेनाजइर गिरधारी लाल शर्मा से जिले में स्काउट व गाइड गतिविधियों और आधारभूत संरचनाओं की भी जानकारी ली। मुख्य जिला षिक्षा अधिकारी कार्यालय पर राज्य सचिव नरेन्द्र औदिच्य तथा सीडीईओ डॉ. महावीर कुमार शर्मा ने परिण्डे लगा कर बेजुबान पशु पक्षियों के लिए दाने पानी की व्यवस्था करने का आह्वान किया। इस मौके पर औदिच्य ने कहा कि पक्षी और प्रकृति हमारे जीवन के अभिन्न अंग है। प्रकृति स्वस्थ्य है तो हम स्वस्थ्य है। सभी लोग अपने घरों के बाहर जहां पक्षियों की संख्या अधिक हो वहां पर परिंडे लगाए। जलवायु परिवर्तन से बढते उच्च तापमान के बारे मे बताते हुए सीडीईओ डॉ. महावीर कुमार शर्मा ने बच्चों को बेजुबान पशु पक्षियों के लिए दाने पानी की व्यवस्था करते हुए परिण्डे लगाने का संकल्प दिलावाया।

पर्यावरण संरक्षण और वन्य जीव की सेवा ही उद्देश्य है श्री राधा गोविंद कृष्ण की सेवा संस्थान का

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बारां। पर्यावरण संरक्षण और वन्य जीवों की सेवा समेत अन्य प्रकार के कार्यों से जुड़ी संस्था श्री राधा गोविंद स्मृति सेवा संस्थान बारां द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी परिंडा अभियान शुरू किया जा रहा हैं । संस्थान के हिमांशु सोनी व अभिषेक सोनी ने बताया कि शहर के प्रमुख सर्राफा व्यवसाई स्व. गोविंद लाल सोनी की चतुर्थ पुण्य स्मृति के दिन 3 अप्रैल 2025 से यह अभियान शुरू होगा, जो कि ग्रीष्मकल में निरंतर चलेगा । भीषण गर्मी में मासूम पक्षी पानी के लिए इधर-उधर तरसते रहते हैं ,उनके लिए दाना पानी की व्यवस्था करना ही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है और इस प्रकृति मां का हम सबके ऊपर जो ऋण है उसको चुकाने के लिए ऐसे छोटे-छोटे प्रयास हम सबको मिलकर करने चाहिए संस्थान के सदस्य पीयूष गुप्ता व रितेश मीणा ने बताया कि पिछले वर्षों में भी परिंडा अभियान के तहत संस्थान द्वारा अनेकों जगह पर परिंडे बांधे गए थे । संस्थान के हितांश सोनी, माधव सोनी ने बताया कि संस्था प्रतिवर्ष स्व गोविन्द लाल सोनी की पुण्य स्मृति में परिंडा अभियान के साथ अनेक प्रकार की गतिविधियां संचालित करती है।

राज्य सरकार अवैध खनन की रोकथाम के लिए प्रतिबद्ध - भजनलाल शर्मा

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार अवैध खनन की रोकथाम के लिए प्रतिबद्ध है। अब राज्य सरकार इस पर सख्त एवं प्रभावी कार्यवाही के लिए आकस्मिक संयुक्त अभियान चलाएगी जिससे खनन माफियाओं पर पूरी तरह लगाम लग सके। उन्होंने कहा कि कार्मिकों का यह दायित्व है कि अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन पूर्ण समर्पण भाव से करें तथा राज्यहित को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। शर्मा बुधवार को मुख्यमंत्री निवास पर अवैध खनन गतिविधियों पर नियंत्रण के लिए की गई कार्यवाही की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राजस्थान में खनिज संसाधनों की अपार संभावनाएं हैं तथा लाखों लोगों को खनन से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार मिल रहा है। राज्य के राजस्व में भी खनन क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ऐसे में राज्य सरकार की प्राथमिकता है कि खनिज सम्पदा का

समुचित दोहन हो तथा इस क्षेत्र के राजस्व में बढ़ोतरी की जाए। उन्होंने अधिकारियों को लक्ष्य निर्धारित कर काम करने के निर्देश दिए।

अवैध खनन के खिलाफ हो प्रभावी कार्रवाई

मुख्यमंत्री ने कहा कि विभाग अवैध खनन पर सख्ती से कार्रवाई करे जिससे आमजन को राहत पहुंचे। इसके लिए सभी को मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा कि अवैध खनन को रोकने के लिए पुलिस, जिला प्रशासन, वन विभाग, परिवहन विभाग तथा खनन विभाग आपसी समन्वय के साथ काम करें। उन्होंने सभी जिला कलक्टर से खनन माफियाओं पर सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जब सख्ती से कानून की पालना सुनिश्चित होगी, तभी अवैध खनन करने वालों में भय पैदा होगा। उन्होंने खनन विभाग को निर्देश दिए कि वे जिला स्तरीय एसआईटी की बैठक की नियमित मॉनिटरिंग करें तथा प्रतिदिन बैठक की रिपोर्ट लें।

ड्रोन सर्वे से करें पूरी निगरानी

शर्मा ने कहा कि अवैध खनन पर निगरानी रखने के लिए ड्रोन तथा अन्य आधुनिक तकनीक की मदद ली जाए। ड्रोन से पूरे क्षेत्र की फोटोग्राफी तथा वीडियोग्राफी हो जिससे अवैध खनन पर प्रभावी नियंत्रण किया जा सके। साथ ही, अवैध खनन पर की जा रही कार्रवाई में अधिक से अधिक तकनीक का प्रयोग किया जाए। उन्होंने कहा कि अवैध खनन के औचक निरीक्षण के लिए मुख्यालय स्तर पर संयुक्त टास्क फोर्स बनाई जाए। उन्होंने कहा कि इस संबंध में लंबित प्रकरणों का त्वरित निस्तारण करें जिससे अवैध खनन के रोकथाम की प्रक्रिया में गति लाई जा सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि एम-सेंड नीति के तहत बजरी के विकल्प के रूप में एम-सेंड को प्रोत्साहन दिया जाए। प्रदेश में एम-सेंड इकाइयों की स्थापना और बजरी के सस्ते विकल्प के रुप में एम-सेंड के उपयोग को बढ़ावा दिया जाए जिससे बजरी के दोहन में कमी आए। मुख्यमंत्री ने कहा कि खान विभाग के रिक्त पदों पर शीघ्र भर्ती की जाएगी। उन्होंने टोंक, नागौर, भीलवाड़ा, सवाई माधोपुर, डीग, कोटपूतली, राजसमंद, चित्तौड़गढ़ कलक्टर से जिलों में चल रही अवैध खनन की कार्यवाही के बारे में जानकारी ली तथा उचित दिशा-निर्देश प्रदान किए।

अतिक्रमण : नगर परिषद की तोप तिराहा से लेकर संतर रोड तक की कार्रवाई

» धौलपुर... अस्थाई दुकानों पर कार्रवाई करती जेसीबी

टीम के साथ दो जेसीबी मशीनें और पुलिस जाप्ता मौजूद

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। नगर परिषद ने शहर को स्वच्छ और व्यवस्थित बनाने के लिए अतिक्रमण विरोधी अभियान तेज कर दिया है। बुधवार को नगर परिषद की टीम ने तोप तिराहा पर बड़ी कार्रवाई की।

टीम के साथ दो जेसीबी मशीनें और पुलिस बल मौजूद था। कार्रवाई में अस्थायी दुकानों को हटाया गया, साथ ही अवैध निर्माणों को भी ध्वस्त किया गया। नगर परिषद आयुक्त अशोक शर्मा के अनुसार शहर को अतिक्रमण मुक्त बनाने का और जल भराव से मुक्ति दिलाने के लिए अभियान चल रहा है। तोप तिराहा क्षेत्र से पहले हटाए गए अतिक्रमण का मलबा साफ किया गया। इससे

यातायात सुचारू हो सका।

टीम ने संतर रोड पर भी अवैध कब्जों को हटाया। कार्रवाई के दौरान कुछ दुकानदारों ने विरोध किया। लेकिन प्रशासन की समझाइश के बाद उन्हें पीछे हटना पड़ा। आयुक्त ने बताया कि यह अभियान अन्य क्षेत्रों में भी जारी रहेगा। नगर परिषद ने नागरिकों से स्वच्छता बनाए रखने और सार्वजनिक स्थानों पर अतिक्रमण न करने की अपील की गई है।

'शिक्षा पाओ ज्ञान बढ़ाओ' प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। सोच बदलो गांव बदलो टीम के तत्वावधान रैणी सर्किल के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रैणी में शिक्षा पाओ ज्ञान बढ़ाओ प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण समारोह आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में रैणी राजगढ़ क्षेत्र के सैकड़ो बच्चों ने भाग लिया। सोच बदलो गांव बदलो टीम के द्वारा आयोजित शिक्षा पाओ ज्ञान बढ़ाओ प्रतियोगिता के आयोजन का उद्देश्य छात्र-छात्राओं के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा एवं प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रति जागृत करना है ताकि बच्चों को अपने सपनों को साकार करने के लिए एक नई दिशा मिल सके और आत्मविश्वास जागृत हो सके। सर्किल स्तरीय पुरस्कार वितरण कार्यक्रमों के दौरान एसबीजीबीटी के सर्किल कोऑर्डिनेटर, विलेज कोऑर्डिनेटर एवं अधिकारीयों ने पहुंच कर ग्रामीण बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरुक करने के लिए जोर दिया। बालिका शिक्षा पर विशेष ध्यान देने के लिए प्रेरित किया। सोच बदलो गांव बदलो टीम के कार्यकर्ता शिक्षा पाओ ज्ञान बढाओ प्रतियोगिता के माध्यम से प्रतिभावान बच्चों को निखारने का काम कर रहे हैं। एसबीजीबीटी का प्रयास है कि ग्रामीण परिवेश के प्रत्येक बच्चे को बेहतर शैक्षिक सुविधा उपलब्ध हों।

» धौलपुर... कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को मिले शील्ड, साथ में मौजूद अतिथि

अगर किसी प्रतिभाशाली बच्चे को किसी भी स्तर पर शैक्षिक सहयोग की आवश्यकता होती है तो टीम की तरफ से उसको सहयोग देने की कोशिश की जाती है। इस प्रतियोगिता के माध्यम से गरीबी और अभावग्रस्त ग्रामीण परिवेश में पढ़ रहे बच्चों को अपेक्षित सहायता खुले आसमान में उड़ने के लिए पंख लगाने की कोशिश कर रही है। इस कार्यक्रम में प्रतियोगिता में भाग लेकर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कक्षा 8 से 12 के प्रत्येक कक्षा के टॉप 3 बच्चों को शील्ड, बैग,

ज्योमेट्री बॉक्स तथा प्रशस्ति पत्र के साथ सम्मानित किया गया। जिसमें प्रथम स्थान क्रमश मुस्कान मीना भुलेरी, मौसम मीणा नांगल, तरुण शर्मा मालोखर, खेमराज बैरवा परवैनी तथा कोमल बाई ने प्राप्त किया। इसके अलावा प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को उच्च गुणवत्ता के ज्यामितीय बॉक्स प्रदान कर सम्मानित किया गया ताकि सभी प्रतिभागी भविष्य में इस परीक्षा में अधिकाधिक संख्या में सहभागिता सुनिश्चित कर बेहतर प्रदर्शन कर सकें। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के प्रधानाचार्य तिलक राज इंदौरिया ने की। मुख्य अतिथि एसीबीईओ रैणी रामस्वरूप मीणा तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में सोच बदलो गांव बदलो टीम के कार्यकर्ता डी पी एस मीणा दुर्गसी (वरिष्ठ वैज्ञानिकअधिकारी) सरमथुरा धौलपुर ने कार्यक्रम में उपस्थित रहे। मंच संचालक देवी राम द्वारा किया गया। कार्यक्रम स्कूल स्टाफ के बीएस मीणा, देवेंद्र, जयप्रकाश, अनिल सैनी, राजेश मीणा,रामहेत,संजू मीणा,सुशीला मीणा, गोपाल, जितेंद्र शर्मा, लोकेश शर्मा, एसबीजीबीटी कार्यकर्ता सुखराम मीणा खुर्द, रंजीत मीणा धनौरा, सतीश मीणा, अशोक मीणा एवं अन्य ग्रामीणजन की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

» धौलपुर... ग्रेजुएशन डे पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान नृत्य करते नन्हे मुन्ने

एवीएम स्कूल में धूमधाम से मनाया 'ग्रेजुएशन डे'

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। एवीएम इंटरनेशनल स्कूल गिरिराज कॉलोनी में धूमधाम से ग्रेजुएशन डे मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती जी की वंदना के साथ किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षाविद वी. के. त्यागी, निदेशक आदर्श त्यागी, विद्यालय प्रशासनिक अधिकारी प्रिया त्यागी, प्राचार्या ऊषा त्यागी, शिक्षकगण, विद्यार्थियों के साथ उपस्थित सभी अभिभावकों ने सरस्वती वंदना करते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

विद्यार्थियों द्वारा दी गई मनमोहक प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए कहा कि बच्चों के चौमुखी विकास के लिए इस तरह की प्रस्तुतियां अत्यंत आवश्यक है इस पथ पर ए. वी. एम. संस्था सक्रिय रूप से निरंतर प्रयत्नरत है।

विद्यालय के मंच से छोटे विद्यार्थियों ने समाज की एक ज्वलंत समस्या को उठाते हुए पूरे समाज को बताया कि किसी भी प्रकार का नशा करना समाज एवं व्यक्ति के हित में नहीं है क्योंकि नशा एक ऐसा जाल है जो शुरुआत में किसी मजे के रूप में लगता है लेकिन धीरे-धीरे यह हमारे जीवन, स्वास्थ्य और रिश्ते को नष्ट कर देता है इसे दिखाते हुए एक नाटक की प्रस्तुति दी गई जिसमें बताया गया कि नशे की लत शरीर और मस्तिष्क को नुकसान पहुंचाने के साथ-साथ हमारे सपनों और भविष्य को भी खराब कर देती है। हमें नशे से दूर रहकर खेल, संगीत और शिक्षा पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इस कार्यक्रम में बड़ों के साथ-साथ छोटे बच्चों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। कहीं बच्चों ने स्कूल के प्रति प्रेम को, तो कहीं बच्चों ने माता-पिता के प्रति प्रेम को और अपनी गलती को मिस्टेक बताते हुए जोरदार ठुमके लगाते-लगाते अतिथि गण का मन मोह लिया। तालिया की गड़गड़ाहट लगातार सुनाई देती रही जो इस बात का प्रमाण था कि कार्यक्रम में प्रस्तुति एक से एक बढ़कर थी।

सभी दर्शकों ने कार्यक्रम की भूरी भूरी प्रशंसा की। कार्यक्रम में रामरज लाल शर्मा, विजय त्यागी, दिनेश त्यागी, यतीश शर्मा, महाराज सिंह त्यागी, जीतेन्द्र त्यागी, अभिभावक और गणमान्य व्यक्तिगण उपस्थित हुए।

बाड़ी : शहर में जगह-जगह नाले अवरुद्ध होने व सड़क टूटने से जलभराव

भारद्वाज मार्केट में नागरिको का विरोध प्रदर्शन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बाड़ी। शहर में नगर पालिका की लचर व्यवस्था से जहां नाले अवरुद्ध पड़े हैं। वहीं टूटी हुई सड़कों और नालों से गंदा पानी सड़क पर बह रहा है। ऐसे में नागरिकों में आक्रोश है और आक्रोशित नागरिकों द्वारा बुधवार को विरोध प्रदर्शन करते हुए नगर पालिका पर सवाल खड़े किए है। वहीं कांग्रेस पार्टी के राजेश पायलट किसान संगठन ने उपखंड अधिकारी को मामले से अवगत कराया है।

भारद्वाज मार्केट निवासी वरिष्ठ नागरिक हरीबाबू गौड़,युवा जितेंद्र दिघर्रा,पप्पू,अशोक, रामचरण,मनीष एवं अन्य लोगों ने बताया कि मार्केट के दोनों तरफ दुकानों के नीचे बने नाले में गंदगी इतनी भरी हुई है कि उनमें पानी ओवरफ्लो होकर चल रहा है। कई जगह पर गंदगी की रुकावट के चलते नाले का गंदा पानी सड़क पर आ रहा है। इन दिनों माता रानी के

» बाड़ी... भारद्वाज मार्केट में विरोध प्रदर्शन करते नागरिक

नवरात्र चल रहा है। जिसमें सुबह सवेरे एवं शाम श्रद्धालु माता रानी के दर्शन करने जा रहे हैं। जिनको भी इस गंदे पानी में से होकर निकलने पर मजबूर होना पड़ रहा है। मामले को लेकर नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी और उपखंड अधिकारी दोनों को अवगत कराया गया है। लेकिन किसी ने कोई सुनवाई नहीं की है। ऐसे में आक्रोशित नागरिकों द्वारा भारद्वाज मार्केट में विरोध प्रदर्शन किया गया।

राजेश पायलट किसान संगठन एसडीएम और ईओ को बताई समस्या

वहीं दूसरी और कांग्रेस पार्टी के राजेश पायलट किसान संगठन के विधानसभा अध्यक्ष ध्रुव शुक्ला के नेतृत्व में पदाधिकारी नैतिक सोनी,अंकित,नितिन,शकील,गजेंद्र,कन्नू सिंह आदि ने उपखंड अधिकारी भगवत शरण त्यागी और नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी श्याम बिहारी गोयल को महाराज बाग के पीछे टूटी पड़ी सड़क और नाले के टूटने से गंदे पानी की समस्या से अवगत कराया है। संगठन ने मांग की है कि उक्त समस्या का जल्द समाधान किया जाए। क्योंकि इसमें नागरिक लगातार परेशानी का सामना कर रहे हैं।

चैत्रीय नवरात्रा में नवदुर्गा महोत्सव में मेला मंच पर भीम जागरण कार्यक्रम आयोजित

बाबा साहेब की जीवनी के साथ कलाकारों ने दिया मंच से महात्मा बुद्ध का संदेश

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बाड़ी। शहर में मां राज राजेश्वरी के मेले में नवरात्र महोत्सव का आयोजन नगर पालिका प्रशासन द्वारा किया जा रहा है। आठ दिन तक आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में मंगलवार की रात मेला मंच पर भीम जागरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रस्तुति देने आए समता म्यूजिकल ग्रुप के कलाकारों ने बाबा साहब और महात्मा बुद्ध को लेकर ऐसी प्रस्तुति दी की श्रोता मंत्र मुग्ध हो गए। जागरण कार्यक्रम का आयोजन देर रात तक चला। समता म्यूजिकल ग्रुप के वरिष्ठ कलाकार शशि भूषण ने बताया कि वह बाबा भीमराव

» बाड़ी - मेला मंच पर प्रस्तुति देते कलाकार

अंबेडकर के अनुयायी हैं और उनके बताएं मार्ग एवं महात्मा बुद्ध के उपदेशों को आम जनता तक पहुंचाने का काम करते हैं। जिसके लिए उनकी टीम लगातार प्रयासरत है। बाड़ी में नगर पालिका प्रशासन द्वारा उनके कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसके लिए वे उनके आभारी हैं। इस दौरान सभी कलाकारों का मेला मंच से मिला अध्यक्ष अमर सिंह पोसवाल और नगर पालिका प्रशासन द्वारा स्वागत किया गया।

कार्यक्रम के दौरान वरिष्ठ पार्षद राजकुमार भारद्वाज, राजवीर सिंह, नगर पालिका अध्यक्ष कमलेश देवी, होतम सिंह, बाइस चेयरमेन अहमद जमा खां, राजवीर कौशल कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष रामेंद्र मीणा सहित शहर के गणमान्य नागरिक और समाजसेवी मौजूद रहे।

परिवहन विभाग ने गत वर्ष से 115 प्रतिशत अधिक राजस्व किया अर्जित

धौलपुर। परिवहन विभाग ने इस वित्तीय वर्ष 2024-25 में गत वित्तीय वर्ष 2023-2024 के राजस्व लक्ष्य के विरुद्ध समस्त फील्ड स्टाफ एवं कार्यालय स्टाफ की कड़ी मेहनत की वजह से एवं सख्त प्रवर्तन कार्यवाही कर 149 करोड़ राजस्व का अर्जन किया है, जो कि गत वर्ष की तुलना में 115 प्रतिशत है। साथ ही सख्त प्रवर्तन कार्यवाही कर इस वित्तीय वर्ष 2024-25 में गत वित्तीय वर्ष 2023-2024 की तुलना में 14 करोड़ प्रशमन राशि के विरुद्ध 20 करोड़ प्रशमन राशि अर्जित की जो कि गत वर्ष से 138 प्रतिशत है।

जिला परिवहन अधिकारी गौरव यादव ने बताया कि मार्च 2025 में बिना कर चुकाए वाहनों के विरूद्ध कडी कार्यवाही की वजह से जिले में अब तक का सबसे अधिक कर 16 हजार 800 वाहनों से 50 करोड़ प्राप्त किया, जो कि गत वर्ष 14 हजार 800 वाहनों से 37 करोड़ था, जो कि गत वर्ष का 135 प्रतिशत है। साथ ही मार्च 2025 में कुल 59 करोड राजस्व अर्जित किया गया जो कि गत वर्ष का 126 प्रतिशत है। विभाग द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 में सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने हेतु जिले के नागरिकों में जागरूकता पैदा करने हेतु वर्ष पर्यंत विभिन्न आयोजनों के माध्यम से निरंतर रूप से प्रसास किये गये, जो कि आगे भी जारी रहेंगे।

विद्यालय के कक्षा रूम की छत की पट्टियां अचानक टूटकर गिरी, बड़ा हादसा टला

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

सरमथुरा। सरमथुरा उपखंड के गांव खैरारे में एक बड़ा हादसा होने से बाल बाल बचा। गांव के एक विद्यालय में क्लास रूम की छत के 8 पटोना अचानक टूटकर गिर गए। यह घटना उस समय हुई जब क्लास रूम में कोई भी स्टाफ सदस्य या विद्यार्थी उपस्थित नहीं था, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया। जानकारी के अनुसार, यह घटना दोपहर लगभग 12:30 बजे हुई। आमतौर पर इस क्लास रूम में प्रतिदिन बच्चों की कक्षा लगती थी। विद्यार्थियों ने कक्षा अध्यापक और प्रधानाध्यापक को सूचित किया के छत से मिट्टी गिरी है जिसे देखकर प्रधानाध्यापक ने निर्णय लिया और बच्चों को कक्षा से बाहर निकाल कर ताला लगा दिया इस प्रकार हादसा टल गया।

घटना की सूचना मिलते ही सहायक खंड शिक्षा अधिकारी सीबीओ जादोन तुरंत विद्यालय पहुंचे

» सरमथुरा - छत से गिरी पट्टियां

और स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने घटना की जानकारी ली और नुकसान का आकलन किया। सीबीओ जादोन ने इस घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि समय रहते बच्चों और स्टाफ की अनुपस्थिति के कारण एक बड़ा हादसा टल गया। उन्होंने कहा कि घटना की जांच की जा रही है और आगे की कार्रवाई की जाएगी। समाजसेवी रामेश्वर दयाल के अनुसार गांव खेरारा सरकारी स्कूल के एक कक्ष का निर्माण करीब 28 साल पहले पंचायत के द्वारा किया गया जिसमें ग्रामीणों के अनुसार अधिक चौडाई और अधिक लंबाई के घटिया पटोना से छत बनाई गई और सामग्री भी स्तरहीन थी। ग्रामीणों ने ऐसे घटिया निर्माण का विरोध भी किया लेकिन तत्कालीन सरपंच और सेक्रेटरी ने सुनवाई नहीं की छत के टूटने का आभास होने पर प्रधानाध्यापक ने बच्चों को कमरे से बाहर निकाल दिया और ताला लगा दिया। उसके करीब 1 घंटे बाद बुधवार को हादसा हो गया।

मुख्यमंत्री अनुप्रति कॉचिंग योजना में 12 अप्रैल तक करें आवेदन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। मुख्यमंत्री अनुप्रति कॉचिंग योजनान्तर्गत विभिन्न प्रोफेशनल कोर्स हेतु आयोजित प्रवेश परीक्षाओं एवं सरकारी नौकरियों के लिए आयोजित होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी उत्कृष्ट ढंग से कराने एवं समान अवसर प्रदान करने के लिए विभागों द्वारा ऑनलाईन पोर्टल पर सूचीबद्ध कोचिंग संस्थानों में निःशुल्क कोचिंग करने हेतु इच्छुकअभ्यर्थियों से वर्ष 2024-25 के लिए ऑनलाईन आवेदन पत्र आमंत्रित किये गये है। सभी पात्र व्यक्ती व अभ्यर्थी मुख्यमंत्री अनुप्रति कॉचिंग योजनान्तर्गत आवेदन करने के लिए एसएसओ पोर्टल पर पर क्लिक कर 12 अप्रैल तक ऑनलाईन आवेदन कर सकते है।

आज निकलेगी श्री रामचंद्र के सखा गुहराज निषाद की जयंती

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। गुरूवार 03 अप्रैल करे चैत्र मास की पंचमी तिथि को भगवान श्रीराम के परम सखा श्री गुहराज निषाद की जयंती के अवसर पर भव्य शोभायात्रा का आयोजन शहर के सती वाले हनुमान मंदिर से प्रारंभ होकर टाऊन चौकी होती हुई फूटा दरवाजा, फद्दी खान चौराहा, जगन टॉकीज, पुरानी सराय, लाल बाजार, पुरानी सब्जी मंडी, तोप चौराहा, संतर रोड, बस स्टैंड होती हुई महामाया मंदिर धुलकोट पर आरती के पश्चात

समापन होगा। वीर एकलव्य निषाद/कश्यप सेवा समिति अध्यक्ष कमल सिंह निषाद ने बताया कि समाज के आराध्य भगवान गुहराज निषाद की जयंती हर वर्ष चैत्र मास की पंचमी तिथि को संपूर्ण भारतवर्ष में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाई जाती हैं। शोभायात्रा के संबंध में सभी आवश्यक तैयारिया पूर्ण कर ली गई है। गुहराज निषाद जयंती की शोभायात्रा में लगभग 15 झांकियां 5 बैंड 05 डी जे एवं 05 ढोल वाले शामिल रहेंगे। शोभायात्रा के सह संयोजक देवेंद्र सिंह कश्यप ने बताया कि शोभायात्रा को सफल बनाने हेतु विभिन्न समितियों के प्रभारियों को अलग अलग जिम्मेदारियां सौंपी गई है। शोभायात्रा के मार्ग में जगह जगह स्वागत द्वार बनवाए गए है एवं अनेकों स्थानों पर भंडारे का आयोजन भी होगा।

» राजाखेड़ा ... राजाखेड़ा-विधानसभा की ग्राम पंचायत विनतीपुरा में विराजमान आस्था की केंद्र राजराजेश्वरी मां लाठवाली के लक्खी मेला का शुभारंभ राजाखेडा विधायक रोहित बोहरा ने फीता काटकर किया। मां लाठवाली के प्रांगण में पूजा अर्चना हवन कर मां लाठवाली से प्रार्थना स्वरूप सभी के जीवन की मंगल कामना की।

स्वामित्वधिकारी प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक **चन्द्रप्रकाश शिवहरे** के लिए मै. गुरूकृपा प्रकाशन प्रेस टीआईटी कॉम्पलैक्स मुरैना से मुद्रित एवं साई स्मार्ट सिटी,नगर परिषद ऑफिस के निकट,मचकुण्ड रोड,धौलपुर(राज.) से प्रकाशित आर.एन.आई. नं. **RAJHIN/2009/27740** संपादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे, प्रबंध संपादक जितेन्द्र सिंह रजौरिया। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र धौलपुर न्यायालय होगा। फोन: 05642-224444, 224666, 224777 फैक्स: 223324 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए स्थानीय संपादक जिम्मेवार